प्रकाशक :
म० ना० सहस्रबुद्धे
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (म० प्र०)

पहली बार : २,०००
मई, १९५[illegible]
मूल्य : एक रुपया

मुद्रक :
विश्वनाथ भार्गव
मनोहर प्रेस
जतनबर, बनारस

# प्रस्तावना

'नई तालीम' का काम 'बिना नक्शे की समुद्र यात्रा' [ *Sailing in an unchartered ocean* ] जैसा रहा है। बापू ने शिक्षा-शास्त्र में एक नया अध्याय जोड़ा। लोगों को दृष्टि मिली। विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने उस दिशा में चलने की कोशिश की। बापू के प्रत्यक्ष सहवास में रहकर श्रीमती आशादेवी और श्री आर्यनायकम् जी ने सच्चे साधक के धैर्य के साथ इस अदृश्य-पथ की यात्रा की ओर स्थिर कदम से काफी दूर तक बढ़े। विभिन्न सरकारों ने भी, अपने विचार के अनुसार इस अनिश्चित पथ का अनुगमन किया। व्यक्तिगत साधक भी अपनी-अपनी मर्यादाओं के अनुसार उपयोग करते रहे हैं। "इस सारी कोशिश में कुछ लोग दिशा-हारा हुये; कुछ के लिये दिशा स्थिर रही लेकिन भटकते रहे।"
ऐसी परिस्थिति में यह स्वाभाविक है कि 'नई-तालीम' क्या है यह लोगों के समझ में ना आवे और जिसे कोई 'नई-तालीम' कहता है वह 'नई-तालीम' है या नहीं इसका निर्णय भी कोई न कर पावे।

इस सबके बावजूद भी 'नई-तालीम एक जीवन-दर्शन है; शिक्षा पद्धति' है; एक विशिष्ट मूल्य के आधार पर समाज-निर्माण का माध्यम है। तथा शिक्षण-कला के विकास में एक आधुनिक कदम है। यह आवश्यक है कि नई-तालीम' के बारे में लोगों को अधिक स्पष्ट धारणा हो तथा उन्हें निश्चित 'मार्ग-दर्शन' मिले। लेकिन प्रश्न यह है कि यह मार्ग-दर्शन करे कौन? जैसा कि मैंने पहले ही बताया है कि प्रत्येक संस्था और व्यक्ति इस 'बिना नक्शे की समुद्र-यात्रा' में भटक रहे हैं। ना वह कौन-सा व्यक्ति या संस्था है जो यह बता सकेगा कि नई-तालीम की सही दिशा है।

अतएव यह आवश्यक है कि जिसने जो कुछ भी अनुभव किया है वह सब संग्रह होकर लेखबद्ध हो और कोई संस्था हनुमान बनकर इस

'अनुभव-पुंज' रूपी 'गंधमादन-पर्वत' को उठाकर जिज्ञासुओं के सामने, उनकी आवश्यकताओं ( संजीवनी बूटी ) को ढूँढ निकालने के लिये, ज्यों का त्यों रख दें। अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ से सबकी सेवा की अपेक्षा है। तो उसे 'नई-तालीम' की भी सेवा करनी है। इस दिशा में शायद सबसे बड़ी सेवा यह होगी कि विभिन्न प्रयोगकारों के अनुभवों को तालीम के सेवकों के सामने वह रख दे।

वैसे तो 'नई-तालीम के विचार दृष्टि और दर्शन पर पूज्य बापूजी, विनोबा जी आचार्य कृपालानी आदि अधिकारी व्यक्ति काफी प्रकाश डाल चुके हैं। विचार समझने के लिये इतना काफी है। इसके अलावा 'हिन्दुस्तानी-तालीमी-संघ' की ओर से प्रति वर्ष के सम्मेलनों की रिपोर्ट की सिलसिले में तथा समय-समय पर प्रकाशित 'पाठ्यक्रमों' के द्वारा नई तालीम को व्यावहारिक पहलुओं से भी स्पष्ट करने की कोशिश की गई है।

हाँ बच्चों के लिये काम आनेवाले प्रत्यक्ष साहित्य का अभाव सबने अनुभव किया है। उसके लिये हम जो भी करें ; थोड़ा होगा। 'उसी दिशा में प्रस्तुत पुस्तिका भाई श्री शालिग्राम जी पथिक के अपने जीवन की अनुभूति का संग्रह है। इससे शिक्षकों को प्रत्यक्ष शिक्षण की कुछ जानकारी मिलेगी। श्री पथिकजी जैसे ही बहुत से 'पथिक' देश में ऐसे हैं जो 'नई-तालीम' की इस यात्रा में बराबर शरीक रहे हैं। उन सबसे मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपनी अनुभूतियों का संग्रह हमें भेजें ; ताकि उसे हम आम जनता के सामने रख सकें।

श्रम भारती
खादीग्राम
१३-५-५६

धीरेन्द्र मजूमदार
संयोजक : शिक्षा-समिति : अ. भा. सर्व-सेवा संघ।

# लेखक के दो शब्द

'नई-तालीम' का 'जीवन-दर्शन' और शास्त्र लिखने का मेरा अधिकार नहीं। उस पर बहुत सारा लिखा भी जा चुका है। साधारण शिक्षक सिद्धान्त से कम सीखता है: व्यवहार से ज्यादा सीख पाता है। अतः 'नई-तालीम' व्यवहार में कैसी क्या होगी: इसपर अधिक काम करने की जरूरत है — ऐसा मेरा मत है।

सरल' साहित्य बनाने में और ग्राम-जीवन को सब तरह से उन्नत बनाने वाले साहित्य को, सरल से सरल बनाने में मैंने अपना जीवन लगाया है। ..
'गाँव की बात' हिन्दी पाक्षिक पत्रिका मेरे इस प्रकार के प्रयास का 'मध्य-बिन्दु' कही जा सकती है। यह सब प्रयास मैंने इसी आशा से किया था कि 'किसी दिन' ग्रामशाला' में काम आने वाला सरल और सरस साहित्य बनाने का मैं नमूना दे पाऊँगा। मेरा सौभाग्य है कि 'अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ' के अध्यक्ष और अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ' की शिक्षा-समिति के संयोजक—श्री धीरेन्द्र भाई—की प्रेरणा से मैं आज अपने इस दिशा के अनुभवों को इस पुस्तिका के रूप में आप सब विद्वज्जनों के विचारार्थ प्रस्तुत कर पा रहा हूँ।

मेरी तो मान्यता है कि 'किसी दिन' शाला और शासक के माध्यम द्वारा ही समूचे गाँव का सब तरह का उदय: सर्वोदय संभव होने की आशा है। उसी दिन से 'ग्रामोदय' और 'ग्रामस्वराज' का सही ढंग आरंभ होगा। तभी 'ग्रामशाही' के विकास की बुनियाद पड़ेगी। और इसी स्थिति में ग्राम विश्व विद्यालय' नाम की संस्था की आवश्यकता पड़ेगी: उसकी शुरुआत हो सकेगी। "मेरा यह भी विचार है कि 'ग्रामशालाएं' व विश्वविद्यालय के अलग-अलग में बढ़नी ठीक हैं: न उन्हें पंचायतें चलायेंगी न उन्हें शासन चलाए। 'ग्रामशालाओं' को बनाना और चलाना और हर ग्रामशाला की हर समस्या का

इस विचारना : पहुँचाना : ग्रामविश्वविद्यालयों का सर्वप्रमुख : आधारभूत : अमली : काम होगा। वे इसके लिये स्वयं अपनी नई दुनिया खड़ी करने के बजाय संसार भर में फैले पड़े अनुभवी व्यक्तियों, विद्वानों और संस्थाओं का लाभ उठायें और साथ ही : ये विश्व विद्यालय धीरे-धीरे, शासन को मुक्त करते जायेंगे : जन-जीवन को ऊपर उठाने की सब तरह की जिम्मेदारियों से। मेरी खाटी राय में यही होगी शासनमुक्त समाज की शुरुआत।

मैं तो पिछले पन्द्रह सालों से गाता गुनगुनाता आरहा हूँ :—

जगमगा जायेगा जग सारा :
जब : जग जागेंगे : गाँव गाँव।

× × ×

जब जग का सब विज्ञान ज्ञान—
गाँवों में : खेत कुटीरों में :
पाकर बसेरा : गोपाल बने।
गोकुल बन जावें : ठाँव ठाँव।

× × ×

तब जग जागेंगे : गाँव गाँव।
जगमगा जायेगा जग सारा॥

मेरे यह विचार काफी 'उथल पाथल' हैं। मेरी भाषा कभी किसीको पसन्द आई नहीं। फिर भी मैंने अपना विचार पुस्तक रूप में पेश किया है कारण श्री धीरेन्द्र भाई का कहना है कि 'एक दम अच्छी ही चीज लिखने की बात सोचते रहने से कभी कभी, उसका कभी भी नम्बर नहीं आ पाता है। इसलिये जिसके पास जो अनुभव है वह एक बार, उसे लिख डाले। हर तरह की सुधार उसे मिलता ही जाता है। इन सुझावों को सादर अंगीकार करके जब वही चीज फिर से छपी जायगी तो उसकी बहुत कुछ कमियाँ कम हो जानेवाली हैं।'

यह है वह 'अभय दान' जिसे पाकर मैंने अपनी भाषा की खामी को और विचारों की अपरिपक्वता को जानते हुए भी यह पुस्तक लिखी है। अस्तु 'ग्राम ज्ञान' तो नया बनेगा ; आप सब मिलकर बनायेंगे। मेरा यह प्रयास खाद रूप में काम आवे ; अपनावे यही मेरी महत्त्वाकांक्षा है।

मेरा यह विनम्र प्रयास मैं सादर समर्पित करना चाहता हूँ श्रीमती आशा देवी और श्री आर्यनायकम् जी के श्रीचरणों में जहां बैठकर मैंने 'ग्राम शिक्षा' का क ख ग सीखा है।

अंत में मैं अपना आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ ; उन सब लेखकों और प्रकाशकों के प्रति ; जिनकी रचनाओं के कुछ अंश मैंने ज्यूँ के त्यूँ इस पोथी में उद्धृत किये हैं। असल में मैं इस पोथी का लेखक हूँ ही नहीं ; मात्र संकलनकर्त्ता या संपादक ही अपने को मानता हूँ।

*शालिग्राम 'पथिक'*

———: :———

# विषय-सूची



— —

## अध्याय १

● "शाला" चाहे भर की हो या छः-आठ घंटों की, काम शाला में होता हो या घर में या दोनों में : मूलोद्योग कताई हो या बागबानी या : बालक के सम्पूर्ण पारमार्थिक जीवन को, सब तरह उन्नत बनाने का, क्या बड़ा सही उपाय लिया हुआ हो — 'बालक के कोमल मनमानस में काम के प्रति सद्भाव जगा पाना : उसे कर्मयोगी कामकाजी बना पाना — और यह काम पर केवल स्वार्थभाव से ही न करके : स्व के लिए : परमार्थ के लिए : सर्वहिताय भी करने के स्वाधीभाव जगाने में पाये यह है नई तालीम की अपनी मंशा : तथा समाज-शास्त्र सर्वोन्नय ।

● गीत और कहानियाँ : खासकर क्रियागत (एकतानभाव) और 'सामूहिक—गान' वाले 'क्रियाशील' बालकों को बहुत भाते भी हैं ये उन्हें बहुत सिखाते भी हैं। जो भावेगा नहीं : वह सिखायेगा क्या? फिर छोटे-छोटे बालकों द्वारा उचित सुर-ताल में : क्रियाओं और भावभंगियों सहित सामूहिक रूप से गाये गये गीत : न केवल बालक का : बल्कि समूचे गाँव मुहल्ले, समाज का भाते भी हैं सिखाते भी हैं : नये भाव बनाते भी हैं।

● इसलिये हर शाला में हर कक्षा : हर पक्ष : हर माह—जितनी जिसकी भरी सामर्थ्य समझ हो—कुछ अच्छे अच्छे गीत गवाये और सिखाये जायें··· अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाई सिखाई जायें··· यह शिक्षा और समाज-शिक्षा दोनों ही दृष्टियों से : एकदम उचित और उपयोगी प्रतीत होता है।

● गीत तीन प्रकार के हो सकते हैं (१) भावना-भक्ति प्रधान (२) ज्ञानप्रधान (३) कर्मप्रधान। तीनों प्रकार के गीत शालाओं और ग्रामशालाओं में बराबर

पहुँचने पहुँचाने चाहिये और हमारी विनम्र राय में यह काम 'ग्राम शिल्पियों' का है। वे बड़े-बड़े काम जरूर करें। इसमें उपदेश का सवाल ही नहीं। पर व ऐसे छोटे छोटे काम भी करें। यह हमारी राय जरूर है। शोध और खोज बड़ी-बड़ी बातों की तो होती ही है। होनी भी चाहिये। पर इन छोटी-छोटी बातों की खोज और शोध करना भी, बेहद जरूरी है। 'कनाडा' देश की बात है। सहकारिता को वहाँ सबसे अधिक महत्व दिया जा रहा है। उन्होंने बड़े-बड़े हजार काम तो किये ही हैं। 'उमा' नाम की ऐसी एक गीतों भरी कहानी उन्होंने बनाई है जो बच्चों को 'गीत-कहानी' के रूप में सहकारिता के संस्कार देना चाहती है और यह पोथी वहाँ के बड़े से बड़े कवि ने गाई है और देश के बड़े से बड़े चित्रकार ने उसे स्वयं अपने हाथों चित्रित किया है।

● हमारा अनुभव है कि शाला के छात्रों का अपना खुद का एक 'मासिक पत्र' चन्दामामा जैसा चलाया जाये। हर बालक को बिना भेदभाव एक आकार के कागजों पर हर माह कुछ-न-कुछ रचने की प्रेरणा दी जाये तो इस तरह से भी बड़े बढ़िया गीत और कहानियाँ हमें मिलते रहने वाले हैं। जो बालक के मानस को हमारे सामने रख देंगे।

## कुछ गीतों और कहानियों के नमूने

काम करेंगे।
नाम करेंगे।
अच्छे अच्छे
काम करेंगे।
ऊँचे ऊँचे :

नाम करेंगे।
काम करेंगे।
काम करेंगे।
नाम करेंगे।
नाम करेंगे॥

× × ×

छोटा छोग :
सड़ा गलासा।
ऐंचा भैंचा
काना कुबड़ा।

दीन हीन को
जीवन अपना।
नहीं सहेंगे।
नहीं रहेंगे।

चकना चूर—
इसे कर देंगे।
आज करेंगे।
अभी करेंगे।
दर न लागी

तुरत करेंगे ।
जीवन अपना
पूर्ण करेंगे ॥
काम करेंगे ।
नाम करेंगे ॥

× × ×

अच्छे अच्छे
काम करेंगे ।
ऊँचे ऊँचे
नाम करेंगे ।
काम करेंगे ।
काम करेंगे ।
नाम करेंगे ।
नाम करेंगे ।

—०—

गंदे कपड़े : नहीं रहेंगे ।
नित धोयेंगे साफ करेंगे ।
सब्जी रस साग खायेंगे ।
साबुन रचना सीख जायेंगे ।

नील भी देंगे लोहा भी करेंगे।
धोबी राजा से सीखेंगे।
चम चम चम-चम कपड़े होंगे।
राजा भइया हम सब होंगे।
काम करेंगे नाम करेंगे॥

× × ×

गदा रहना बुरी बात है।
बुरी बात से मुँह मोड़ेंगे।
नया ढग अब अपनायेंगे।
नया रग ढग में लायेंगे।
सबा साफ जमाना होगा।
यही गीत अब गाना होगा।
गाने से ना काम चलेगा।
गाने जैसे काम करेंगे।
काम करेंगे नाम करेंगे।
नाम करेंगे काम करेंगे॥

—०—

यह भी ना होगा
कपड़े कम ।

यह भी ना होगा :
धन निरधन है।
गांधी जी की—
जय हो : जय हो।
खुद कातेंगे।
खुद ही बुनेंगे।
कपड़ों के—
अम्बार लगेंगे।
नेहरू जैसा—
बढ़िया कपड़ा
गाँव गाँव में :
सब पहनेंगे।
काम करेंगे।
नाम करेंगे ॥

—o—

यह देखो ! ये गइया मइया
पल पल काँटा हो आई।
दूध दही का नाम नहीं है
राम नाम लेती है माई।

इसे बनायें इसे सजायें
बढ़िया बढ़िया घास उगायें।
तन पर रोज खरहरा होगा
सेवा का व्रत मेरा होगा।

गउशाला को साफ करूँगा
भूल चूक नहिं माफ करूँगा।
रोज करूँगा रोज करूँगा
बड़े सबेरे भोर करूँगा।

गइया माँ सुख से सोयेगी
खूब खूब यह दुआ करेगी
मेरी पढ़ाई खूब चलेगी।
मेरी फुलवाड़ी खूब बढ़ेगी।

हम सब रोज नहाते हैं
गइया भी रोज नहानी होगी।
हम सब राजा भइया हैं तो
यह माँ गइया—रानी होगी।

गउ माँ का संताप हरेंगे
पुन्य करेंगे पाप तजेंगे।

गोकुल के घनश्याम बनेंगे।
काम करेंगे नाम करेंगे॥

यह देखा! यह गांव गांव में :
देवकपास उगानी है।
इसका बीज बिनौला बो है :
होगी उसकी सानी है।

रोज बिनौला गइया पाये
मोटी बहुत सबल हो जाये :
दूध बढ़े : गाढ़ा हो जाये :
यार! मलाई मोटी आये।

यह सब बड़े काम की बातें :
यह सब भले काम की बातें।
भइया! अब स्कूल सिखाता है।
यही बताता : यही सिखाता :
ये ही काम कराता है।

यही करेंगे : यही करेंगे :
डटके डटके खूब करेंगे।
घर घर फर फर काम करेंगे :
काम करेंगे : नाम करेंगे॥

हम माली माली राजा हैं
हमने सब यह उपजाया है।
यह देखो! ये फल हमारी
हमने इसे उगाया है।

बढ़िया बीज कहाँ से आया
ऐसा बढ़िया गड्ढा बनाया।
पोखर से मिट्टी ले आये
खाद मिला गड्ढा भर पाया।

बीज जमाया पानी डाला :
घास फूस बाहर कर डाला।
गोबर घोल घड़े में रखते :
थोड़ा थोड़ा यह नित देते।

लकड़ी गाड़ी डोर लगाई :
झूम झूम बेल चली रे भाई।
झूम झूम ये गाती है
गाना हमें सिखाती है।

ये देखा! ये फूल उग आये
तितली भौंरे दौड़ आये।

मेरा घर गुलशन बन आया
हमको भाया तुमको भाया।

× × ×

दो दिन की है बात हर से
फल इसमें लग आयेंगे।
हम छनाछन हंडिया में फिर
सब्जी साग बनायेंगे।

सब्जी खाना : अच्छी बात
स्वय उगाना अच्छी बात।
अच्छी अच्छी बात करेंगे
काम करेंगे नाम करेंगे।

—१० —

चला चला गांव हमारा :
बड़ा कड़ा सफाया है।
शाम हुई सब घर घुस आते
राग रग का घाटा है।
यह देखो ! यह मीर मटरू -
नाटक रोज रचायेंगे।
हम सब बालगोपालम् मिलकर
गायेंगे : गबवायेंगे।

हरिश्चन्द्र की सत्य कहानी
अभिमन्यु की वीर कहानी
नाटक में होगी मनमानी।
यह रंग भी आयेंगे।
नए रंग भी आयेंगे।
फिर क्यों नहीं सिनेमा आए।
पैसा फूंक भाग गवाए।
गाँव गाँव में मिल सुन्दर अब
सबका मन का दुःख हरेंगे।
दुःख हरेंगे सुख भरेंगे
सुखों के भंडार भरेंगे।
काम करेंगे नाम करेंगे।।

●

● गीतों का तो कोई अंत नहीं। हजार हैं : हजार बनाये जा सकते हैं। हाँ, 'ग्रामशाला' के गीत, कुछ इस नई दृष्टि से भी बनें तो शायद गाँव जीवन का गीत गाने लायक बना पाने में एक सहाय हो जायगा। उपरोक्त गीत को बहुत कुछ 'कर्म प्रधान' गीत कहा जा सकता है। 'ज्ञान प्रधान' गीत का एक नमूना भी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। कोई बहुत सीधा सच्चा विभाजन 'भावना ज्ञान व कर्म' का न किया जा सकता है न करना है। केवल ध्यान रखना है कि गान भी 'भावना ज्ञान और कर्म प्रधान' ऐसे तीन प्रकार के हो सकते हैं : होने चाहिये : रहते हैं : रहने हैं।

# बच्चो आओ :

( १ )

आओ बच्चो, तुम्हें दिखावें झाँकी अपने ग्राम की।
उठो उठो, आलस को छोड़ो, बातें सीखो काम की॥

आपस में है भाईचारा :
सर्वोदय परिवार में।
ऊँच-नीच औ छुआछूत का–
भेद नहीं व्यवहार में॥

मिल कर सभी प्रार्थना करते रोज सुबह व शाम की ॥आओ०॥

( ५ )

लड़के और लड़कियाँ पढ़तीं—
शुद्ध 'नयी—तालीम' यहाँ।
बुनियादी शाला में पढ़ कर—
छात्र बनें 'श्रम निष्ठ' जहाँ॥
उन्हें तनिक तकलीफ़ न होगी : वर्षा-सरदी-घाम की ॥आओ०॥

( ६ )

चोरी, जुआ, नशेबाजी में—
कोई भी बरबाद नहीं।
सुख की नींद सभी सोते हैं—
झगड़े और फसाद नहीं॥
पंच बराबर परमेश्वर के जय बोलें श्रीराम की ॥आओ०॥

( ७ )

"सबै भूमि गोपाल की है"
यह बात सही हो गई यहाँ।
"सब सम्पत्ति रघुपति की"
ऐसा ऊँचा आदर्श यहाँ।
भूमि गाँव की खेती सबकी :
नहीं 'मिलकियत' नाम की॥
आओ बच्चो मिलकर गायें : महिमा अपने ग्राम की॥

*रचयिता श्री रामगोपाल जी दीक्षित : 'भूदान यज्ञ' के सौजन्य से।*

● 'ज्ञान प्रधान' गीतों की भी कोई कमी है नहीं होगी नहीं। और 'भावना प्रधान' गीतों का तो कहना ही क्या है! गीत तो होता ही है 'भावनायें' जगाने बनाने के लिये गीत गागाकर पिछले दिनों, देश में ऐसी क्रिया बनाई जा सकी थी कि लोग हँसते-हँसते दौड़-दौड़कर फांसी के तख्तों पर झूम गये। गीत समय गति और उसकी सबसे प्रमुख आवश्यकता के अनुसार भी बनते आये हैं। बनते हैं: बनाये जाने चाहिये। एक नमूना यहाँ भी उसी प्रकार का दिया जा रहा है:—

मंगलम्
मंगलम्
मंगलम्
मंगलम्          मं  ग  ल  म्।

'मंगल-बेला' आई आई रे।
मंगल बेला आऽऽऽई ॥

अवसर आय
चेत न पाये
तु मूरख पछताय भाई।
तु मूरख पछताई ॥
मंगल बेला आई ॥

इसलिये --

चतुर-चतुर बालक यदि आवें।
'बाल-मगलम्' नाम धरावें।
'ग्राम मगलम्' नाम धरावे।

खेले खूब—
खूब कमावे।
दुनियाँ समझे;
दुनियाँ देखे।
देश देश से—
हाथ मिलावे।
नेहरू चाचा जिन्दाबाद।
उन जैसे हम भी बन जावें॥

चतुर चतुर

और -- -- --

यह देखो! यह संत विनोबाः
सबकी बात बताता है।
सब सबका सब सबके होंगे
'सह अस्तित्व' सिखाता है।
'मानव मंगल' यज्ञ रचाया
'भूमिदान' है नाम धराया

"माया छोड़ो—
ममता छोड़ो।
दीन हीन को—
गले लगा लो।
बहुत बड़े हो—
और बड़े बनने का यह फिर
अवसर आया।"

ऐसा सुन्दर राग अलापे
ऐसी सुलझकर बात बताता।
'साँप मरे ना लाठी टूटे'
नया ढंग सबको सिखलाता।

हम भी उसकी बात सुनेंगे।
हम भी उसके साथ चलेंगे।
जो कहता वह कर के देंगे।
यूँही जियेंगे यूँही मरेंगे।

संत विनोबा जिन्दाबाद।
हम सब ही हैं उसके साथ।
'मानव मंगल' गान रचाये
चतुर चतुर [illegible] ॥

चिन्तु
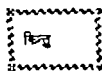
कोरी बातों से है भइया।
काम न यह चल पायेगा।
गीतों से और नारों से:
यह घड़ा नहीं भर पायेगा।

× × ×

✿ बहुत सोचकर आना होगा।

✿ घर भर का संग लाना होगा।

✿ छोटे दिल का काम नहीं: दिल
इतना बड़ा बनाना होगा।

✿ रुक रुक पढ़ना बात समझना:
बहुतहि ज्ञान बढ़ाना होगा।

✿ क्षणभर भी बेकार न होना:

✿ अपना रोज नियम से पढ़ना।

+ ऐसा नियम बनाना होगा॥

---

✿ माटी से सोना उपजाना।

* कपड़ा अपना स्वयं बनाना।
* गऊ एक बढ़िया कर पाना।
* घर को बंगलानुमा बनाना।
* मिलकर रहना फूहड़ न होना।
* कुनबा सा यह गाँव बनाना।
* धरती पर अमृत ले आना।

† यह सबको अपनाना होगा॥

बहुत सोच कर माना होगा॥

● मानव मानव का भेद कम कर पाना और वह भी प्रेम मार्ग द्वारा लोगों की खुद की अपनी इच्छा से : विवेक पूर्वक : शिक्षा और साहित्य के लिये बड़ा से बड़ा और मुख्य...आदर्श रहा है। विनोबा का भूदान आन्दोलन हमारे अपने इस देश में आज एक अच्छा माध्यम है : मानव को ऊपर उठानेवाली : मानव को मानव बनाने वाली भावनायें जगाने का। कुछ गीत उस प्रकार के भी हम बालकों को सिखायें : यह देश काल की तात्कालिक दृष्टि से भी और मानवता के संस्कार बालकों में डालपाने की अंतिम उस दृष्टि से भी उचित प्रतीत होता है। गीत हाजर हैं। पर बालकों के खुद अपने गाने लायक गीतों का रचना अच्छा रहेगा : ऐसा हम मानते हैं और हमारा तो अनुभव है कि बालकों की तोतली बानी में सम्पूर्ण उत्साह के साथ गाये गये गीत, समूचे समाज की हृदयतंत्री का बहुत बजा पाते हैं।

## चूहे चाचा

चूहे चाचा :
चूहे चाचा !!
जरा होश में
आजायें अब।

'नहीं' चलेगी : पिछली बातें
हम जगती के सब रगरस

दो दिन में ही बदल आयेंगे।
हम बदलेंगे तुम बदलोगे।
हम तुम सबही बदल जायेंगे॥
चूहे बाबा! चूहे बाबा!!
इतना सुनकर बाबा उछल
उछल उछल कर धूम मचाई।
मूँछ तानकर पूँछ तान कर
बैठे बोले क्या है भाई??

× × ×

चुप्पम् चुप थे चुप्पम् चुप थे
चुप थे सभी बोलने वाले।
नाच रहे थे, चूहे बाबा।
सोच रहे थे, साधन हारे।

× × ×

इतने में आ धमके 'राजू'
परखा नित्य पलायन हार॥
चूहे बाबा! चूहे बाबा!!

× × ×

कहा बात है, भाई लाला?
का कारन या सभा बुलायी?

काहे फुदत चूहे चाचा ?
काहे मौन समासद माई ?
हमहूँ जानी, हमहूँ समझी,
हमहूँ आपन राय बतायी।
चूहे चाचा ! चूहे चाचा !

× × ×

अब घबराये चूहे चाचा।
हिम्मत सब मइपन माँ आयी।
चुप हो बैठे, चूहे चाचा।
मुमम् सारी बात बतायी।
चुमम् बोले, राजू मइया !
देखें अब तुम्हरी चतुराई ॥
चूहे चाचा ! चूहे चाचा !!

× × ×

राजू बोला चूहे चाचा !
बिना किये तुम क्यू खाते हो ?
खत-खेत में सेंध लगा के
क्यू किसान को सताते हो ?
क्या हक है : तुमको जीने का ?
बिना किये अब तुम खाते हो ?

राम-राज्य आने वाला है।
बूढ़ बाबा ! बूढ़ चाचा !!

× × ×

बिना किये ना कोई खाये।
चोरी-डाका रह ना जाय।
सब पर खेत सभी पर काम।
राजा हों या बूढ़े राम।
ऐसी अब दुनिया आयेगी।
बाबा धूँधूँ चल न पायेगी ॥
बूढ़े बाबा ! बूढ़ चाचा !!

× × ×

वह देखो ! वह बाबा आया
संत 'विनोबा' नाम धराया।
कलयुग बीत गया है भाई
सतयुग का संदेशा लाया।
सब दौलत अब सबकी होगी।
हेल-मेल से सभी रहेंगे।
बैर-भाव अब रह न पायेगा ॥
बूढ़े बाबा ! बूढ़ चाचा !!

× × ×

सुभम् चाल सुभम् बोले।
खुशी-खुशी दौड़ी आयीं।
"राम-राम ! बूढ़े बाबाजी !"
सब मिल बोले खुशियाँ छायीं।
"क्या विचार है अब बाबाजी"
सबने पूछा सब मुस्कायीं॥
बूढ़े बाबा ! बूढ़े बाबा !!

× × ×

बूढ़े बाबा उछल-कूद कर
बैठ गये, मूँछें सहलायीं।
तब बोले वे; "ठीक बात है"
सब पर खेत, सभी पर काम;
राजा हों या बूढ़े राम।
हम भी इसमें शामिल होंगे।
लोभ-मोह को अब तज देंगे।!"
बूढ़े बाबा ! बूढ़े बाबा !!

●

● गीतों से भी ज्यादा रोचक होती हैं 'गीतों भरी कहानियाँ'। दो मामूली से नमूने हम यहां दे रहे हैं। ग्राम शिक्षक बड़ी संख्या में ऐसी 'कहानियाँ' गढ़ लेंगे।

# १ राजा तो राजा ठहरा एक गीतों भरी कहानी

● एक था राजा एक थी रानी। बड़े चतुर थे बड़े ज्ञानी। सारे जग में उनका यश फैला पड़ा था। राजा राज्य करने के साथ साथ अन्य अनेक कार्य भी करता रहता था। खूब पढ़ता था। खूब लिखता था। खूब गाता था। साधु संतों का आदर करता था। दीन दुखियों के काम आया करता था और रानी भी ऐसा ही सब आचरण करती थी।

● एक दिन की बात राजा रात में सो रहा था कि एक बूढ़े फकीर का चिमटा और गीत उसे सुनाई पड़ा —

## मानुष ! काहे को मोह करे !!

● फकीर बूढ़ा अवश्य था। पर स्वर उसका बड़ा मादक था। जो सुने मुग्ध रह जावे। वहीं से चिपक सा जावे। फकीर का यह नियम सा ही गया था कि वह रोज रात ११ बजे चिमटा लेकर निकलता और यही एक विशेष गीत नये नये स्वरों में गाता हुआ सारी नगरी का चक्कर लगाता था —

मानुष ! काहे को मोह करे !!
दो दिन को या जग में रहनो !
साथ साथ ना सोना गहना !

हाय हाय कर जोड़ी माया।
माया ना मोह करे ॥ मानुष०।

● फकीर का गीत राजा को बहुत भाया। राजा तो राजा ठहरा। वह सारी रात फकीर के साथ भटकता रहता। गीत की एक एक कड़ी उसके रोम रोम को आनन्द विभोर कर देती थी। फकीर को इसका कुछ पता नहीं था। वह अपनी धुन में मस्त—नित नई कड़ी जोड़ता हुआ—गाता फिरता था —

सतयुग में माया नहीं भाई।
त्रेता में कुछ कुछ आ पाई।
द्वापर में तो कौरव कुल पर
पूरी पूरी माया छाई।
'लगे धनु को ; एक इंच भी—
भूमि ना दूँ' यूँ मति बौराई
मति बौराय मानुष जाये।
कुछ भी न शेष रहे ॥ मानुष०।

● यह लोकप्रिय। फकीर आगे की ओर बढ़ गया। आज इस नगरी में कल उस नगरी में। पर राजा भी राजा ठहरा। अपनी रानी को [illegible] साथ में राजपाट का भार मंत्री को दे ; राजा फकीर के पीछे पीछे

चल दिया। फकीर की वाणी में भी मानो सरस्वती का वास हो। वह गाता ही गया : गाता ही गया :—

राजा राम मोह नहिं कीनो।
राज-तिलक छन में तज दीनो।
"मैं नहिं लूंगा तुम ही लेओ"
राम भरत की यही लड़ाई।
यही राम के भक्त आज क्यूं?
चरण चिन्ह ना चलें ॥ मानुष०।

● फकीर चलता गया। फकीर गाता गया। राजा भी राजा ठहरा। न भूख न प्यास न सर्दी न गर्मी। वह चलता गया : चलता गया। और यह जो रानी ने भी कमाल किया। माता सीता महारानी की तरह निश्चल, वह भी साथ साथ चलती रही। चलती रही लगातार। मा लोक-दिखावे के लिये : ना राजा का प्रसन्न करन की इच्छा से। फकीर बाबा के स्वरों में 'जीवन का सबसे बड़ा मूल्य 'सबसे बड़ी बात' देखकर ही : वह साथ साथ चल रही थी। फकीर न आज अपने गीत का नया पद बनाया : नया पद गाया जो राजा रानी के मन में तीर की तरह घुस गया बिंध गया। राजा अमर हो गया : रानी अमर हो गई। फकीर ने आज गाया —

या धरती है सब की माई
काई 'भूपति' तब कहलाई।

ममकी धरती सब को द दे
सबके सब हैं तेरे भाई ॥ मानुष० ॥

● राजा रानी की यात्रा का आज अंत हो गया। रानी संत हो गई। राजा संत हो गया। फकीर से उन्हें जो जानना था मिल गया। उनके मन का मोह कट गया। वे मुक्त हो गये।

● राजा तो राजा ठहरा राजा ने अपनी सारी भूमि सब को दे दी। सबै भूमि गोपाल की हो गई। जमीन का मालिक कोई ना रह गया।

● रानी ने सोचा भूमि पुरुष रखता है सम्पदा नारी रखती है। उसने एक बहुत बड़ा 'सम्पत्तिदानयज्ञ' रचाया। सारी सम्पत्ति सब में बाँट दी गई। ना कोई छोटा रह गया। ना बड़ा। राजा रानी हृदय से आत्मा से बहुत बहुत बड़े हो गये।

● यह लो राजकुमार भी सामने आया। वह फकीर सा भेष बनाये चिमटा दबाये अपना 'जीवनदान' करने निकल पड़ा है। चिमटा बजाता है गाता है —

मानुष काहे को मोह करे।

# २ रानी की कहानी अमृत का पानी

दिन भर करके काम धाम का
जब उस दिन मैं घर पर आया—
बाल-गुपाल सभी घिर आये,
सबने मिल कर शोर मचाया!

उन सबकी मुखिया मन भायी
बिटिया नन्हीं सुषमा-रानी
एक साथ सब मिलकर बोले—
"कहो कहानी! कहो कहानी!!"

बैठ गया खटिया पर जब मैं,
बोला पीकर के फिर पानी—
"मैं हारा, तुम जीती! लो फिर,
सुषमा बेटी! सुनो कहानी—'

एक यहाँ राजा रहता था,
एक यहाँ रहती थी रानी।
रानी रूठ गई राजा से,
लूँगी मैं अमृत का पानी।

'अमृत का पानी': पीकर के—
जिसको मरे न कोई जग में।
राजा हुआ उदास, यही
चिन्ता रहती, उसकी रग रग में

—यही सोच राजा को निशि दिन
कैसे जीयेगी यह रानी?
जो अन-जल सब छोड़ चाहती
केवल 'अमृत का ही पानी'

एक सवेरे, राजा का, दरबार
जुड़ा था, धूमधाम से।
दूर दूर के लोग जुड़े थे,
चल कर आये, ग्राम ग्राम से।

धनी गरीब, किसान महाजन,
अफसर प्यादे, पुलिस सिपाही,
बैठ गये; तब राजा आये—
बजते बिगुल और शहनाई।

राजा ने उन सब लोगों को,
रानी की वह कही कहानी,
कैसे रूठ गई थी रानी—
—माँग रही 'अमृत का पानी!'

"जिसका पीकर, मरे न कोई,
ऐसा वह अमृत का पानी!
पीऊँगी जब उसे, तभी मैं
जीऊँगी, कहती यह रानी!"

राजा बोला— "लायेगा जो
रानी का अमृत का पानी,
उसको मैं राजा कर दूँगा,
दे दूँगा, अपनी रजधानी!"

रानी की सब सुनी कहानी
सबने यह, अपने मन ठानी—
चाहे जैसे मिले, कहीं भी,
लायेंगे 'अमृत का पानी!'

हुआ बन्द दरबार, गये सब
अपने अपने घर दरबारी,
नगर नगर में गाँव गाँव में,
खोज हुई फिर भारी भारी!

नदी, पहाड़, घाटियाँ, जंगल,
सब का, कोना कोना छाना;
पर 'अमृत के पानी' का ना,
मिला किसी को पता ठिकाना!

रानी रूठी रही बहुत दिन
छोड़ दिया सब दाना पानी!
सूख गई काँटे सी वह तो,
रटती बस– 'अमृत का पानी!'

अमृत का पानी लेकर, कब
कौन, कहाँ से, कैसे आये?
इसी सोच में, राजा बैठा
रहता था वह, मुँह को बाये!

एक सवेरे, एक सिपाही ने
राजा को सीस झुकाया;
बोला– 'हे महाराज! कहाँ से,
एक मुसाफिर, चल कर आया!

कहता है वह खुश कर दूँगा,
झट से मैं, रूठी जो रानी,
मैंने सोचा ढूँढ लिया है,
आ देता "अमृत का पानी!"

राजा भूल गया सब सुध-बुध,
बोला– "इस यात्री को लाओ!
उसको मस्ती से नहलाओ,
बढ़िया कपड़े फिर पहनाओ!

कपड़े पहना कर तुम उसको
मनचाहा खाना खिलवाओ,
लड्डू पेड़े, बरफी सुरमे,
रसगुल्लों के ढेर लगाओ!

मैं उसको दे हाथी घोड़े
दूँगा, दे दूँगा रजधानी!
जो वह मुझको जरा पता दे,
कहाँ मिले "अमृत का पानी!"

यह सुन कर, फिर सीस झुका कर
बाहर जल्दी गया सिपाही;
लौटा पर वह जल्दी से ही,
आकर फिर से बात सुनाई—

हे महाराजा! अजब मुसाफिर,
कहता है मैं क्या नहाऊँगा!
क्या बढ़िया कपड़े पहनूँगा!
क्या बढ़िया खाना खाऊँगा!

कह दो ! राजा से, जल्दी से
चल साथ लेकर के रानी,
मैं उनको चल कर दिखलाऊँ,
जहाँ बहे "अमृत का पानी !"

राजा गया तभी महलों में,
रानी को यह बात सुनाई—
एक बटोही चल कर आया,
जिसको अमृत दिया दिखाई।

कहता है— "जो साथ चले,
मेरे, तो चल कर मैं दिखलाऊँ,
अमृत का पानी पिलवाऊँ,
उस में भी भर के नहलाऊँ !"

सुनते ही यह बात, हँस पड़ी
बोली फिर, वह रूठी रानी—
मैं तैयार हूँ चलने का—
चल कर देखूँ "अमृत का पानी !"

हाथी के हौदे पर बैठे,
जल्दी से वे राजा रानी!
आगे बाजा बजता चलता,
पीछे चली सभी राजधानी!

चमक दमक की वर्दी पहने,
चले अकड़ते, बहुत सिपाही!
उन सब के आगे चलता था,
लाठी लिये, मुसाफिर भाई!

धूम धाम से चले जा रहे,
जल्दी से वे राजा रानी,
उनके पीछे सारी नगरी,
चली, जहाँ 'अमृत का पानी'!

कड़ी धूप में खेत जोतता,
गाता था किसान यह गाना—
बरसा राम! खूब धरती पर,
जग भर को मिल जाये खाना!

पर उसका तो पिचक रहा था
भर! भूख से पेट कमर में!
तन पर चिथड़े, मन पर मस्ती!
मानो वही सुखी, जग भर में!

कड़ी धूप में खेत जोतता
गाता था, किसान यह गाना—
बरसो राम! खूब धरती पर।
जग भर को मिल जाय खाना!

× × ×

ठहर गया इक वहीं 'मुसाफिर'
जहाँ, किसान चलाता हल था।
ठहर गये, इक राजा रानी,
ठहरा, उनका जो दल बल था।

राजा कहना बन्द हो गया।
बन्द हो गया, हँसना गुनना।
गाता गीत किसान अकेला।
जाग जाग से ! सुखम गुम्मा॥

बरसो राम ! खूब धरती पर
जग भर को मिल जाये खाना—
सब जग खाये सब जग गाये
फसके मेहनत करे जमाना !

कहा मुसाफिर ने—हे राजा !
अमर स्रोत अमृत का यह है !
कैसी मस्ती ! कैसा जीवन !
कैसी धुन ! कैसी यह लय है !

तुम अपने महलों में भी जब
'गरमी ! गरमी !' शोर मचाते ।
तब ये वीर किसान खेत में
लूओं में, हल खूब चलाते !

खूब चलाते हल, गाते रहते
मस्ती से अपना गाना—
बरसो राम ! खूब धरती पर
जग भर का मिल जाये खाना ।।

'राम बरसता खेती पकती।
अन्न लाद सब घर में लाते।
आते यहाँ, सिपाही तब ही,
तभी महाजन शोर मचाते!

ले जाते हैं, लाग लाद कर,
उसके घर से दाना दाना,
झुकता है दरबार, शान से!
सजता है बाजार पुराना!

ये भूखे रह कर भी गाते,
वीर किसान यही फिर गाना—
बरसो राम खूब धरती पर,
जग भर का मिल जाय खाना।

कहा मुसाफिर न 'बरसो तुम!
अमर साल अमृत का गर्नी!
चले न हल जा उगे न गेता,
कैसा राजा ? कैसी गना ?

कैसा मन्त्री ? कैसा प्यादा ?
कैसी हाट ? कहाँ दरबारी ?
आ मन में किसान यह सोचे—
फर्क मला क्यों मारा मारी ?

अब मैं जोतूँ, अब मैं काटूँ,
अब मैं लाऊँ, घर में दाना।
आ जाते हैं, साहु सिपाही,
ले जाने को, दाना दाना

× × ×
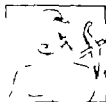
जग का है यह एक सन्तरी—
नींद नहीं जिसकी आँखों में।
एक 'पक्का' है, जिसका सुख दुख,
बँटा हुआ, लाखों लाखों में।

एक मित्र है जिसको कल की—
फल की परवाह नहीं है।
एक 'प्यारा सपूत' यह है
जिसके माथे पर जाह नहीं है।

बादल बफ़ ओले बरसात,
धरती आग उगलती जानी;
पर न किसान, बैल हल रख कर,
करने गया, कभी मन मानी!

इसीलिए, है राजा रानी!
अमर खेत, अमृत का यह है!
—कैसी मस्ती! कैसा जीवन!
कैसी धुन! कैसी यह लय है!

देता जो जग भर को जीवन,
मर कर भी गाता जा गाना—
धरमो राम! भूप धरती पर।
जग भर को मिले आप खाना!

यही अमर पानी है, जिससे,
जीते राजा, जीती रानी,
यही अमर खाता है, जिससे,
लगता है 'अमृत का पानी!"

हाथी पर से उतर पड़े तब,
हँसते हँसते राजा रानी!
राजा ने तब बैल सम्हाले,
रानी हल ले चली सयानी।

× × ×

महल छोड़ कर, राजा रानी,
रहने लगे, झोंपड़ी छा कर।
और धूप में, सूखों में थे,
सुख रहते, दोनों, यों गाकर—

बरसो राम! खूब धरती पर।
जग भर को मिल जाये खाना।
चाहे हम भूखे सो जायें :
चाहे हमको मिले न दाना।

निष्काम प्रेम संगठ
न सौजन्य से प्राप्त

● 'कहानियाँ' बहुत प्रभावकारी होती हैं। केवल कहने का ढंग आना चाहिए। वह नहीं आया तो कहानी बड़ी रूखी सूखी रह जाती है। फिर भी कहानी तो कहानी ही है। कहानियाँ भी हजार हैं। भूत प्रेत से लेकर राम जानकी महाभारत तक की। 'ग्रामशाला' में इन सबका भी स्थान रहने ही वाला है। यह ठीक है। फिर भी ग्राम जीवन को पढ़े लिखे लोगों के रहने लायक बनाने में मददगार हो पानेवाली कहानियाँ हम ज्यादा देना चाहेंगे। वरना पालक गांव में ठहर नहीं पायेगा। 'ग्रामशाला' चलाना न चलाना बराबर हो जायेगा।—

कहानी नं० १

## एक था चुन्नू एक था मुन्नू

● एक था चुन्नू। एक था मुन्नू। चुन्नू छोटा था मुन्नू मोटा था। चुन्नू अच्छा था। मुन्नू बुरा था। मुन्नू झूठा था चुन्नू सच्चा था।

● एक दिन दोनों में लड़ाई हो गई। मुन्नू ने चुन्नू को गाली दी। चुन्नू ने मुन्नू को मार दिया। कुछ दिनों के लिए दोनों की बोलचाल बन्द हो गई।

● लेकिन एक गाँव का रहना। बिना काम काज कब तक चलता।

था ? उनकी बातचीत होगई। चुन्नू ने कहा मुन्नू भइया ! गाली मत दिया करो। मुन्नू ने कहा चुन्नू भइया ! अब हम गाली नहीं दिया करेंगे।"" दोनों यार हो गये।

●दोनों गाँव में रहते थे।" " गाँव में। गंदे भी थे। गरीब भी थे। कपड़े उनके फटे थे। एक ही जोड़े कपड़े थे।

× × ×

●चुन्नू ने एक दिन एक 'सपना' देखा। उसने देखा कि मुन्नू खड़ा-खड़ा जोर-जोर से रो रहा है। चुन्नू ने पूछा : मुन्नू भइया क्यों रो रहे हो ? क्या हुआ ??

●मुन्नू बोला : यह राजा का लड़का राजकुमार हमें चिढ़ाता है। कहता है : तुम गन्दे हो। तुम्हारे पास कपड़े नहीं। तुम चिथड़े पहनते हो। हम तुम्हें अपने साथ नहीं खिलायेंगे। वह हमें 'कमीना' कहता था।

× × ×

●दोनों चिन्ता में पड़ गये। करें तो क्या करें ? कपड़े सचमुच गंदे थे। फटे भी थे। एक ही जोड़े थे।"" चुन्नू को हिम्मत आई। मुन्नू को हिम्मत आई। चुन्नू ने मुन्नू को कान में एक बात बताई। बड़ी बढ़िया शानदार। दोनों खुश हो गये। खिल गये। मस्त होकर नाचने लगे। गाने लगे। चुन्नू ने गाना गाया। मुन्नू ने गाना गाया —

काम करेंगे नाम करेंगे ॥

●दोनों मिलकर धोबी के यहाँ गये। धोबी का नाम था ।
दोनों ने मिल के धोबी को प्रणाम किया। धोबी खुश होगया। अपने बत्तीसों दाँत खोलकर धोबी ने पूछा : कहो भइया आगये। क्या बात है ?

●दोनों ने कहा धोबी काका ! इज्जत का सवाल है। तुम दुनियाँ की इज्जत बचाते हो। सबको बाइज्जत बनाते हो। तुम हमारी भी मदद

कर दो ना !" तुम तो देख रहे हो : हमारे यह कपड़े कितने गंदे हैं। सचमुच बुरी बात है। हमें खुद अपने पर शरम आती है। हम सब कुछ करने को तैयार हैं। तुम हमारी मदद करो। हमें बढ़िया कपड़े धोना सिखा दो। हम तुम्हारा बड़ा अहसान मानेंगे जनम भर।

● धोबी बड़ा नेक था। भला था। बोला : चुन्नू मुन्नू बाबू ! फिकिर करने की कोई बात नहीं। हम तुम्हें कपड़े धोना जरूर सिखायेंगे। बहुत जल्दी : बहुत बढ़िया। चकाचक। यानी ठीक राजकुमार जैसे।

● चुन्नू ने मुन्नू को देखा। मुन्नू ने चुन्नू को देखा। मस्त होगये।

● धोबी ने कहा चुन्नू बाबू ! आओ थोड़ा काम किया जाय। बिना काम इस जग में कुछ होता नहीं।

● चुन्नू बोला बरेठा काका ! हम काम जरूर करेंगे। जितना कहोगे उतना करेंगे।

● मुन्नू बोला बरेठा काका ! काम करने से ही चिन्ता मिटती हो इज्जत बढ़ती हो : तो भला काम करने से इनकार करेगा कौन ?

● धोबी बोला ठीक कहते हो भइया : जो काम करता है : उसका नाम होता है।

★ चुन्नू मुन्नू को इस पर अपना गाना याद आ गया। और उन्होंने धोबी से कहा बरेठा काका ! हम तुम्हें एक बढ़िया गाना सुनायेंगे। तुम्हें भी हमारे साथ गाना होगा। थोड़ा हाथ भी हिलाना होगा।

तीनों मिलकर गाने लगे।

काम करेंगे।
नाम करेंगे ॥

कहानी नं० २

# एक थे चुन्नू एक थे मुन्नू

●एक थे चुन्नू। एक थे मुन्नू। चुन्नू छोटे थे मुन्नू मोटे थे। चुन्नू गन्दे थे मुन्नू अच्छे थे। मुन्नू झूठे थे : चुन्नू सच्चे थे।—दोनों दोस्त थे। एक दूसरे के बगैर रह नहीं सकते थे।

●एक दिन की बात चुन्नू ने फिर एक बड़ा सपना देखा। उन्होंने देखा उनके मुन्नू दोस्त बड़े जोर २ से रो रहे हैं। रोते रोते गाल गीले हो गये हैं। आँख लाल हो गई हैं।

●चुन्नू ने पूछा मुन्नू भइया क्या बात है?

●मुन्नू बोले आज फिर उस राजा के लड़के राजकुमार ने हमारा अपमान किया। हम समझे थे साफ कपड़े पहन कर हम उसका मुकाबला करने लगेंगे। उसके साथ खेल सकेंगे। और यह समझकर हम वहाँ आज गये भी थे। पर वह तो कहता था तुम पर कपड़े नहीं। तुम्हारे कपड़े फटे हैं। चीथड़े हैं। गूदड़े हैं। तुम गरीब हो। हमारे साथ नहीं खेल सकते। हम तुम्हें नहीं खिलायेंगे। उसने हमें भगा दिया।

●इतना कहकर मुन्नू राजा फिर जार जार से रोने लगे। चुन्नू चिल्ला

में पड़ गये। किया जाये तो क्या किया जाये। कपड़े सचमुच कम थे। बहुत कम। फटे भी।" " पर, पैसा तो घर में है नहीं?

●मुन्नू उदास रहने लग गया। बहुत उदास। न हँसता था न खेलता था। बहुत कम खाता : बहुत कम सोता था। जब देखो तब इधर उधर चिन्ता में चूर : घूमा करता था।

●आज वह खेत के उस पार घूम रहा था कि उसके कान में एक गाने की आवाज आई। पता नहीं क्यों : गाना उसे अच्छा लगा। वह उस ओर चल पड़ा। चलता गया। चलता गया।

अरे! यह तो हिरमिया गा रही है !!

मोरे चरखे को टूटे न तार :
चरखवा चालू रहे।
सोने को मेरो चरखा बनेगो।
चाँदी के निकरेंगे तार।
चरखवा चालू रहे॥

●मुन्नू ने भी मन भर गीत सुना। गीत उसे बहुत भाया। और वह उस लड़की के पास आकर बोला : मेरी अच्छी अच्छी दीदी !! यह गाना फिर से गा दो ना? गाना फिर से गाया गया :—

मोरे चरखे को टूटे ना तार :
चरखवा चालू रहे।
सोने को मेरो चरखा बनेगो :
चाँदी के निकरेंगे तार
चरखवा चालू रहे॥

●मुन्नू खिल गया। बोला : दीदी तुम्हारे यहाँ चरखा है? हाँ।

तुम उसे चलाती हो ? हाँ। तुम मुझे भी सिखा सकती हो ? हाँ। क्या मैं सीख सकता हूँ ? हाँ। क्या मैं सीख जाऊँगा ? हाँ।

● 'मेरी अच्छी अच्छी दीदी !' ऐसा कह कर बुन्नू मुन्नू के पास गया। उसके कान में कुछ कहा। मुन्नू उछल पड़ा और दोनों मिलकर हाथ हिला हिला कर, गाने लगे :—

यह भी ना होगा :
कपड़े कम हैं।

यह भी ना होगा :
मन निरधन है।

गाँधी जी की—
जय हो जय हो।
खुद कातेंगे।
खुद ही बुनेंगे।
कपड़ों के—
अम्बार लगेंगे।

× × ×

काम करेंगे।
नाम करेंगे॥

— —

## अध्याय २ :

अपढ़ बालकों और अपढ़ युवकों प्रौढ़ों महिलाओं (गाँववालों) का 'ग्रामशाला' की ओर से किस किस प्रकार का 'ग्रामज्ञान' दिया जा सकता है इसकी एक हलकी सी झलक हमने पहले अध्याय में देखी। अब प्रश्न आता है पढ़े-लिखों का। बहुत काफी और बहुत अच्छे पढ़े लिखों के लिए तो प्रचुर साहित्य उपलब्ध है; छपता जाता है। यह अध्याय (१) प्राय: नहीं लिखने पढ़े हुए : जिन्हें 'नवसाक्षर' भी कहा जाता है : उनके लिये : और (२) थोड़ा और अधिक पढ़े हुए बालक बालिकाओं तथा माता-पिताओं के लिए रक्खा गया है।

बालक के लिये अलग; बड़ों के लिये अलग; बल्कि हर उम्र हर स्थान के बालक-बड़े के लिये अलग-अलग साहित्य सामग्री बने यह पसंद हम सकते हैं पर तुरत संभव नहीं। इसलिये 'सोशियो-बेसिक' ढंग का कुछ ऐसा साहित्य—पाठन सामग्री—आज तुरत बने जो (मोटे मोटे तौर पर कामचलाऊ) गाँव के सभी वर्गों सभी उम्र के लोगों को : 'ग्रामज्ञान' पढ़ने पढ़ाने का अवसर दे पाये : उसकी शुरुआत कर पाये : जरूरी मालूम होता है।

● हमारा निम्न विचार है कि हरशाला में १० इंच चौड़े × १४ इंच लम्बे आकार के, बहुत से 'चार्ट्स' रक्खे जायें। ये आकार में समान हों। उन्हीं विषयों की चर्चा करते हों। फिर भी सरल से सरल कुछ अधिक कुछ और अधिक बढ़ाने वाले वे हों। यानी कुछ बहुत मोटे अक्षरों में रहेंगे कुछ कम मोटे अक्षरों में : कुछ उससे कम : कुछ बहुत ही कम मोटे अक्षरों में। ये चार्ट्स दीवारों पर टाँगकर या जमीन पर बेतरतीब फैलाकर या आलमारी में ढेर बना रख कर" सभी तरह से इस्तेमाल किये जा सकेंगे।

● गाँवों के स्कूलों में 'अधिक ज्ञान' बालक के घर और गाँव के निस्यप्रति के व्यवहारों, कार्यों और उनकी उन्नति की समस्याओं पर आधारित हो पर तो होने ही चाहता है। (१) अच्छी खेती (२) अच्छा उद्योग (३) अच्छा घर और (४) अच्छा गाँव ऐसे चार मोटे-मोटे अंग हम समूचे ग्रामजीवन के बनायें। इस पर भी कोई विशेष मतभेद हमें नजर आता नहीं है। सो इन चारों अंगों को 'ग्रामशाला ग्रामज्ञान' के चार मुख्य विषय मानकर हर विषय पर कुछ कार्ड्स (नमूने के रूप में) प्रस्तुत किये जा रहे हैं। असल में तो हरेक कार्ड १ "×१६ आकार में छपेगा। अधिक मोटे कागजों में अधिक सजे हुए ढंग से। यहाँ तो एक मार्गदर्शक मात्र दे पाने के लक्ष्य से इन्हें पुस्तक रूप में छापा जा रहा है।

जहाँ जो मात्रा या सामग्री समा पाई है उसीमें छाप दिया गया है।

● यह विचार हमें पिछले करीब आठ-दस सालों के विविध प्रयोगों और अभ्यासों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। आपके सबके विचारार्थ सेवा में प्रस्तुत है।

●

● ऐसा कुछ एक एक ब्लॉक भी 'विषय-वार' हर कार्ड के नीचे छपेगा।

• अच्‌छी खेती माने सच्‌ची खेती ।

और सच्‌ची खेती माने अच्‌छी खेती ।

कारन जो सच्‌ची नहीं : वह अच्‌छी नहीं ।

• जो अच्‌छी नहीं : वह सच्‌ची नहीं ।

सत्य शिवं सुन्दरम्

- अच्छी खेती माने वह खेती : जो 'सब तरह' से अच्छी हो।

सब : तरह से : अच्छी।

- रूप में भी : गुन में भी : सुभाव में भी।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

● सच्ची खेती माने भी वह खेती :
जो सब तरफ से सच्ची हो।
सब : तरफ : से : सच्ची।
● ज्ञान से भी : विज्ञान से भी : न्याय से भी।

सत्य शिवं सुन्दरम

- मेंड़ बंधी हो ऊँची चौडी :
- समतल हो पूरा ही खेत ।
- कस के मेहनत : कस के खाद :
- उपजे खूब : सबन के खेत ॥

- सब पर खेत : सबहि पर काम :
- सब मानुप हैं : सब में राम।
- ऐसी रीति : जगत में आये :
- तब खेती : सच्ची कहलाये ॥

ऐसा यह बैल और ऐसा यह किसान :
'अच्छी-खेती' की निशानी नहीं।
यह तो बुरी खेती की निशानी है॥

× × × ×

ऐसे ये किसान और ऐसे ये बैल ही :
'अच्छी-खेती' की 'अच्छाई की परख है।

- यही करे हमारा निरवाह है यही हम करें
- यही हम सुनें : यही हम पढ़ : यही गुनें।

यह देखिये ? ये हैं भाई श्री शंकर गणेश जी :
बम्बई के पास  गाँव 'बारामती' के रहनेवाले ।

● इन्होंने गाँव में अंगूर उगाये : अंगूर : पैदावार ६१५५
● सवा तीन एकड़ में बोया था : फसल हुई २१५२।ऽ

× × × ×

● ऐसी-ऐसी हजार बातें हैं :
● कैसे ? आगे पढ़िये : विस्तार से ।
● मनुष्य क्या नहीं कर सकता है ?
● सब कर सकता है ?

और

समझ लीजिये । अच्छी खेती केवल 'स्वारथ' नहीं : यह तो बड़ा से बड़ा 'परमारथ' भी है : परमारथ ।

● जमीन थोड़ी है : आबादी ज्यादा है । लोग जमीन बटोरने में जुटे पड़े हैं । कोई भूपति है : कोई भूमि हीन : बेजमीन । एक हाहाकार मचा हुआ है । भाई भाई के खून का प्यासा । मारकाट : महाभारत : अत्याचार : अन्याय थाना-कचहरी : बैर भाव ।

● अब यदि : थोड़ी सी भूमि से ही 'इतनी अधिक' पैदावार होने लग जाये : तो भला : कोई भी समझदार आदमी ज्यादा जमीन के मोह में पड़ेगा भी क्यों ?

इस धरती के कन-कन-कन में :
फल फूल भरे धन धान्य भरा।
मधा मिश्री मिष्टान्न भरा।
इस धरती के कन-कन-कन में ॥

इस मानुष के मन-मन मन में
श्रीराम बसे : घनश्याम बसे।
गुण ज्ञान बसे : शुभ काम बसे।
इस मानुष के मन-मन मन-में ॥

× × × × × ×

इस धरती के कन-कन-कन में :
घी दूध दही भंडार भरे।
वस्त्रों के भी अम्बार भरे।
सुख सुविधा के आगार भरे।
इस धरती के कन-कन-कन में ॥

इस मानुष के मन-मन-मन में :
तप त्याग भरा : उपकार भरा।
सब अपने हैं : हम सबके हैं।
मिलकर रहने का भाव भरा।
इस मानुष के मन-मन मन में ॥

टीम ने तो पिछले साल ८८ टन फी हेक्टर तक ( २१८४ मन ) सेब पैदा कर लिये हैं।

● सामूहिक कृषिशालाएँ फलों से मुरब्बा, अचार जेली आदि अनेक चीजें तैयार करती हैं। इससे उनके फलों की कीमत पाँच पाँच गुनी तक हो जाती है। यानी १) के फल से ५) तक की ऐसी चीजें बन जाती हैं।

● सरकार और जनता के सतत सहयोग के फलस्वरूप यहाँ का किसान फल उगाकर सुख से रहने लायक तो हो ही गया है, बल्कि वह नये-नये तजुर्बे भी करने लग गया है।

● 'चकालाव सामूहिक कृषिशाला का 'पारस्केवालिक' नामक फल उगानेवाला किसान उत्तरी शीत प्रदेशों में दक्षिणी किस्म के मिचुरिन सेब पैदा करता है। 'राजा सुरुसेमयग' नामक सामूहिक कृषिशाला के 'निकानव' नामक फल उगानेवाले किसान ने नये किस्म के अंगूर और नये किस्म के सेब पैदा किये हैं। ये नये नये किस्म के फल अब और सब भागों में भी खूब उगने लगे हैं।

● 'कजाख जनतन्त्र में बागबानी के काम का विस्तार बढ़ता जा रहा है। सरकार इस पर काफी बड़ी रकम खर्च कर रही है। जनतन्त्र की मन्त्रि-परिषद् के निश्चय के अनुसार देश के सभी भागों में बागबानी का सप्ताह मनाया जा रहा है। हजारों श्रमिक, स्कूली बच्चे और 'चतुर किसान नये बाग बगीचे तथा अंगूर का बाग लगाने में सक्रिय भाग ले रहे हैं। आगामी साल २,५०० हेक्टर नई भूमि में अंगूर की बारियाँ और बेर के बगीचे लगाये जायेंगे।

●

## 'केलीफोर्निया' का रेगिस्तान भी बाग-बगीचों से भर गया है —

● 'मानो न मानो' बात एकदम सही है कि 'केलीफोर्निया' का रेगिस्तान भी फलों का भंडार हो गया है। जिस इलाके की आबादी सिर्फ १५ हजार थी (कारण पैदावार तो कुछ थी ही नहीं) वहाँ की आबादी आज १५ लाख से भी ऊपर चढ़ गयी है। यानी १०० गुनी से भी ऊपर।

● आबादी के इस बढ़ाव का कारण यह है कि 'केलीफोर्निया' का यह बीहड़ रेगिस्तान आज हर तरह के फल उपजाने लग गया है।

● सन् १८४८ में 'केलीफोर्निया' राज्य में सोने की खानों के मिलने के समाचारों को सुनकर संयुक्तराज्य अमेरिका के पूर्वी किनारे के अनेक लोग सोने की लगन पाकर मालामाल बन जाने की इच्छा से पश्चिमी किनारे की ओर दौड़ पड़े थे। धीरे-धीरे पिछले वर्षों में इस तथ्य को स्पष्ट पहचान लिया है कि 'केलीफोर्निया' का सोना उसकी उपजाऊ भूमि है। वह उसका पूरा पूरा लाभ भी उठा रहे हैं।

● गुरुभाव से ध्यान में आनेवाले मिशन के पुजारियों ने—जो कि सन् [illegible] और १८[illegible] के बीच यहाँ आकर बस चुके थे—इस भाग में अंगूर जैतून नारंगी अंजीर और कुछ रसदार मीठे फल लगाये थे। सन् [illegible] के अन्त तक मिशन वाले निजी उपयोग के लिए और आसपास में रहनेवाले अमेरिकनों के लिए फल उत्पन्न करते रहे।

● सन् १८४८ में, सोने की खदान की जानकारी के बाद दो वर्षों में ही केलीफोर्निया राज्य की आबादी दसगुनी से भी अधिक बढ़ गयी। सन् १८४८ में जो आबादी केवल १५ हजार थी वह सन् १८५० में ९‍ हजार हो गयी और सन् १६  में १० लाख से भी ऊपर बढ़ गयी। आबादी के एकाएक बढ़ जाने से अन्न की कमी पड़ी और उसकी कीमत बढ़ी।

● इसीसे लोग धीरे-धीरे सोने की खदान में काम करना छोड़ कर किसान बन गये। इस तरह यहाँ की आबादी के आर्थिक जीवन के नाटक में कृषि एक प्रधान पात्र बन गयी।

● किन्तु 'केलीफोर्निया के 'फल-उद्योग' में उसकी भारी वृद्धि सन् १९०० के बाद ही हुई। सन् १६ ० में इसका व्यापार बड़े पैमाने पर शुरू हुआ।

● आज 'केलीफोर्निया' के मुख्य धंधों में से एक विशाल फलोत्पादन है। इनके रकबे एक से लेकर हजारों मील छोटे-बड़े आकार में फैले हुए हैं। तरह-तरह के रंगों का, स्वादों और सुगंधियों का मिला-मिलाकर उन्हें इतना अधिक सुधारा गया है और ऐसी नयी-नयी किस्में तैयार की गयी हैं कि वे अपने पूर्वजों का गौरव गाती हैं। आजकल राज्य में १३, ०,००० एकड़ जमीन पर ७०,         टन फल पैदा होते हैं। इससे उत्पादकों की संयुक्त वार्षिक आय ५३,० ,० ० ०० डालर है। (डालर = करीब छह रुपया)।

● फलों में आय की दृष्टि से संतरे नीबू जैसे रसदार फल ही मुख्य हैं। इनसे प्रतिवर्ष २ ०० ००० ० डालर की आय होती है। 'केलीफार्निया के बागों से संतरे नीबू और 'ग्रेपफ्रूट' रोज बाजार भेजे

## ६१५५ अंगूर : एक एकड़ में उपजा है :

● शंकर मगोरा वाले बंबई राज्य जिला पूना के बारामती ग्राम में रहते हैं। उनकी उम्र १७ वर्ष है। अंगूर उगाने में उनकी विशेष रुचि है। चार साल हुए जब उन्होंने पहली बार अपने बाग में अंगूर की बेलें रोपी थीं। पिछले साल उन्होंने एक एकड़ भूमि में २ ५ पल्ला अंगूर पैदा किये हैं (एक पल्ला ३ मन का होता है)। इस लेख में उन्होंने बताया है कि उन्हें इतनी अधिक उपज कैसे प्राप्त हुई।

● 'सच्ची बात यह है कि अभी चार साल पहले तक मैं भी सिर्फ पढ़ा-लिखा था बाबू था। न खेती करता था, न खेती से कोई दिलचस्पी रखता था।

● खेती की देखभाल मेरे पिताजी करते थे। मैं निश्चिन्त था। पिताजी वृद्ध हुए। प्रबन्ध मेरे हाथ में आया और मैंने अच्छी तरह खेती करने का विचार किया।

● मनुष्य क्या नहीं कर सकता? मैंने 'अच्छी खेती' का ज्ञान-संग्रह करने के विचार से चतुर किसानों के यहाँ तथा अच्छे अनुसंधान संस्था का भ्रमण किया अध्ययन किया। मुझे लगा कि खेती भी अच्छा खासा धन्धा हो सकता है। इसमें बहुत करने की आगे बढ़ने की बहुत बड़ी गुंजाइश है। मुझे अच्छी खेती का चस्का-सा लग गया।

● गाँव-गाँव अंगूर उगाये जाते देखा मुझे शौक हुआ।

• मेरी मेहनत और भगवान् के आशीर्वाद से प्रति एकड़ २ ५ पल्ला यानी ६१५ मन अंगूर प्राप्त हुआ। अंगूर काफी अच्छा था।

• मैं नहीं जानता कि जितनी खाद मैंने दी है, वह सबकी सब जरूरी थी या सबकी सब इसी साल काम आ गयी है। पर अधिक खाद खेत में रहे, यह बेजा मुझे लगा नहीं। मेरा ख्याल है कि अगले साल कम खाद से भी इतनी ही उपज हो पायेगी।

• अंगूर उगानेवाले विभिन्न किसानों से बातचीत करके मैंने पता लगाया कि वे कौनसे तरीके काम में लाते हैं। मैंने सुना था कि श्री मानिकचंद नानकचंद दोशी ने प्रति एकड़ १५० पल्ला तक अंगूर पैदा किये हैं। मैं यह जानने के लिए उनके पास गया। पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद मैंने ३॥ एकड़ भूमि में प्रति एकड़ १८०० के हिसाब से बेलें रोपीं। कतारों के बीच मैंने ८ फुट का और बेलों के बीच ३ फुट का अन्तर रखा। मैंने 'भोकरी' किस्म काम में ली। इससे अच्छी उपज प्राप्त होती है। बेलों को मैंने तारों के सहारे फैलाया।

• पहले साल प्रति एकड़ केवल ७५ पल्ला उपज हुई। दूसरे साल १२५ पल्ला। तीसरे साल मौसम खराब रहा और उपज घट कर ११ पल्ला रह गयी। लेकिन पिछले वर्ष मुझे प्रति एकड़ २०५ पल्ला उपज प्राप्त हुई है। आप जानना चाहेंगे कि इतनी अधिक उपज प्राप्त करने के लिए मैंने क्या-क्या किया था —

(१) अप्रैल में बेलों की छँटाई के समय मैंने बेलों से एक-एक फुट दूर ६ इंच गहरी नालियाँ खोदीं।

( २ ) इन नालियों में मैंने ६ गाड़ी मैंगनी ( भेड़-बकरी की लीद ) खाद २४ मन मूँगफली की खली, २२४ पौंड अमोनियम सल्फेट और ८९६ पौंड 'एकस सुपरफास्फेट' डाला था।

( ३ ) इसके बाद मैंने नालियों को मिट्टी से भर दिया। प्रति दस दिन के बाद मैं बेलों की सिंचाई करता था। बरसात के दिनों में मैं सिंचाई तभी करता था जब आवश्यकता होती थी।

( ४ ) एक महीने बाद मैंने १२ मन मूँगफली की खली और डाली। अगले महीने भी इतनी ही खली फिर डाली।

( ५ ) बेलों को रोगों से बचाये रखने के लिए भी मैंने उपाय किये। प्रति १५ दिन बाद मैं 'बोर्डो मिश्रण' और 'सिरसुल ( घुलनशील गंधक ) का छिड़काव करता था। इन दवाओं का छिड़काव मैंने छह बार किया। बेलों पर आक्रमण करनेवाले भृंगों को मारने के लिए मैंने एक बार अप्रैल में और एक बार अक्तूबर में, जब बेलों की छँटाई होती है, गैमरोक्स ५५० भी छिड़का था।

( ६ ) अक्तूबर में छँटाई करने से पहले मैंने १० गाड़ी गोबर घूरे की खाद डाली। खाद को मिट्टी में मिलाने के लिए गुड़ाई की।

( ७ ) पहले की तरह बेलों के पास मैंने फिर नालियाँ खोदीं और उनमें २४ मन मूँगफली की खली + २२४ पौंड अमोनियम सल्फेट और ८९६ पौंड एकस सुपरफास्फेट डाला।

( ८ ) बेलों में फूल आने के डेढ़ महीने बाद मैंने १२ मन मूँगफली की खली और ४४८ पौंड 'पोटेशियम सल्फेट' फिर डाला।

( ९ ) खरपतवार नष्ट करने के लिए मैंने बाग में आठ बार निराई गुड़ाई की।

(१०) अक्तूबर में छँटाई के बाद मैंने आठ बार बार्डो मिश्रण और सिरसुल छिड़का।

(११) अब फल लगने का समय आया। फलों के भार से डालें झुकने लगीं। उन्हें ठीक रखने के लिए मैंने बाँसों का सहारा दिया।

(१२) गहन कृषि करके पर्याप्त खाद देकर और रोग तथा कीड़ों से फसल को बचाकर मैंने अधिक उपज प्राप्त की है।

---

• अंगूर उगानेवाले किसानों को थोड़ी उपज से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। उन्हें अधिक उपज प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि वे उन्नत तरीके अपनायें, तो हो सकता है कि वे मेरी उपज से भी अधिक उपज प्राप्त कर सकें।

• मेरा एक और भी सुझाव है। किसानों को अन्य प्रगतिशील किसानों से मिलना चाहिए। उनसे वे खेती-बाड़ी के बारे में बहुत कुछ सीख सकेंगे यह मेरा अनुभव है।

जयभारत जयहिन्द धरतीमाता की जय

— ❀ —

○

## किसान की कहानी अपनी जबानी

● माना न माना बात एकदम सही है कि एक एक एकड़ भूमि में चार-चार हजार रुपय का 'आलू' उगाया जा सकता है। (१०) ५ ५। लाभ ना कमाये।

● इलाहाबाद जिले के एक चतुर किसान—भाई श्री सिनहा जी ने तजुर्बा करके देख लिया है कि ५ मन तक 'आलू' उपजाया जा सकता है। हर एक एकड़ भूमि में। वे इसका पूरा हाल इस प्रकार लिखते हैं —

(१) मैंने आलू ऐसे खेत में बोया जिसकी मिट्टी 'दुमट' थी। सिंचाई के लिए कुआँ करीब था। खेत मेरे निवासस्थान के पास था।

(२) गोबर की खाद सड़ा खाद जानवरों के नीचे की माटी व 'म्युनिसिपल सम्भार (शहरी खाद) ४ गाड़ी प्रति एकड़ डाली थी। इसका कुछ भाग बरसात के १ माह पहले खेत में डालकर कई मरतबा गहरी जुताई की थी। बरसात शुरू होते ही सनई (यानी सन) बोयी थी। ७–८ हफ्ते बाद उसे मिट्टी में जोत दिया था। अगस्त के आखिर तक वह खूब सड़कर मिट्टी में मिल गयी थी। फिर हड्डिया का खाद (कम-से-कम ५ मन प्रति एकड़) डालकर कई बार जुताई की और वर्षा के बाद बाकी खाद भी खेत में डालकर जुताई की गयी था।

(३) सितम्बर के महीने में खेत की जुताई दोपहर से शाम तक की

और दूसरे रोज सुबह (सूरज निकलने के पहले) पाटा चला दिया ताकि ओस की नमी खेत में बनी रहे। ऐसी जुताई जहाँ तक बन पड़ी, कई मरतबा की।

(४) अक्तूबर में जब आसमान साफ दीखा और वर्षा की सम्भावना नहीं रही आलू बोया। आलू बोने के ठीक पहले खेती में १५ मन पक्का रेंडी की खली बारीक करके डाली। बीज अच्छी जाति का, हर प्रकार के रोगों से रहित व सवा इंच मोटा था। आलू ४ इंच गहरी नालियों में ८-६ इंच के फासले पर बोया था। एक लाइन से दूसरी लाइन का फासला २०-२ इंच रहता था।

(५) अगर बोते समय मौसम ऐसा दीखा कि वर्षा बिलकुल न होगी या कम-से-कम २ हफ्ते तक होने की सम्भावना न हुई, तो लाइनों को मिट्टी से ढँककर जमीन को बराबर कर दिया। अगर खेत की मिट्टी में नमी काफी न हुई या जल्द ही वर्षा की सम्भावना हुई तो ४-५ इंच ऊँची मेड़ें लाइनों पर बनायीं। २ हफ्ते बाद अगर जमवन न हुइ या कम हुई तो हल्का पानी देने से तीन हफ्ते के अन्दर जमवन बराबर हो गयी।

(६) चौथे हफ्ते के करीब खेतों में फिर पानी दिया। इसके पश्चात् जब कि पानी सूख गया पर मिट्टी काफी मुलायम रही और पौधे ५-६ इंच ऊँचे हो गये तो निराई करके मिट्टी चढ़ायी। मिट्टी चढ़ाते वक्त पौधों की जड़ों के करीब व आस-पास की मिट्टी में १५ मन (प्रति पक्का) रेंडी की बारीक खली व पाँच मन अमोनिया फास्फेट या सुपर फास्फेट डाली।

(७) आलू की मेड़ें पौधे की ऊँचाई के लिहाज से जितनी ऊँची

मन सकी बनायीं। मिट्टी चढ़ाने के बाद तुरन्त खेत को सींचा। सिंचाई का सिलसिला अन्तिम समय तक इसवावार जारी रखा। पानी मेड़ों के बीच की नाली में ३–४ इंच से अधिक ऊँचा नहीं होने दिया। अगर नपा हो गयी तो जिस समय तक मिट्टी काफी सूख न गयी, सिंचाई की कारवाई को रोके रखा। अगर मिट्टी चढ़ाने के १५–२ रोज बाद यह मालूम हुआ कि आलू के पौधे ज्यादा ऊँचे होते आ रहे हैं और उनकी ऊँचाई के लिहाज से मेड़ें कम ऊँची तथा चौड़ी हैं, तो आलू की मेड़ों के बीच की मिट्टी उलट दी।

● इस तरह की अनेक विधियाँ हैं, जो आलू की उपज को बढ़ाने में सहायक हो जाती हैं। सवाल इन खास बातों के परखने का ही नहीं है। किसान को बुद्धि से काम लेने की जरूरत है। किसान अगर तय कर ले कि उस फसल बीज की उपज बढ़ानी है, तो कुछ साल में ही उपज को कई गुना बढ़ा ले जा सकता है।

● ऐसी ही तरह-तरह की विधियों का मेल मिला के और किसानों ने ७/६ मन तक आलू (एक एकड़ भूमि में) पैदा कर लिया है। यह [illegible] मन तक हो जा सकेगा ऐसा हमारा पक्का भरोसा है।

● आलू की फसल लेने के लिए गेहूँ चने और धान के खेतों का उपयोग किया गया तो अन्न की कमी पड़ जा सकती है, ऐसा विचार मन में आ सकता है।

● उसके लिए भी एक हल हमारे सामने आ रहा है कि गेहूँ के खेत में ही गेहूँ के साथ-साथ आलू भी उगा लिया जाय।

● बरसात पड़ने का मौसम न [illegible] या ली जायें। [illegible] दिन में पार

मूँग फली दे जायेगी। मूँग की फलियाँ तोड़कर पौध को खेत में जोत दिया जाय। सितम्बर में आलू बो दिया जाय। आलू की निराई गुड़ाई नवम्बर आखिर तक खतम हो जाती है। तब आलू की दो मेड़ों के बीच में गेहूँ बो दिया जाय। थोड़े दिनों में आलू खोद लिया जाता है और आलू की मेड़ की जगह गेहूँ को मिल जाता है। उपज बढ़ जाती है।

● इसके मानी हो गये कि किसान गेहूँ के एक फसली खेत से तीन-तीन फसलें भी प्राप्त कर सकता है। आलू की फसल साथ में ही प्राप्त की जा सकती है।

● अगर मूँग और गेहूँ के बीच बोया गया आलू ४० मन फी एकड़ भी हो गया तो २० ) फी एकड़ नकद आमदनी किसान को हो जाती है। उन दिनों आलू काफी महँगा भी बिकता है।

● आलू केवल 'खेती' ही नहीं है, यह उद्योग भी है। फसल में आलू सस्ता बिकता है। महीना भर बाद सवाये दामों में दो महीने बाद ड्योढ़े दामों में और तीसरे महीने दुगुने से भी ऊपर।

● तीन महीने आलू को सुरक्षित रखने का उद्योग गाँव-गाँव हो सकता है। गाँववालों का एक नया धंधा है। १० ) के बजाय २० ) का माल हो जायेगा। गाँव मालामाल हो जायगा। जो पैसा आज गाँव से बाहर जाता है, कल नहीं जायगा।

●

## बिना हिसाब अब काम चलनेवाला नहीं

● अभी कुछ दिनों पहले तक पानी के जहाज बड़े धक्के खाते थे। बहुत नुकसान उठाते थे। बरबाद हो जाते थे। जाना कहीं चाहते थे पहुँच कहीं जाते थे। कारण उन दिनों चलमें 'दिशासूचक' यंत्र कुतुबनुमा' नहीं हुआ करता था।

● वही बात आज हमारी खेती के जहाज की भी है। न हिसाब, न किताब। पता नहीं कब क्या हो जाता है। पता नहीं कब क्या हो जाता है।

● अब अगर खेती को अच्छे और सच्चे ढंग से करना है, तो उसका भी हिसाब पूरा-पूरा हिसाब होना ही चाहिए। और होना चाहिए हर किसान के हर धंधे का हिसाब-किताब में होशियार बहुत काफी बहुत ज्यादा। वरना काम चलेगा कैसे ?? नहीं चल पायगा।

● मान लिया कि हम अपने किसी एक एकड़ के टुकड़े में 'बढ़िया' बाग लगाना चाहते हैं

● तो पहले तो हमें यह मालूम होना चाहिए कि एक एकड़ की नाप क्या है वह कितना लम्बा कितना चौड़ा होता है ?? अन्दाज से सब जानते हैं पर पूछ आइये गाँव भर से ठीक हिसाब शायद ही कोई बता पाये

● एकड़ की कोई निश्चित लम्बाई-चौड़ाई होती नहीं। वह केवल ४८४० वर्गगज=४३५६० वर्गफुट क्षेत्रफल का होता है

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो एक एकड़ का खेत | १०० गज | लम्बा है | वह | ४८·४ गज | चौड़ा है। |
| जो | ६० ,, | ,, | ,, | ८०·६६६ ,, | ,, |
| जो | ५०० फुट | ,, | ,, | ८७·१२ फुट | चौड़ा है |
| | ४०० ,, | ,, | ,, | १०८·९ ,, | ,, |
| | ३०० ,, | | ,, | १४५·२ ,, | ,, |
| | २०० ,, | ,, | ,, | २१७·८ ,, | ,, |
| | १०० | | | ४३५·६ ,, | ,, |
| | ६० ,, | ,, | ,, | ७२६ | |
| | ५० ,, | ,, | ,, | ८७१·२ | ,, |
| | ४० ,, | ,, | | १०८९ | |
| और जो करीब | २०८·७ ,, | ,, | | वह करीब उतना ही चौड़ा। | |

● फिर कौन पेड़ कितनी दूरी पर लगाया जाय इसका भी एक हिसाब है। बहुत ही अनुभवी और ज्ञानी-विज्ञानी कृषि-विज्ञानों द्वारा बनाया हुआ :—

| | |
|---|---|
| ( १ ) फालसा | ५ फीट |
| ( २ ) पपीता | १० |
| ( ३ ) अंजीर | १२ |
| ( ४ ) अमरूद | १५ |
| ( ५ ) कटहल | २० |
| ( ६ ) तुरशावा | २ |
| ( ७ ) आड़ू | २० |

यहाँ हर एकड़ खेत में १०० १०×३ =३००३ टन = ३००३×२८ =८४०८४) पानी पड़ता है।

● क्या आपको या आपके इस गाँव में किसीको भी ठीक-ठीक मालूम है कि इस जिले इस इलाके में आम तौर पर कै इंच वर्षा हर साल होती है? और यदि यह भी हमें मालूम नहीं, हमारे इस गाँव-बाजार में किसीको भी मालूम नहीं है, तब भला खेती का सुधार हो कैसे सकता है? ... ... कैसे?

रहिमन पानी राखिये,
बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबर,
मोती मानुष चून।

●

● पेड़ पत्ती की शक्ल देखकर बताया जा सकता है कि उस पेड़ की जड़ में जमीन में : किस 'रसायनिक तत्व' की कमी है —

| | |
|---|---|
| पत्तियाँ पीली हों कमजोर हों | 'नाइट्रोजन' कम है। |
| पत्तियों पर भूरापन हो | 'पोटाश' या 'फासफेट' कम है। |
| अधिक लम्बी घनी गहरे हरे रंग की पत्तियाँ | नाइट्रोजन' अधिक। |
| फटी हुई पत्तियाँ | 'चूना' अधिक। |
| पत्तियाँ घुरमुरा जाती हों | तेजाबी मिट्टी है : चूना देना है। |
| धब्बेदार पत्तियाँ | 'पोटाश' कम है। |
| लम्बे पतले पेड़ : | प्रकाश नहीं है या घने हैं। |
| गहरा लाल सेब | 'नाइट्रोजन' कम है। |
| धब्बेदार टमाटर | 'पोटाश' कम है। |
| चटके हुए टमाटर | 'नाइट्रोजन' कम है। |
| देर से [illegible] हो | पानी ज्यादा है या 'नाइट्रोजन ज्यादा है। या 'फासफेट' कम है। |
| फसल में असफल हो तो | 'पोटाश' नहीं है। |
| जड़ छोटी रह जाय | तेजाबी मिट्टी है। या पानी का निकास नहीं। |

● इसके माने तो यह हो गया कि 'अच्छी-खेती' करने के लिए रसायन शास्त्र और 'विज्ञान शास्त्र' की भी काफी अच्छी जानकारी होना अनिवार्य प्रमाणित होता है ?

●इतना ही नहीं वही बीज वही खाद डाले हुए भी तरह तरह की जमीनों में और अलग अलग इलाकों में बोने के कारन : इन फलों, तरकारियों घासों के गुण-कर्म-स्वभाव में पाचकता में बहुत-बहुत अन्तर आ जाता है और यह अन्तर पड़ता है इन प्रकार-प्रकार की जमीनों में विद्यमान अलग-अलग परिमाण के 'रासायनिक—तत्वों' से —

●अमेरिका में 'रेड क्लोवर' नाम की घास की फसल तरह तरह की मिट्टियों में उगाई गई थी। पता चला कि जब यह फसल एक तरह की मिट्टी ( मार्शी सॉयल ) में उगाई गई तो उसमें 'कैल्शियम' 'फोसफारस' 'सल्फर' तीनों चीजें बहुत-बहुत अधिक थीं : मुकाबले उस फसल के जो दूसरे इलाके की दूसरी मिट्टी ( लोमी सॉयल ) में उगाई जाती है।

●फिर जिन पशुओं को पहली घास खिलाई गई व अधिक स्वस्थ व शक्तिशाली थे : मुकाबले दूसरी घास के खिलाये हुए पशुओं के। कारन 'कैलशियम, फारफोरस, सल्फर' पशु के शरीर विकास के लिये बेहद जरूरी होते हैं।

●यदि पशु के आहार में 'कैल्शियम' कम है तो उसके दूध में भी 'कैलशियम' की कमी रहनी ही माली है और बालक के दांत निकलने में दिक्कत होना तथा उसकी हड्डी

कमज़ोर रहना, उसके शरीर में खून की हमेशा कमी रहना — अगला नतीजा हो जायगा।

● यह सब ज्ञान बिना, यह सब परखे बिना : खेती को अच्छी रसना बनाया ही कैसे जा सकता है ? नहीं बनाया जा सकता है।

× × ×

● फिर यह भी पता लगाया गया है कि कहाँ कहाँ की मिट्टी में किस किस तत्व की कितनी मात्रा पाई जाती है। इस मात्रा के कमोबेश होने से फसल पर क्या खास असर पड़ता है। पूर्ति कैसे की जाय या कौन फसल लेना ज्यादा हितकर रहने वाला है —

— आयोडीन : जिससे टिंचर आयोडीन बनता है, जो फोड़े फुन्सियों पर, घाव पर लगाया जाता है, बहुत-बहुत थोड़े परिमाण में मिट्टी में विद्यमान रहता है। पर इसका प्रभाव फसल पर बहुत गहरा पड़ता है। इतना ही नहीं, आदमी और पशु अगर दोनों के शरीर निर्माण में 'आयोडीन' की छोटी सी मात्रा बहुत-बहुत असर डालता है।

[illegible] नाम का रसायनिक तत्त्व फसली की भरपाई-बुवाई पर [illegible] असर डालता है। इसकी थोड़ी भी मात्रा अधिक [illegible] के [illegible] बड़े-बड़े रोग लग जाते हैं।

● यह [illegible] के बारे में मालूम कर ली गयी है। दुनिया [illegible] का अध्ययन करने के बराबर प्रयास किए हैं। [illegible] स्थापित करने का पत्र-व्यवहार करने

उनके अनुभवों का अध्ययन करने का। हम नकल किसी की करें नहीं। नकल करने से स्थायी लाभ कभी होता नहीं है। पर 'कूपमंडूक' रहना भी, दूसरी बड़ी भूल होती है।

●प्रश्न यह है कि ये 'रसायनिक-तत्त्व' कितने होते हैं, ये हैं क्या? इनके गुण-कर्म-स्वभाव क्या हैं? और, क्या हमारे गाँवों का हर किसान, हर किसान-लड़का इनकी काफी अच्छी जानकारी, सहज ढंग से प्राप्त कर सकता है?

?—'वर्णमाला' तो हम जानते ही हैं, क ख ग घ ङ। A B C D। या अलिफ बे पे। हम यह भी जानते हैं कि हर भाषा में, थोड़े से 'अक्षर' होते हैं: जिनके तरह-तरह के मेल से: शब्द, वाक्य, गीत, बड़े-बड़े ग्रन्थ, बड़े-बड़े पुस्तकालय बना लिए जाते हैं। यही बात इन रसायनिक तत्त्वों की भी है। इस एक प्रकार की वर्णमाला ही कहा जा सकता है। जैसे अक्षर। इनकी संख्या करीब १०० है। समय-समय पर नये-नये नाम भी धरते-बदल रहते हैं। हरेक का पूरा नाम भी है, हरेक का छोटा नाम भी है। जैसे 'नाइट्रोजन' का छोटा नाम रख लिया गया है N। 'पोटाश' का K। 'फासफोरस' P। इन छोटे नामों से बड़ी सहूलियत हो जाती है।

●इन्हीं तत्त्वों के तरह-तरह के मेल से तरह-तरह के पदार्थ, तरह-तरह की दवाइयाँ, तरह-तरह की मिट्टियाँ यह समूचा जगत बना पड़ा है।

●जिस तरह 'वर्णमाला' के सीखे बिना पढ़ाई-लिखाई का काम शुरू किया नहीं जा सकता है, जिस तरह गिनती के अंक जाने बिना जोड़ बाकी गुणा भाग बीजगणित सीखा नहीं जा सकता है, उसी

प्रकार 'अच्छी-खेती' और 'सच्ची-खेती' सीखने सिखाने, करवाने के वास्ते 'रसायन शास्त्र' व उसके ये 'तत्त्व' इनके ये नाम इनके गुण कर्म स्वभाव इनके काम : गाँव-जीवन में आने ही चाहिये गाँव वालों पर विदित होने ही चाहिए।

जगमगा जायगा जग सारा :

जब जब आयेंगे गाँव गाँव।

× × ×

जब जग का सब विज्ञान ज्ञान

गाँवों में खेत कुदाली में

पाकर प्रवेश गोपाल बनें।

गोकुल बन जावें ठाँव ठाँव।

× × ×

सब जग आयेंगे गाँव गाँव।

जगमगा जावेगा जग सारा ॥

● अच्छी खेती के माने सच्ची खेती के भी हैं यह हमने शुरू में ही मान लिया है। 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का यही एक अर्थ है। जो सत्य नहीं वह शिव नहीं। जो सच्चा नहीं वह अच्छा नहीं। जो अच्छा नहीं वह सच्चा नहीं।

● पिछले अध्यायों में हमने बिना गणित की खेती को अन्धों का व्यापार कहा है। यानी गणित का ज्ञान बढ़ाये बिना और बाकायदा हिसाब लेखा रक्खे बिना' खेती करना गलत है। अच्छी खेती करने के लिये इस 'गलती' का निराकरण करना अनिवार्य है। इसी प्रकार, माटी माटी में फर्क होता है। फर्क होता है उसके रसायनिक तत्त्वों के परिमाण का। बिना आयोडीन या कम 'आयोडीन वाली मिट्टी की फसल से, पशु और इंसान दोनों रोगों के शिकार हो जाते हैं। या इनका ज्ञान समझे, परख बिना खेती करते रहना 'ठीक नहीं'। 'गलत' है।

● इसी प्रकार आगे चलकर और अनेक बातें भी हमारे सामने आने वाली हैं: जिन्हें समझे-बूझे किये बिना खेती न अच्छी हो सकती है: न सच्ची हो सकती है। मेड़ बाँधना भी इनमें से एक है। मक्का या धान के बाद गेहूँ या जौ न बोकर 'चना या मटर या बरसीम बोना ही 'ठीक' है। खेत का ढालदार होना भी 'गलत' है उसे या तो समतल कर लेना चाहिये या सीढ़ीदार बना लेना ठीक है। ऐसे-ऐसे अनेक 'सत्य' अब हमारे सामने आनेवाले हैं।

● इन्हीं सब सत्यों की तरह एक सत्य यह भी है कि हमें खेती

करने का यही ढंग अपनाना चाहिये उतनी ही भूमि में खेती हम करें। जिससे गाँव समाज के सब भाग जिंदा रह सकें। सबको काम मिले। हमें मालूम होना चाहिये कि 'पड़ोसी' को दुखी रखके कभी कोई सुखी हुआ नहीं। हमें मालूम होना चाहिये कि 'समाजवादी-सामाजिक-व्यवस्था' हमारे अपने इस देश की होनी है यह हमारा राष्ट्रीय निश्चय है। और 'समाजवादी-सामाजिक-व्यवस्था' का मूलाधार है सबका रोजगार। उत्पादन के साधनों पर सबका समान अधिकार।

● जमीन बढ़ाने की हविस हमारे मनों में बुरी तरह समा गयी है। व्यसन की तरह वह हमारे मनमानस पर हावी हो गई है। भाई भाई का शत्रु हो गया है। भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया है इसी जर-जमीन के मामले में। रोज थाना कचहरी। रिश्वत जी-हुजूरी। पैसा आता नहीं। चला जाता है। सुख बढ़ता नहीं घट जाता है। हालत बहुत-बहुत खराब हो गई है। कोई इलाज इससे बचने का नजर आ नहीं रहा था। हैदराबाद और बलिया (उत्तर प्रदेश) तरफ के इलाकों में, इसी जमीन की खातिर बेजमीन लोगों ने जमीनवालों को जान से मार डालना भी शुरू कर दिया था। मरता क्या न करता?

● ऐसे ही समय के लिये। गीता में। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधन करते हुए मानवता को भरोसा दिया था कि :—

विनोबाजी

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥
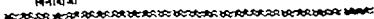
• सो यह देखिये ! यह संत विनोबा प्रभु की प्रेरणा से जमीन वालों से जमीन माँग-माँग कर बेजमीनों में बाँट रहा है। ४५ ०० ००० एकड़ जमीन वह पा चुका है। वेजमीन गरीबों में पहुँचा चुका है। इतना ही नहीं अब तो उसका कहना है "जमीन का मालिक कोई न रहेगा कोई न रहेगा।" सब जमीन सबकी होगी। और करीब ८०० गाँवों में यह हो भी गया है। वहाँ के सब लोग मिल के विनोबा के पास आये और बोले हमारी सारी जमीन सबकी है।

• बात की शुरुआत इस प्रकार हुई कि : शिवराम पल्ली नामक स्थान पर एक सम्मेलन हुआ—सर्वोदय सम्मेलन। विनोबा भी वहाँ गये। उन्हीं दिनों हैदराबाद राज्य के 'तैलंगाना नामक क्षेत्र में 'कम्यूनिस्टों' ने बड़ा आतंक मचा रक्खा था। बेजमीन लोगों को सगठित करके जमीन वालों को लूटने मारने और शासन का बलन चला दिया था। सरकारी फ़ौजें भी पहुँच चुकी थीं। पर आग बुझ नहीं पा रही थी। यह सब बात विनोबा जी को भी बताई गई। वे सोचने लगे क्या इसका कोई 'सत्यं शिवं सुन्दरम् हल नहीं निकाला जा सकता है? वे पैदल चल पड़े उसी ओर। सुबह शाम प्रार्थना करते। हजारों नर-नारी आते। विनोबा जी पूछते—भाइयों तुम्हीं बताओ कि इस समस्या का हल क्या है ?

• १८ अप्रेल १९५४ की बात है कि 'पोचम-पल्ली नाम के गाँव में बाबा (विनोबा जी का सम्मानित नाम) प्रार्थना कर रहे थे। लोग बोल उठे हमें जमीन मिलनी चाहिए हमें जमीन मिलनी चाहिए हमारे भी पेट हैं हमें भी भूख लगती है : हम काम कर सकते हैं हमें काम मिलना चाहिए।

घर घोष बना पायेगा। एक तो 'ग्राम कोऑपरेटिव' और 'ग्राम-पंचायतों' के उचित विकास के फलस्वरूप तथा 'ग्रामदान' और 'ग्रामशाला' के अधिकाधिक विकास और विस्तार की बदौलत भी, गाँव गाँव घर-घर में पुस्तकालय वाचनालय बनने ही वाले हैं। गाँव के बहुत-से चतुर युवक और प्रौढ़ भी, पढ़-पढ़कर सार निकालनेवाले हैं। वह सब भी शिक्षक के काम में बहुत अधिक मदद कर पायेंगे : ऐसा हमारा भरोसा है।

● आज तो केवल बहुत छोटी-सी शुरुआत हम आप कर रहे हैं। जो एक पत्र 'टूटा-फूटा' यह पिछले पन्नों में दिया गया है। यहाँ हम एक सूची दे देना चाहते हैं : उस सरल साहित्य की : जो विभिन्न संस्थाओं ने काफी अच्छा बना लिया है। पूर्ण तो केवल परमात्मा है : एकदम सही स्वरूप ग्रामदान का कम-से-कम आज तो बनाना दुष्कर ही है। हाँ इस सूची का साहित्य खेती को अच्छी खेती बनाने की जानकारी देने का काफी सुन्दर प्रयास करता है। सूची भी सब तरह से सम्पूर्ण बनायी नहीं गयी है। केवल कुछ साहित्य ही हमारे सामने आ सका है। जो हमें अपने विचार के काफी समीप लगा है : उसीका परिचय यहाँ दिया जा रहा है :—

*१ विकास अन्वेषणालय : लखनऊ एक आना प्रति पुस्तिका।*

| | | |
|---|---|---|
| टमाटर | पपीता | सब्जी क्यों खायें |
| बरसीम | केला | फल क्यों खायें |
| मक्का | नीबू | धान-गन्धी |
| धान | नारंगी | बरसाती तरकारियाँ |
| गेहूँ | भिण्डी | गुलाब का पौधा |
| चना | आलू | तरकारियों से बीज निकालना |

कपास गाजर हरी खाद
गन्ना मूली गोबर की खाद
मटर लौकी मल-मूत्र की खाद
मिर्चा आम रासायनिक खादें
प्याज नीम पेड़ लगाओ"""" आदि आदि।

● ये सभी पुस्तकें ग्राम-युवकों के लिए सरल सुबोध भाषा में लिखी गयी हैं। हर पोथी करीब १६ पन्ना की है। सुघर सुरुचि छपाई है। ध्यान-पूर्वक सस्ते दामों में निकाली गयी हैं। रोचक भी हैं। सहज बोध्य हैं। विशेषज्ञों और अनुभवी व्यक्तियों द्वारा ही लिखायी गयी हैं।

२ वस्तु निर्माण विभाग कृषि महाविद्यालय इलाहाबाद

गरमियों की जुताई पपीते लगाना
हरी खाद आम की खेती
हरे चारे की खेती नींबू की खेती
हरे चारे का अचार कूड़ा-करकट की खाद
बगीचा लगाना कतार में बोना" " आदि आदि

● ये पुस्तकें भी सरल सुबोध भाषा में हैं। विशेषज्ञों द्वारा ही लिखी गयी हैं। [illegible] विषय की अपनी व्यापक जानकारी इनमें दी गयी है।

३ कृषि सूचना शाखा उत्तर प्रदेश लखनऊ

इनका साहित्य बहुत है बहुत प्रकार का है। सरल से सरल

कठिन-से-कठिन। पैसा-दो पैसा के 'फोल्डर' भी हैं ज्ञान-से ज्ञान की पोथियाँ भी हैं और उससे आगे भी। हर प्रकार का।

४ ग्राम भारती प्रकाशन : गोंडा : यू पी

इनका साहित्य भी बहुत है बहुत प्रकार का है। सरल-सुबोध। इनके पास करीब १०० पैसे मोल-पत्र हैं जिनका नाम इन्होंने 'परमहंस' रखा है जो मोटे-मोटे रंगीन अक्षरों में गीतों में भी। ग्रामजीवन को उन्नत करने की प्रेरणा व दृष्टि देते हैं। २ ×३० बड़ा आकार है। 'ग्रामगीत पुस्तकमाला' के भी करीब ४० अंक हैं। सरल भाषा में।

५. राजकीय मनोविज्ञान केन्द्र : इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश शिक्षा-विभाग की ओर से भी एक अच्छा-सा प्रयास किया गया है बेसिक स्कूलों के हर वर्ग में किस-किस महीने क्या क्या काम किया जाये : उसका विस्तार बनाने का और हर काम के साथ क्या-क्या ज्ञान बालक को दिया जा सकता है इसकी भी रूप-रेखा प्रस्तुत करने का। 'उत्तर प्रदेश के बेसिक स्कूलों की प्रारम्भिक कक्षाओं का विस्तृत पाठ्यक्रम' यह पुस्तिका का नाम है। पुस्तक बिक्री के लिए नहीं बनायी गयी है इसलिये मिलने में कठिनाई है।

× × × ×

● तलाश करने पर हर प्रदेश के कृषि-विभाग ग्राम विकास विभाग बेसिक शिक्षा और समाज शिक्षा विभाग तथा अनेकानेक प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित……सरल-सुबोध व्यावहारिक दृष्टि से लिखा गया साहित्य 'ग्रामज्ञान' काफी बड़ी मात्रा में संग्रह किया जा सकता है।

- अच्छा उद्योग : माने भी सच्चा उद्योग :

और सच्चा उद्योग : माने भी अच्छा उद्योग।

- जो सच्चा नहीं : वह अच्छा हो नहीं सकेगा।

और जो अच्छा नहीं : वह सच्चा किस अरथ का?

सत्यं शिवं सुन्दरम्

- अच्छा उद्योग : माने सब तरह से अच्छा।
- सब बातों पर : शांती के साथ विचार करके :
- न किसी की नकल : न किसी की झक्क।
- खूब अधिक चीजें बनें : सरलता के साथ ॥

सत्यं शिवं सुन्दरम्

• सच्चा उद्योग : माने सब तरह से सच्चा।

• धरम करम ईमान भाईचारा और न्याय।

व ज्ञान विज्ञान कला, कौशल, मन के राजा :

इन, सभी तरह से सोच के:विचार के : तोल के॥

सत्यं शिवं सुन्दरम्

गीत

- बिन उद्यम मानव मर जावे ।
- बिन उद्यम कछु रह नहिं जावे ।

- उद्यम करे सो सब फल पावे ।
- धरती पर अमरत झर जावे ॥
- बिन उद्यम मानव मर जावे ॥

काम

बेकाम

● खेती का धंधा एक ऐसा धंधा है कि कुछ दिनों बहुत अधिक काम : कुछ दिनों कुछ भी काम नहीं। खेती अकेली से निरवाह चलता नहीं है। चल नहीं पायेगा। कभी भी नहीं।

● तब सवाल है कि किया क्या जाय : (१) ना हम गाँव उजाड़ना चाहते हैं (२) ना खेती छोड़ना चाहते हैं : और (३) ना खेतिहर को सड़ा-गला रहने देना चाहते हैं। (४) उसका खेती अकेली से काम चलता नहीं : चलने वाला नहीं।

● संतन की बलिहारी भाई : गांधी जी तो महात्मा थे— महात्मा! उनकी आत्मा ने कहा "गाँव गाँव 'ग्राम-उद्योग' चलाये जायँ। ग्राम-उद्योग।" वही हमें अब करना है।

● तो क्या ये बड़े-बड़े उद्योग कल-कारखाने बड़ी-बड़ी मशीनें एक दम उठा दिये जायेंगे? रह नहीं जायेंगे?

● नहीं। हम तो सबका भला चाहते हैं। हम किसी का नष्ट करना चाहेंगे नहीं। ये बड़े-बड़े उद्योग जरूर रहेंगे बढ़ेंगे भी बहुत बहुत। ● पर मनमाने नहीं एक कायदे से एक हिसाब से। ये भी सबका भला चाहेंगे। सबका ख्याल रखके चलेंगे।

● खेती करनेवाला भी बेकार ना रह जाय बरबाद ना होने पावे; उसे भी खाली समय में काम मिल जाय इतना ख्याल रखते हुए; ये जरूर चलें।

● यानी आटा पिसाई, धान कुटाई, तेल पेरना, कताई बुनाई, दियासलाई जैसे धंधे 'ग्राम-उद्योग' हो जावें और रेल, मोटर, जहाज, हवाई जहाज बनाने जैसे, सभी बड़े-बड़े काम बड़े उद्योगों के रूप में चलाये जायें।

● खाने के बाद 'कपड़ा' आदमी की दूसरी बड़ी ज़रूरत है। वह भी सबको चाहिये, सबको। और, फ़ायदे की : ईमान की : न्याय की : बात तो यह भी है कि कपड़ा काफ़ी मिलना चाहिये : हरेक को : बिना भेद भाव के।

○ किसान ( कुछ दिनों ) खाली रहता ही है? कपास वह उगाता ही है? बिनौला उसे चाहिये ही है? बीज के लिये भी और गाय को खिलाने के लिये भी। सो कपास की 'ओटाई' गाँव में ही हो जाय : यह सब तरह ठीक लगता है।

● 'बुनकर' गाँव गाँव पड़े ही हैं? अठारह लाख। कपड़ा बुनते हैं : लाखवास। यानी 'बुनाई' का काम भी, गाँव गाँव में हो सकता है : होना चाहिये।

● रह गई 'कताई' : सो गांधी जी ने कहा था : "वह भी गाँव गाँव में कर ली जाय" बूढ़ों, बच्चों, औरतों के लिये एक काम हो जायेगा।

● जहां चाह होती है राह निकल ही आती है। 'जहाँ चाह वहाँ राह' एक कहावत है बड़ी ही पुरानी भली आदमी की हिम्मत बढ़ाने वाली।

● एक नया चर्खा निकल आया है: अम्बर चर्खा जिसमें चार तकुवे एक साथ चलते हैं और बिना पोनी पकड़े सूत कतता जाता है।

● यानी, एक आदमी चार तकुवे चला सकता है। आदमी एक हाथ से चर्खा घुमाता रहता है: दूसरा हाथ खाली रहता है। उससे वह टूटनेवाले धागे को जोड़ता रहता है। न पोनी पकड़नी पड़ती है: न सूत खींचना पड़ता है: न सूत लपेटना पड़ता है। पर सारा काम अपने आप होता रहता है।

● सूत बनता है 'पेशमार'। मिल के सूत से 'डेढ़-गुना' अधिक मजबूत। बुनकर बराबर बुनता जाय: टूटने, जोड़ने का नाम नहीं।

● 'सुख पर मन !' सभी पर काम  'यह केवल गाने गुनगुनाने या नारा लगाने की बात नहीं है। बात करने की है। बिना किये निस्तार नहीं।

● ये सब उद्योग : गाँव गाँव चल सकते हैं : चलने चाहिये। इनसे सबको काम भी मिल जायगा : कोई बेकाम बेरोजगार भूखा या चोर "रह नहीं जायगा —

● धान चक्की
● आटा चक्की
● तेल घानी
● साबुन
● पेंट वारनिश
● कागज बनाना
● दियासलाई बनाना
● कुल्ही, प्यालों का काम
● छोटे मोटे औजार
● मधु-मक्खी पालना
● बटन बनाने
● खिलौने बनाने
● लाख का काम
● हाथी दाँत का काम
● बुनना, रंगना, छापना।

## आम जरूरत का कागज, गाँव-गाँव में ही बन सकता है

• सब लोग पढ़-लिख जायेंगे। गाँव-गाँव में किताबें होंगी : अखबार होंगे कापियाँ-खाते होंगे। उस हालत में बहुत ज्यादा कागज चाहियेगा ? गाँधी जी ने कहा था—"आम जरूरत का कागज गाँव गाँव में भी बना लिया जाय : कुछ खास किस्म के कागज बड़े ही कारखानों में बनें। ये कारखाने शासन या समाज के हों : सामूहिक या सहकारी।

• गाँधी जी की यह बात एक कायदे की बात मालूम होती है। सबका-भला चाहनेवाली बात। हमारा धर्म है कि हम इस भली बात का चलन गाँव-गाँव में चलायें। 'ग्रामशाला' माने संतों, महात्माओं की बताई हुई बातों का पता लगाना : और : उन्हें घर-घर : गाँव-गाँव में चलाना भी।

× × ×

• कागज रद्दी चीजों से बनता है। सड़े गले पुराने बेकार पदार्थ— फूस का सड़ा हुआ छप्पर सड़े-टूटे टोकरे चटाइयाँ, रस्से बाँस चीथड़े रद्दी टाट सन की झाड़ी केला खजूर, ग्वारपाठा रद्दी-कागज आदि आदि—सब कागज में परिणित हो जाते हैं। धान का पुआल घास सन मूँज ताने-बाँसों से भी कागज बनाया जाता है। गाँव गाँव में इस कच्चे माल का तो अभाव है नहीं ?

● हर चीज के पहले छोटे-छोटे टुकड़े कर लेना चाहिये। लम्बाइ एक इंच के करीब कर ली जाय। (२) हर चीज के टुकड़ों को साफ पानी से बार-बार धोना चाहिए। (३) हर चीज के टुकड़ों को पानी में सड़ाया गलाया जाय। कोई चीज जल्दी गल जाती है कोई बहुत दिन लेती है। किसी चीज को पैरों से रौंदा जाता है किसीको ढेकुल से। (४) रद्दी जैसी बहुत मुलायम चीजों को छोड़ कर बाकी चीजें 'कास्टिक' के गाढ़े पतले घोलों में उबाली जाती हैं। पुआल सन, मूंज को ५% घोल में ६ घंटा उबालना काफी हो जाता है बाँस टोकरी, चटाई को ६% घोल में तीन घण्टा उबाला जाता है। रद्दी को उबालने की जरूरत नहीं पड़ती। (४) उबले हुए माल को पहले धोया जाता है और ब्लीचिंग-पाउडर मिलाकर रख दिया जाता है। ब्लिचिंग-पाउडर रंग निकालने का काम करता है। (५) अब अलग-अलग चीजों को अलग-अलग समय तक ढेकी से कूटा जाता है। (६) कई चीजें बार-बार धुलाई जाती हैं। बार-बार धोई जाती हैं। कूटते-कूटते 'लुगदी' बन जाती है। यह हुआ पहला काम।

● गाँवों में पायी जानेवाली लगभग तमाम रद्दी चीजों से कागज बनाया जा सकता है। एक सीमेंट से बना हुआ हौज जिसकी दीवालें नीचे की ओर सकरी होती गयी हों छननी एक लकड़ी का चौखटा एक घास की जाली, (चटाई) कुछ रुमाल और एक तख्ता इतना साधन चाहिये।

● सब तरह के कागज बनाने के लिए, ३ इंच गहराई वाला कुण्ड हो तो अच्छा। उसका ऊपर का नाप ४॥ फीट × ४॥ फीट हो। नीचे का तला ३३ फीट × ३३ फीट। उसका समकोण चतुर्भुजाकार हो जिसमें ८ या १० लकड़ी की छड़ें २ या ३ इंच के अंतर पर हों।

की, बिना कलप की हुई, लुगदी काम में लानी चाहिये। जब कागज तैयार हो जाये तब उसे कलप नहीं करना चाहिये बल्कि गोंद की कूची से उसे पोंटना चाहिये।

● उपसंहार—कागज के उद्योग का, सचमुच बहुतेरे ऐसे नये पेशों को जन्म दे सकता है जो घर में किये जा सकें। लेटर-पैड (पत्र लिखने के कागज) लिफाफे कागज की थैलियाँ नोट-बुक, खाते, पुट्ठे जिल्द बनाना। इनके अतिरिक्त कार्बन-पेपर रेती-कागज कागज के फूल, तथा सजावट के कागज आदि बनाना भी आ जायेगा। यदि इस उद्योग के पैर जम जाय तथा वैज्ञानिक रीति से इसकी उन्नति हो तो इसके आगे बड़ी २ संभावनायें हैं। बड़ी बड़ी।

● फिर, खुद अपने हाथ का बनाया कागज इस्तेमाल करना भी एक बड़े ही आनन्द और गर्व और गौरव की बात हुआ करती है। यह आनंद लेना कमाना भी 'ग्रामशाला' के लिये जरूरी है।

—o—

गई थी। राष्ट्रीय समस्या थी। अनुभवी लोग सामने आये। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालना बड़े पैमाने पर बढ़ाया जाय तो, चीनी की कमी का सवाल हल हो जा सकता है। और वह हुआ। कैसे हुआ : 'भेद क्या है' यह बात बड़ी बारीक है समझना पड़ेगा।"

• फिर 'मधुमक्खी के गुणकर्म स्वभाव प्रायः सन्तों जैसे ही होते हैं। वे अक्सर 'ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती हैं। केवल एक 'रानी मक्खी संतान उत्पन्न करती है। वह भी, जीवन में केवल एक ही बार भोग करती है। केवल संतान उत्पत्ति के वास्ते।

• काम व सब करती हैं। सब तरह का। जी तोड़ के। कोई मुहाल बनाती है कोई हवा झलाती है कोई फूलों से रस लाती है। कोई पानी लाती कोई बच्चे पालती है पर दर्जा सबका समान होता है जात सबकी एक होती है। न कोई नीच ना ऊँच। है ना बढ़िया बात! सीखने समझने की बात!! बड़ा से बड़ा समाज-शास्त्र!!!
• एक जरा सी वह मक्खी रोजाना मीलों तक रोज जाती आती है। परमात्मा भी उन पर मेहरबान है उनकी आँखों में तीन हजार लेंस भगवान ने लगा दिये हैं। हमारी आपकी आँखों में केवल एक ही लेंस होता है। यह बड़ी तेज रफ्तार से दौड़ती हुई भी, दूर-दूर के फूलों का रंग ढंग जानती रहती है।

• मधु-मक्खी पालन के लाभ हैं (१) सेवा का सहवास। (२) एक से एक बढ़ कर बात जानने सीखने समझने का बहाना। (३) दुनियाँ भर के दिलचस्प मधु-मक्खीपालकों से सम्पर्क : पत्र-व्यवहार विचार विनिमय भाईचारा। (४) शक्कर खाने बनाने की कोई झंझट नहीं शक्कर की जगह केवल मधु खाइये। 'मधु मय' हो जाइये। (५) मधु-मक्खी मानो फूलों की रानी : फूलों की शौकीन।

जो बिना फूल के हो नहीं सकती है। इस पालने के माने हैं : फूलों का बगीचा लगाना : गुलशन बनाना : फूलों के 'गुण-कर्म स्वभाव' की बड़ी गहरी जानकारी। (६) 'मधु-मक्खी' पालने से पैदावार फसल बढ़ जाती है : यह समझना जानना जीव शास्त्र आदि आदि इत्यादि।

● यह केवल गेंदा गुलाब के फूलों पर ही नहीं रहती है। सरसों शीशम, जामुन महुआ, टेसू नीम, बबूल, कपास सभी पेड़ों के सभी फूलों को यह प्यार करती है : सबकी सेवा करती है : सबसे लाभ उठाती है। आप तो जानते हैं साल में कभी शीशम फूलती है, कभी जामुन फलती है। कपास बरसात में फूलता है। सरसों सर दियों में फूलती है। महुआ गरमियों में। यानी 'मधु-मक्खी' हर जगह हर मौसम में : पाली जा सकती है।

● 'मधु-मक्खी पालने से पहले बहुत सी चीजें देखनी पड़ती हैं। (१) यह किन-किन पेड़ों : किन-किन फसलों से ज्यादा लाभ उठाती है : इसकी पूरी-पूरी जानकारी होना। (२) हमारे अपने इस इलाके में किस-किस मौसम में कितने-कितने दिनों तक कितने-कितने परि माण में क्या-क्या फूल रस मिलेंगे यह अध्ययन करना कैलेन्डर बनाना।

● भारत में यह 'मक्खी चार प्रकार की होती है। एक बहुत बड़ी : एक उससे छोटी एक और छोटी और एक 'मुनगा। अभी तक नं० ३ और नं० ४ इन दो तरह की मक्खियों को ही पाला गया है। कोशिश की जा रही है कि बाकी दोनों प्रकार की मक्खियाँ भी पालतू हो जायें। इसके लिए उनके स्वभाव का और उनकी आवश्यकताओं का अध्ययन किया जा रहा है।

● 'मुनगा' का शहद आँखों की दवाई के रूप में काम आता है। इसका

बहुत थोड़ा है पर आँखों में आंजन को चाहिये भी कितना ? ....
इस नं २ मक्खी का शहद काफी होता है। इसका स्वभाव भी काम लिया गया है। इसे पालने का अर्थ है ठीक गऊ की तरह या कहिये बकरी की तरह पालना। (१) बकरी घूम फिरकर खाती है। मक्खी भी चर खाती है। (२) घर पर भी कभी-कभी बकरी को कुछ खाने को डालना पड़ता है। 'मधु मक्खी' को भी कभी कभी 'शक्कर का शरबत' बना पड़ता है। तेरह आना सेर की शक्कर खाकर यह मक्खी चार रुपया सेर का शहद बना डालती है। (३) बकरी अपने बच्चों को दूध पिलाती है। जो अधिक होता है वह हम निकाल लेते हैं। यही बात इसके साथ भी होती है। जो शहद इसके पास 'अधिक' होता है वही हम निकालते हैं। हाँ बिना पाली हुई 'मधुमक्खी' का शहद बड़े ही गंदे ढंग से और बेरहमी से निकाला हुआ होता है।

यह है मधुमक्खी का सबसे बड़ा शत्रु

● वैसे तो 'अमरीका' देश में बसे हुए एक जर्मन भाई ने १० मार्च १९४८ से १९ मार्च १९४९ के समय में, केवल एक छत्ते से, एक टन=२८५ = २१११ पौंड शहद प्राप्त करके एक 'वर्ल्ड-रिकॉर्ड' कायम कर दिया है। पिछले दिनों केवल [illegible] में एक एक छत्ते में पाँच सौ पौंड शहद प्राप्त किया गया है पर पच्चीस पौंड शहद हर छत्ते से हासिल होना ही चाहिये।

## बात छोटी है पर बेहद महत्त्व की   चारों विषयों का 'सार'

● 'अच्छी-खली' की बात में विज्ञान लगाना आयेगा ही। फिर पशु अच्छे होने ही चाहिये। उन्हें खली मिलनी चाहिये। खली की खाद खेत में पड़नी चाहिये।   ...इसी तरह 'अच्छे घर' में काफी तेल खाना लगाना, साबुन बनाना पेंट, वारनिश बनाना, सभी अनिवार्य है। और, 'अच्छे गांव' के माने हैं, बेशुमार नीम के पेड़ ताकि हवा भी साफ रहे और बेशुमार निमोली हर साल मिल जावे : जिससे तेल बने, साबुन बने, सुगन्धी-खाद रह नहीं जाये और इतनी अधिक खली नीम की गांव गांव में बने कि खेत में न दीमक रह जावे न खाद की कमी रह जावे। गांव मालामाल बन जावे। आदि आदि इत्यादि। अच्छे गांव के यह भी माने हैं कि वहाँ बेकार बेरोजगार भी कोई रह नहीं जावे। सब पर खेत सभी पर काम : राजा हों या बूढ़े राम।

● कौन नहीं जानता है कि 'कच्ची-घानी' का तेल खाने व लगाने के दोनों काम में बढ़िया, ज्यादा मंहगा होता है मिल के तेल के मुकाबिले। कई मिलों में खाक दरा कैसा मक्के बना कर तेल निकाला जाता है। हम थोड़ा कम खायें पर चीज वह होनी चाहिये जो बढ़िया हो। है न ठीक?

● कहा जाता है कि तेल घानी में पेरा जावे तो, मिल के मुकाबले कम तेल पड़ता है। बात ठीक है। पर जो थोड़ा कम तेल निकलता है

वह बच्ची में रह जाता है। गाय को वह खिलाई गई। गाय का घी दूध बढ़ गया। गाय भी तन्दुरुस्त। बच्चा ज्यादा कीमती देती है। हर तरह लाभ। बहुमार।

● मास-मछली कम खान वाला हमारा देश है। दुनिया भी इधर ही आरही है। हमें घी दूध तेल काफी मिलने ही चाहिये। और घी, दूध, यही बढ़नेवाला है तब सब गांव-गांव में कोल्हू चले। खली खली गाय खाये। तेल मिला बढ़िया साफ। घी दूध भी बढ़ गया। बैल होंगे अच्छा और इन खली खाये पशुओं के गोबर से, भूमि की उपज बहुत बढ़ जानेवाली है।

● फिर साबुन भी तो कम बहुत चाहियेगा? खादी पहनेंगे तो साफ ही। काम करेंगे हर प्रकार का मैला पर धोना सीखेंगे हाथ मुँह बार-बार। साबुन बनता है तेल नीम महुआ करंजी का तेल साबुन में खप काम आता है।

● गाँव में भी काफी मसमारी कलमदान कुर्सी मेज किवाड़ों पर पॉलिश होगा बढ़िया। और पेंट वार्निश पालिश भी बनते हैं, तेल से अलसी के तेल से खासकर। यह भी हमारी 'ग्रामशाला' हमें सिखाने ही वाली है।

● इन सब जरूरतों को एक साथ मिला देने पर करीब एक पाव तेल रोज हर घर में होना चाहिये। १ घरों का गांव हो तो १ पाव रोज। करीब ५ सेर। एक पक्का कोल्हू नये ढंग का दिन भर में करीब आठ नौ सेर तेल निकालता है। यानी तीन बड़े कोल्हू हर गांव में रहने चाहिये। देश भर में करीब ६ लाख गांव हैं। १८ लाख कोल्हू बनाये चलाये जा सकते हैं। १८ लाख परिवारों को रोजगार। फिर साबुन बनाने पेंट वार्निश बनाने की बात भी साथ है।

●सरकार ने सबको रोजगार देने का जिम्मा लिया है। ठीक भी है। वह खास इस धंधे को गाँव-गाँव में फैलाना चाहती है। २००) का बड़ा कोल्हू केवल ५०) में लोगों को दिया जाता है। बाकी छूट हो जाती है। करीब एक मन सरसों या तिल एक कोल्हू से रोज पिर जाता है। १३-१४ सेर तेल हो जाता है बढ़िया। और २४-२५ सेर खली। पाँच रुपये का रोज का यह धंधा हो गया। तीन रुपया बैल खायेगा दो रुपया घर में काम आयेगा। 'और' १८ लाख परिवारों के लिये रोजगार १८ लाख।

●एक आदमी दो यानी एक साथ सरलता व किफायत से चला सकता है। अब उसीको इकाई मानकर इस धंधे का मोटा-मोटा हिसाब नीचे दिया जा रहा है —

| | |
|---|---|
| क—१ मकान ( सारा अपने परिश्रम का ) | २१००—०—० |
| ●घानी के लिये १६ × १६ × १० | |
| ●तिलहन रखने को १६ × ८′ × १० | |
| ●तिल खली रखने को १० × ८′ × १० | |
| ●दूकान के लिये १० × ८′ × १० | |
| ●बैलों के लिये १६ × ८′ × १ | |
| २. घानी दो ( मय तेल मापा के ) | १५०—०—० |
| ३ बैल दोम | ६००—०—० |
| ४ अन्य सामान | १५०—०—० |
| | ३०००—०—० |

## भोजन के बाद कपड़ा ही दूसरा बड़ा व्यापक उद्योग हो सकता है

● खादी बहुत मँहगी है या बहुत सस्ती आज यह तय करना आसान नहीं। प्रश्न उठता है कि खादी बहुत सस्ती नहीं है तो फिर गांधी जीने उसे चलाया क्यों ? ~ वे तो दीनबंधु थे ना ?

● गांधी जी ने खादी के बारे में जो कुछ भी कहा है : वह तो यह है :

● आप तो जानते हैं कि '<u>खादी</u> का विचार '<u>गांधी जी</u>' से ही शुरु हुआ : उन्हीं का यह दिया हुआ है। आप यह भी जानते हैं कि उनका एक मात्र सिद्धान्त था : <u>सबसे गरीब व लाचार की चिंता सबसे पहले होनी चाहिये</u>। सच है कि 'गांधी जी ने 'खादी' को सस्ती से सस्ती बल्कि 'निःखर्ची' मानकर ही चलाया है। उनकी ऊपर की बात का अर्थ यह है कि : जो खादी पहिनना चाहता है वह चरखा जरूर काते और जो कातता है वह अपने लिये ही काते।~ ~~पर जो खादी हमने आज चला रखी है : वह ऊपर बताई हुई बात से कुछ 'उल्टी' है। खादी पहिनने वाले और हैं कातने वाले और हैं। जो पहिनता है : वह कातता नहीं। जो कातता है वह पहिनता नहीं। 'इसीलिये' खादी मंहगी है।

● एक कथा है कि मनुष्य ने जब जन्म लिया तो ब्रह्माजी ने उसके दोनों हाथों में कलश दिये थे। एक में 'धर्म' था दूसरे में 'माया' ब्रह्मा जी ने मनुष्य के दाहिने हाथ में 'धर्म' और बायें हाथ में 'माया' का कलश दिया था और उपदेश दिया था कि 'तू दाहिने हाथ का घड़ा 'धर्म' कभी छोड़ना नहीं और बांये हाथ का घड़ा 'माया' को कभी जोड़ना नहीं।

● आदमी बेचारा दो हाथों में कलश लेकर चल दिया। रात हुई। सो गया। 'शैतान' ने घड़े उलट दिये। आदमी जब सुबह उठा तो उसके दाहिने हाथ में 'माया-कलश' हो गया और 'धर्म-कलश' बायें हाथ में। परिणाम यह हुआ कि आदमी 'माया' को छोड़ता नहीं और 'धर्म' जोड़ता नहीं।

● कुछ वैसा ही हाल 'खादी' के साथ भी हो गया है। जो पहिनता है वह कातता नहीं जो कातता है वह पहिनता नहीं। जब कि बापू ने कहा था

"जो पहिने सो काते।
जो काते सो पहिने।"—बापू

● यह है आज की 'खादी' का सबसे बड़ा रोग। सबसे बड़ा दोष। एकदम उल्टी गंगा बह रही है। सवाल है कि इस हालत को कभी कोई बदलेगा भी या नहीं? और बदलेगा तो कौन?? कब???

● नई-शिक्षा और 'बुनियादी शिक्षा' इस बुनियादी गलती को ठीक कर सके तो मानों राष्ट्र पिता गांधीजी के प्रति बड़ा से बड़ा उपकार हो जायेगा। [illegible]

●हम जो खादी या कताई या वस्त्र-उद्योग का काम करें, वह शुद्ध और नई क्रांतिकारी दृष्टि से ही हो तभी उसमें 'ग्रामशाला ग्रामज्ञान' को हाथ डालने का कोई अर्थ होगा।

(१) खादी '<u>निरखर्ची</u> होनी चाहिए। यानी जिसमें एक भी पैसा गांठ से न देना पड़े। तभी गरीब इसे पहिन पायेगा।

(२) खादी के ३ भाग होते हैं। (क) कपास (ख) कताई (ग) बुनाई। ऊपर के हिसाब से (क) कपास भी मुफ्त होनी चाहिये। (ख) कताई भी मुफ्त और (ग) बुनाई भी मुफ्त।

(३) 'देवकपास नाम की एक ऐसी भी कपास होती है, जिसका पेड़ लग जाता है। १ २० साल लगातार फल जाता है।

(४) यह पेड़ घर के आंगन में घर के आगे पीछे खण्डहर में, टीले पर, कहीं भी लगाया जा सकता है। शुरू बरसात में बीज लगाना चाहिये।

(५) बीज अच्छी जाति का मंगाना चाहिये। बीज हमेशा राख में मिलाकर रखना चाहिए। सूखी जगह पर।

(६) जहाँ भी पेड़ लगाना हो वहाँ गर्मियों में गड्ढा बनाना चाहिए एक फुट चौड़ा एक फुट गहरा। जाड़े दिनों यह गड्ढा तपना चाहिए। फिर इसे भरना चाहिए आधी तालाब की मिट्टी और आधी खाद मिलाके। रात में दो लोटा पानी डाल दो। सबेरे माटी बैठ जायगी। गड्ढा खाली नजर आयेगा। इस खाली गड्ढे को भी भर दें। बस क।

(७) दो गड्ढों के बीच दो गज का फासला रखा जाये। इन्हीं गड्ढों में बीज बोया जायगा।

●एक कथा है कि मनुष्य ने जब जन्म लिया तो ब्रह्माजी ने उसके दोनों हाथों में कलश दिये थे। एक में 'धर्म' था दूसरे में 'माया'। ब्रह्मा जी ने मनुष्य के दाहिने हाथ में 'धर्म' और बायें हाथ में 'माया' का कलश दिया था और उपदेश दिया था कि 'तू दाहिने हाथ का घड़ा 'धर्म' कभी छोड़ना नहीं। और बांये हाथ का घड़ा 'माया' को कभी जोड़ना नहीं।

●आदमी बेचारा दो हाथों में कलश लेकर चल दिया। रात हुई। सो गया। 'शैतान' ने घड़े उलट दिये। आदमी जब सुबह उठा तो उसके दाहिने हाथ में 'माया-कलश' हो गया। 'धर्म-कलश' बायें हाथ में। परिणाम यह हुआ कि आदमी 'माया' को छोड़ता नहीं और धर्म जोड़ता नहीं।

●कुछ वैसा ही हाल 'खादी' के साथ भी हो गया है। जो पहिनता है वह कातता नहीं जो कातता है वह पहिनता नहीं। जब कि बापू ने कहा था

"जो पहिने सो काते।
जो काते सो पहिने।"—बापू

●यह है आज की खादी का सबसे बड़ा रोग। सबसे बड़ा दोष। उल्टी गंगा बह रही है। सवाल है कि इस हालत को कभी कोई बदलेगा भी या नहीं? और बदलेगा तो कौन?? कब???

● नई-शिक्षा और 'बुनियादी शिक्षा' इस बुनियादी गलती को ठीक कर सके तो मानो राष्ट्र पिता गांधीजी के प्रति बड़ा से बड़ा उपकार हो जायेगा। कृतज्ञता!

●हम जो खादी या कताई या वस्त्र-उद्योग का काम करें, वह शुद्ध और नई क्रांतिकारी दृष्टि से ही हो तभी उसमें 'ग्रामशाला ग्रामज्ञान' को हाथ डालने का कोई अर्थ होगा।

(१) खादी <u>निखर्ची</u> होनी चाहिए। यानी जिसमें एक भी पैसा गाँठ से न देना पड़े। तभी गरीब इसे पहिन पायेगा।

(२) खादी के ३ भाग होते हैं। (क) कपास (ख) कताई (ग) बुनाई। ऊपर के हिसाब से (क) कपास भी मुफ्त होनी चाहिये। (ख) कताई भी मुफ्त और (ग) बुनाई भी मुफ्त।

(३) 'देवकपास' नाम की एक ऐसी भी कपास होती है, जिसका पेड़ लग जाता है। १० २० साल लगातार फल आता है।

(४) यह पेड़ घर के आंगन में घर के आगे पीछे, खलबाड़र में, टीले पर कहीं भी लगाया जा सकता है। शुरू बरसात में बीज लगाना चाहिये।

(५) बीज अच्छी जाति का मंगाना चाहिये। बीज हमेशा राख में मिलाकर रखना चाहिए। सूखी जगह पर।

(६) जहाँ भी पेड़ लगाना हो वहाँ गर्मियों में गड्ढा बनाना चाहिए एक फुट चौड़ा एक फुट गहरा। आठ दिनों यह गड्ढा तपना चाहिए। फिर इसे भरना चाहिए आधी तालाब की मिट्टी और आधी खाद मिलाके। रात में दो लोटा पानी डाल दो। सवेर माटी बैठ जायेगी। गड्ढा खाली नजर आयेगा। इस खाली गड्ढे को भी भर दें। कस के।

(७) दो गड्ढों के बीच दो गज का फासला रक्खा जावे। इन्हीं गड्ढों में बीज बोया जायगा।

(८) एक पेड़ से दो सेर कपास मिल जाता है। तीन सेर कपास से एक सेर रुई निकलती है। यानी, एक तिहाई रुई। बाकी दो तिहाई बिनौले। जो गाय खायेगी। तगड़ी हो जाएगी। बढ़िया बच्चा देगी गाढ़ा दूध।

(९) यह कपास बढ़िया होती है। इसका सूत बारीक कपड़ा बढ़िया बनता है। इस रुई को धुनना कम चाहिए : तुनना ज्यादा चाहिए। धुनने से सूत और कपड़ा कमजोर होता है।

(१० ) आज कल चर्खा आधे दामों में मिलता है। करीब २१ रुपए में। शुरू में आठ आना नकद लिया जाये। बाकी २) सूत के रूप में। आगे चलकर ।।) भी सूत से वसूल किये जायेंगे।

(११) जहाँ लोग २१ रुपया भी न दे सकते हों : वहाँ 'बांस-चर्खे' का चलन चलाना चाहिए। यह चर्खा ।।) में ही पड़ सकता है।

(१२) सब से पहले घर-घर 'कपास' बुआना चाहिए। बिना कपास बोये कताई का काम शुरू ही न किया जाये। एक साल की घर का सामगी किस्मा नहीं। उसके बिना खादी 'निराश्रितों' का नहीं पायगी। गांधी जी की इच्छा अधूरी रह जायेगी।

(१३) अब आइये कताई पर। जितने नम्बर का सूत आधा सेर में उतनी ही गुण्डी। गुण्डी मान ६४ तार मान ८४ गज।

( ) ना नम्बर का सूत हो तो ३ गुण्डी से एक 'वर्गगज' कपड़ा बन जाता है। नम्बर का सूत हो तो ४ गुण्डी से। १५ नम्बर हो तो ४ गुण्डी से। नम्बर हो तो करीब ४½ गुण्डी से। नम्बर हो तो करीब ४½ गुण्डी से।

(१५) 'वर्गगज' के माने हैं : 'गज भर लम्बा × गज भर चौड़ा'। खादी की मर्दानी धोती ४ गज लम्बी होती है सवा गज चौड़ी। उसमें ४ × १¼ = ५ वर्गगज कपड़ा हुआ। जनानी धोती ५ गज लम्बी होती है सवा गज चौड़ी। उसमें ५ × १¼ = ६¼ वर्गगज कपड़ा हुआ।

(१६) पजामा कमीज व कुर्ता में जो कपड़ा लगता है, वह करीब १२ गिरह (यानी ¾ गज) चौड़ा होता है। कुर्ते में कपड़ा लगता है ३ गज। यानी ३ × ¾ = २¼ वर्गगज। बच्चे की कमीज सवा गज में बनती है। जाँघिया पौन गज में। दोनों मिला के २ गज। यानी २ × ¾ = १½ वर्ग गज।

(१७) आम तौर पर १६ नम्बर का सूत काफी बारीक माना जाता है। घर में कोई बारीक कातेगा कोई मोटा। बारीक सूत से धोतियां बनानी चाहिये। मोटे से कुर्ते कमीज, पजामा के थान।

(१८) हर स्कूल के हर लड़के की 'यूनीफॉर्म' दुरुस्त बनाई जा सकती है खादी की बापू की बताई हुई खादी की। बालक अगर कातता है तो बापू के आदेशानुसार ही कातेगा

जो काते सो पहने
जो पहने सो काते।

(१९) यानी, हर स्कूल के हर लड़के की अपनी खुद की 'यूनीफॉर्म' होनी चाहिये और, वह 'यूनीफॉर्म' भी दुरुस्त हो। ताकि बिना गरीब अमीर के भेदभाव के : 'हर स्कूल का हर लड़का' उसे जरूर जरूर पहने।

( २ ) कोई जरूरत नहीं है कि बालक यह कताई स्कूल में ही करे। स्कूल कातना सिखा देगा सूत बालका खेल खेल में। घर पर कातेगा। घंटा दो घंटा चार घंटा जब जितना भी चाहे।

( १ ) अभी हमने हिसाब लगाया था कि बच्चों की एक 'यूनीफॉर्म' माने = डेढ़ वगगज कपड़ा। 'यूनीफार्म' का सूत मोटा रहे, अच्छा। मान लिया नौ नम्बर का सूत होगा। एक वर्ग गज म २ गुण्डी। डेढ़ वगगज में साढ़े चार। बड़े लड़कों के लिए थोड़ा ज्यादा गुंडी चाहियेंगी सो उनके हाथ भी लम्बे हैं। उनका तार भी लम्बा निकलेगा।

( ७२ ) घंटे भर में ४ तार कत जाने चाहिये। हर तार ४ फुट का। कम कुछ कम कातेगे ३२ तार। तो दो घंटे में एक गुंडी। घंटा भर भी रोज कात डाला तो दस पन्द्रह दिन में। अधिक स अधिक एक माह में – एक पूरी 'यूनीफॉर्म' तैयार।

( ३ ) अब आइय बुनाई पर। आजकल सरकार ३ छूट दे रही है। यानी ४ आना बुनाई होती हो तो ३ आना छूट। केवल एक आना देना पड़ेगा। पैसा हम देंगे नहीं। सूत के रूप में बुनाई द दी जायगी।

( ) पर सरकार स छूट लेकर भी खादी चलेगी नहीं। सो, चाहे जितना ... हम सब सबको बढ़िया-बढ़िया 'डिजाइनदार' बनाने वाले हैं। सादा कपड़ा पहने क्यूँ? बढ़िया डिजाइन के कपड़े पहनेंगे घूमेंगे। नित नई डिजाइन ... बनायेंगे चित्रित करेंगे।

(२५) अब यदि खादी इस तरह घर बनती है : निखर्ची होती है और इसका चलन भी चल जाता है तो कोई कारन नहीं कि केवल लड़के लड़की ही इसे बनायें। घर भर कातेगा। जब जिसे फुरसत हुई कात लिया। तकुआ हरेक का अलग अलग रहेगा।

(२६) बारीक सूत से धोती साड़ी बन जायेंगी मोटे से थान। एक थान माने करीब ३० गुंडी १० नम्बर के सूत की। दो गुंडी रोज हर घर में, कत हो जायेंगी। कभी कम कभी ज्यादा। औसत पड़ेगा दो गुंडी रोज का। यानी, हर पन्द्रहवें दिन एक थान।

(२७) कपास घर का। कुछ कपास 'पेड़कपास' होगी कुछ खेतों की मेड़ों पर, हर साल, उगा लिया जायेगा। दोनों मिला कर बहुत। 'बिनौला' गाय खायेगी। खाटी मोटी हथिनी हो जायेगी। बालक 'यूनीफार्म' पहन शाला जायेगा। व घर भर के लिये 'कपड़ा ही कपड़ा' हो जायेगा। महीने में दो थान साल में २४। हर थान १२ गज का। २८८ गज

(२८) यह हुई खादी गांधी जी की। जो कात सो पहन : जो पहन सो काते। सब कातें सब पहनें। खूब कातें खूब पहनें। न कोई नंगा रहे ना चीथड़। न गरीब का सवाल आय : ना अमीर का।""जो ऐसा नहीं करता है उसे हम 'असामाजिक' : 'अनागरिक' अवश्य मानेंगे। कारन वह सबके सुखी होन के मार्ग में बाधा खड़ी करता है।

(२९) फिर थोड़े ही दिनों में तो 'अम्बर चर्खा' भी सर्वव्यापी होन

हो जाता है। चार तकुए एक साथ। सूत बेहद मजबूत। बुनाई सरल कर पायेगा।

( ३ ) 'ग्रामशाला' यानि वह शाला जो बालक और उसके पूरे परिवार के जीवन को 'सुखी और समृद्ध' बनाने का शिक्षण देती जाय। जो समूचे समाज, हर देश, हर समाज के हर प्राणी, हर परिवार को आधार से आधार को जीने का और सुख से जीने का, ढंग से जीने का अधिकार दे पाये। और यही मर्म है 'ग्रामज्ञान' का भी :—

जगमगा जायेगा जग सारा
जब जग जायेंगे गाँव-गाँव।

× × ×

जब जग का सब विज्ञान-ज्ञान :
गाँवों में, नव कुटीरों में—
पाकर प्रवेश गोपाल बने।
गोकुल बन जायें ठाँव-ठाँव।

× × ×

तब जग पायेंगे गाँव-गाँव।
जगमगा जायेगा जग सारा॥

— —

## दूसरा विषय . अच्छा-उद्योग अन्य साहित्य

● अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ : मगनवाड़ी : वर्धा ने 'ग्रामोद्योगों पर साहित्य तो अच्छा बनाया है : पर अधिक पढ़े लिखे लोगों के लिये। 'अखिलभारत खादी ग्रामोद्योग बोर्ड बम्बई' ने भी साहित्य बनाया है : पर उनका साहित्य भी 'शास्त्र' के रूप में ही बन रहा है। बेचारे चालक, कारीगर अपढ़ भीड़' इन शुभ प्रयासों से कोई भी लाभ उठा नहीं पाते हैं। अभी अभी 'इन्डियन कोऑपरेटिव यूनियन : दिल्ली : ने भी 'हैन्डी-क्राफ्ट्स' पर एक पोथी निकाली है : पर वह भी बड़ी है : बड़ों द्वारा : बड़ों के लिए ही बनाई गई है।

● जिस प्रकार 'अच्छी खेती' विषय पर एक बड़ी सी सूचि हम पेश कर पाए हैं : सरल सुगम साहित्य की एक नहीं अनेक प्रकाशकों द्वारा उसी प्रकार' कल इस विषय पर भी एक बड़ी सी सूची हम दे पायेंगे : ऐसी हमारी आशा है। 'अखिल भारत खादी ग्रामोद्योग बोर्ड' का एक प्रचार प्रसार प्रकाशन विभाग भी है और वह विभाग एक बेहद उत्साही बुजुर्ग की देख रेख में चल रहा है। लाखों रुपया खर्च करके वे प्रदर्शनियाँ आयोजित करते हैं। वे 'लक्ष्मी पुत्र हैं।'— यदि उनका थोड़ा भी ध्यान इस ओर आ जाय तो निश्चित है कि साल भर के भीतर ही : इस विषय का साहित्य 'सस्ता सरल सुन्दर अनन्त अपार : प्रकार प्रकार का वे बना पायेंगे।

---

## जीवन और ग्राम-जीवन का तीसरा बड़ा खूंटा : घर :

● आदमी घूमता फिरता था। जहाँ मिला शिकार, मूल खाया : जहाँ मिले फल तोड़ खाये। जहाँ चारा देख गया : सो गया : उठा पेट की परिक्रमा में घूमता रहा। इस असभ्य अवस्था में से आदमी ने सभ्य-जीवन अपनाया : सुख पाया, शांति पाई : आराम, आनंद और चैन पाया।

● [होम स्वीट होम] यह प्यारा प्यारा घर : जहाँ आकर आदमी सारे दुख भूल जाता है : आदमी के लिये यहाँ आना अनिवार्य है। खाना कम हो या ज्यादा : दुनियाँ में धक्के मिलते हों या मौज : परिस्थितियाँ अनुकूल पड़ती हों या प्रतिकूल : सुख और शांति का सहारा 'घर' 'अच्छा घर' आदमी पर होना ही चाहिये।

● केवल घर होने से, घर का मसला पूरा नहीं होता है। घर 'अच्छा' होना चाहिये सब तरह से अच्छा। घर सच्चा भी होना चाहिये : 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'! जो 'शिव' नहीं वह न सुन्दर हो सकता है : न अच्छा हो सकता है। और, जो 'सत्य' नहीं : उसकी अच्छाई बहुत दिनों टिकनेवाली नहीं। वह तो केवल टीमटाम है : चकाचौंध है।

● यह ठीक है कि घर की ज्यादा जिम्मेदारी नारी पर ही रहेगी : गृहलक्ष्मी का पद इसीके लिये सुरक्षित है। फिर भी राष्ट्रपिता गांधी जी की 'सचाई' यह रही है कि घर को अच्छा घर बनाने में नर और नारी का समान हाथ होना चाहिए। गौर से देखने पर इस बात में बहुत बड़ी सचाई छिपी पड़ी मालूम होती है। खेती पशुपालन ग्रामोद्योग का काम केवल पुरुष कर नहीं पाता है। जगह-जगह नारी का हाथ लगता है। फिर घर को 'अच्छा घर' बनाने और बनाने में केवल नारी ही जिम्मेदार कैसे ठहराई जा सकती है?

● 'अच्छा घर' होता क्या है : यह सीखना समझना सिखाना है : दोनों

को। लड़के को भी लड़की को भी। स्त्री को भी पुरुष को भी। 'अच्छे-घर' का भी समस्त ज्ञान है: विज्ञान है गणित है: भाषा है: समाज-शास्त्र है। 'अच्छा-घर' अच्छे से अच्छा 'माध्यम' हो सकता है नई तालीम का। जनता का 'जीवनस्तर' ऊँचा उठाने के कार्यक्रम में जहाँ खेती का अच्छा होना: पशु उन्नति होना गाँव गाँव ग्रामोद्योग होना जरूरी है ~ वहाँ हर घर का 'अच्छा-घर' होना भी अनिवार्य है। और, उसके लिए जो कुछ भी किया जाय: थोड़ा।

● धरती को 'अच्छी-खेती' बनाने पर काफी साहित्य बन चुका है: सरल से सरल भी: गहन से गहन भी। उद्योगों पर भी साहित्य बनने लगा है। पर, घर को 'अच्छा-घर' और 'सब तरह से अच्छा-घर' बनाने पर साहित्य का खूब अभाव है। लोगों ने घर माने समझ रक्खा है: ईंट या सीमेंट से बनाए गए पक्के घर या तरह तरह के 'फर्नीचर' सजाने की कला। कच्चे घर भी अच्छे से अच्छे बनाये जा सकते हैं: बनाये जाने चाहिये हैं: इस पर मानो कोई सोच ही नहीं रहा है। फिर रोगी की शुश्रूषा, बच्चों का पालन-पोषण, सन्तुलित आहार, भाप पर पके भोजन का महत्व, परंतु तुलसी का गमला, नित्य नियम 'अल्पना' बनाये जाने की आवश्यकता, नित्य नियम और स्वर ताल में सूर मीरा कीर्तनों के पद गाए जाने का रिवाज। देहाती पाखाने पेशाब घर, मक्खी, दीमक, मच्छड़ से बचाव सभी कुछ तो घर में आ जाते हैं!

● बात यही है। अनेक जीवन बनाने पड़ेंगे: उसे घर घर में। आज तो केवल 'दिग्दर्शन' शुरुआत ही की जा सकती है: यही लेखक का विनम्र प्रयास है। कुछ 'आइड्स': कुछ 'आइड्स' के नमूने: सेवा में प्रस्तुत हैं: आप विद्वज्जनों के विचारार्थ। असली 'ग्रामदान' यह हो नहीं सकता है। यह तो आप सब बनायेंगे। यह केवल 'रूपरेखा' काम आय: आ जाय: यही हमारी अपेक्षा है।

- अच्छा घर माने भी : सच्चा घर।
- यानी घर अच्छा भी हो : सच्चा भी हो।

- खुला हवादार साफ घर : माने अच्छा।
- और सनेही भक्त नेक घर : माने सच्चा॥

सत्यं शिवं सुन्दरम्

•'अच्छा'-घर वह जो:सब तरह से 'अच्छा' हो:
खुला हो:पूरब मुखी हो:खिड़की हों:साफ हो:
न पानी भरता हो:न सील रहती हो:ऊँचा हो:
सस्ता हो:सादा भी हो:पर बना हो कायदे में॥

● 'सच्चा-घर' भी सब तरह से 'सच्चा' हो :

गाँव की गाडी आने जाने में बाधा ना डालता हो:

घर का गंदा पानी गाँव भर में ना फिरता हो— :

और ● भगवान का भक्त हो:नेक हो:सहयोगी हो॥

- छोटा हो पर साफ सजा हो -
- धूप दीप हो : चौक पुरा हो -
- रामनाम गाया जाता हो -
- सबके सदा काम आता हो ॥

सत्यं शिवं सुन्दरम्

यह देखिए ! यह घर पानी से घिरा पड़ा है। ऐसा घर बनाने से लाभ क्या ? बरबादी है !! समझदार वह जिसके हर काम में समझ हो।

● घर थोड़ा ऊँचाई पर ही बनाया जाना चाहिये—सील, बरसात, बाढ़, सभी बातों पर विचार करके।

● ऐसी जगह, जहाँ तक पानी चढ़ता हो, वहाँ तक—या तो पक्की ईंट रहे : या केवल लकड़ी, बाँस हो।

● इसी तरह, जहाँ बौछार आती है, घर का वह भाग भी केवल, सादी कच्ची मिट्टी का नहीं रखना है—तरकीबें हजार हैं : हजार सोची जा सकती हैं : केवल रिवाज और स्वभाव होना चाहिये : सोचने का।

यह देखिये ! आदमी कितनी मेहनत कर रहा है ? अब अगर खेत से वापिस आकर : घर में : यह कलह पाये घर सड़ा पाये : तो इसका क्या हाल होगा ?

● यह बहुत दिनों जी नहीं पायेगा। जीने को भी नहीं चाहेगा। घर के माने हैं : सुख और शांति का आगार : जहाँ आकर आदमी के सारे क्लेश कट जावें : घट जावें।

● घर माने माँ की गोद : जहाँ पहुँचकर बालक अभय हो जाता है। जहाँ बालक का मन और उसकी आत्मा को चैन मिल जाता है। -- जो हर मुसीबत में याद आये।

● ऐसा घर 'नर और नारी' दोनों मिलके बनाते हैं।
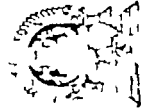
सतयुग की बात है कि किसी एक भले आदमी के घर में सब कुछ था। धन दौलत, सुख-स्वास्थ्य, मेल-जोल, आचार विचार, व्यवहार सभी कुछ।

• एक दिन की बात कि 'लक्ष्मी' देवी रूठ गयीं : बोलीं : हे आदमी ! तुम जब देखो तब सच बोलते हो। दगा, फरेब, चालबाजी को तुम कभी भी काम में लाते नहीं। मैं तुम्हारे यहाँ रह नहीं सकूँगी। मैं जाती हूँ।

• आदमी अडिग रहा। लक्ष्मी चली गयी। धन गया तो नौकर-चाकर, हकीम-डाक्टर सब चले गये। सब घर उजड़ गया। पर, आदमी सत्य से डिगा नहीं।

• एक दिन की बात : 'सत्य' भी आकर बोला : हे आदमी हम भी जाना चाहते हैं : घर में सूना-सूना लगता है : अकेले रहने की हमारी आदत नहीं। आदमी को गुस्सा आ गया। बोला : तुम कैसे जा सकते हो ? तुम्हारे खातिर तो मैंने सब छोड़ा है   सत्य को हँसी आ गयी और उसके बगल में छिपे खड़े 'सब' हँस पड़े। वापिस आ गये।

गीत

जहाँ सफाई साफ नहीं है : उस घर में कोई जावे क्या ?
जहाँ गउ नहीं दूध नहीं : उस घर में कोई खावे क्या ?
जहाँ मक्खना घनी नहीं : ना तुलसी है न फूल है :
वह घर है भूतों का डेरा : घर कहना ही भूल है ॥

जिस घर में : रोगी की सेवा करने का है ज्ञान नहीं ।
जिस घर में : कब क्या खाना : इसका कोई विधान नहीं :
जिस घर में : तुलसी मीरा के पद न प्रेम से गाते हों ।
जिस घर में भगवान राम नहिं दौड़े दौड़े आते हों ॥
उस घर में हम कभी ना जायें : उस घर में हम कभी ना जायें ।
वह घर है : माटी का ढूहा : केवल पापी : केवल धूरा ॥

## बिना अच्छे घर के : अच्छी खेती और अच्छा उद्योग बेकार हैं

●आदमी खूब पढ़े, खूब मेहनत करे, उद्योग करे कमाये पर घर में उसके कलह रहती हो या घर का रागरंग बिगड़ा हुआ हो...तो सारी की सारी मेहनत व चातुर्य बेकार हो जाने वाला है। न सुख या चैन। जीवन दूभर हो जायेगा। जीने के बजाय मरने को जी चाहेगा।

●दूसरी ओर कमाई थोड़ी है। बच्चे भी काफी हैं। न तन भर कपड़ा मिलता है न अन्न। पर 'गृहणी' लक्ष्मी है। सदा संतोषी प्रसन्न स्नेह सेवा की साकार मूर्ति। घर आते ही सारा दुख दूर हो जाता है। मानो माँ की गोद में बालक छिप गया हो या प्रभु के दरबार में जाकर शरण ले ली हो! रोज दुख आता है : रोज दुख धुल जाता है। जैसे जनम जनम के पाप काटने वाली 'गंगा मैया' का स्नान कर लिया हो।

●ऐसी 'गृह लक्ष्मी' भाग्य से ही मिलती है : ऐसा कहा जाता है। पर यह तो इस कलयुग की बात है। सतयुग और द्वापर युग में 'गृह लक्ष्मियों' का अभाव न था : न कभी होनेवाला है। आज भी चीन जापान देशों में घर—सुन्दर सुखद ही मिलता है। जरूरत है उस ओर ध्यान देने की। *'जिस देश में स्त्री की कद्र नहीं होती है वह देश नर्क ही हो जाता है।'* ऐसा महापुरुषों ने कहा है।

● 'अच्छा घर' यानी वह घर जो सब तरफ से अच्छा भी हो, सब तरह से सच्चा भी हो।

● वह सूखा हो, हवादार हो, साफ सुथरा उजाला हो। चारों तरफ हरियाली हो। खूब रोशनी आती हो, खूब धूप आती हो। थोड़ा ऊंचाई पर भी हो, सील ना हो। मुंह पूरब की ओर हो या उत्तर की ओर। पश्चिम दक्खिन नहीं हो। 'बरामदा' काफी हो, कारण हमारा देश गरम है, हमारा अधिकतर जीवन 'बरांडे' में बीतता है। घर बनाने का एक यह भी मतलब है कि सर्दी, गर्मी, बरसात से बचत हो। सो भारती ग्रामों के लिये यह अच्छा होगा कि बरामदे के खंभे पक्के बनाये जायं और भीतरी सभी दीवारों को माटी से बनाया जाय। गरमी में ठंडी, ठंडक में गरम। खिड़की रोशनदान काफी रखने चाहिये। उनके खोलने-बंद करने की व्यवस्था होना भी जरूरी है। पानी के निकास की, नहाने धोने पेशाब पाखाने की समुचित व्यवस्था भी करनी ही चाहिये?

यानी व्यावहारिक सिविल इंजिनियरिंग' का छोटा मोटा कोर्स।

● घर चाहे बना बढ़िया हो और लिपाई पुताई झाड़ बुहार उसकी हो नहीं या कभी कभी छठे ६ महीने हो तो वह अच्छा-घर अच्छा रहने का काबिल नहीं है। लीपन करने का रिवाज बड़ा सुन्दर रिवाज था और है। वह हर हफ्ते तो होना ही चाहिये। रोज थोड़ा धूप का सामान या धुआं (या ढाक का गोंद हुआ करता है) किसी न किसी सामान पर घर में जलाना सुलगाना भी उचित और आवश्यक है। 'गमेक्सीन' न मिले एक कीटनाशक सस्ती देशी दवा का उपयोग भी कितना होता है यदि ऊपर बताये अधिक अच्छे प्रकार हम ना बरत पाये।

● घर हमारा अच्छा भी है, साफ भी है, पर पाखाना हमारे यहाँ रखा नहीं जाता है। मक्खियाँ जो कुकरम करती हैं, हमें आपको मालूम ही है ! यह ना हुआ तो कुछ ना हुआ। यही बात साफ पानी की भी है।

● 'भोज' खाना बनाने में बहुत लापरवाही बरती जा रही है। 'डालडा भगवान का जो वरदान है' सब पर जाहिर है। फिर भी मेहमान आया नहीं कि उसीकी धमाधम पूड़ियाँ उतरने लग जाती हैं। " भोज तो त्योहार है। बिना पूड़ी पकवान रहा नहीं जायेगा। घी असली मिलता नहीं। देश में यमान से बदनामी होगी। अब 'डालडा' महाराज की ?? हो गया ना सत्यानाश ??? फिर यह जरूरत से ज्यादा छौंक बघार मिर्चा अचार भी, चटका मुख से नहीं रहने देते हैं। पेट खराब। सब खराब। दवा दारूमें सारा पैसा फुक जाता है सारा।

● और 'प्रेम-स्नेह' पूरा पूरा ना हुआ तो सब खाना खराब। प्रेम स्नेह बढ़ता है 'भगवत्-कृपा' से। यानी जिस घर में रोज प्रार्थना प्रवचन नहीं होता जहाँ गीता रामायण कबीर मीरा सूर के पद गाये नहीं जाते हैं जिस घर में धर्म पुराण कुरान की चर्चा नहीं होती है वह घर सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं रह जाता है। कुछ नहीं।

● आदमी तो सामाजिक प्राणी है। सबसे पहला प्रमुख समाज है 'परिवार'। परिवार में छोटे बड़े सभी के, अपने अपने कर्तव्य होते हैं। अपने अपने अधिकार। आज की तरह यदि हर सदस्य अपने अधिकारों के लिए ही लड़ने लग जाय कर्तव्य टालने लग जाय तो समाज कभी

सुखी रह नहीं सकता है। 'घर' सामाजिक-जीवन का सबसे पहला पाठ सिखाता है। सामाजिक-जीवन अच्छा बनाना है तो 'घर' अच्छा बनाना ही होगा।

●मनोरंजन भी मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। बिना हँसे गाये गुनगुनाये आदमी जी नहीं सकता है। जीता भी है तो मुरदे जैसा। अत: घर घर में रिवाज हो —

## 'पद घुंघरु बाँध मीरा नाची'

ऐसे सरस पद अच्छे-अच्छे स्वर ताल राग में गाने का। रिवाज हो, छोटे-छोटे बालकों को शिव पार्वती गोपाल बनाके नाचना सिखाने का। गाँव-गाँव नाटक खेले जाने का। निश्चय रूप से, मनुष्य को मनुष्यता की चरमसीमा तक जरूर पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए पैसा नहीं चाहिये बुद्धि चाहिए। सद्बुद्धि।

●दवा दारु की बात भी अच्छे-घर के लिए अच्छी चीज है। यह भी क्या बात हुई कि छींक आयी तो डाक्टर साहब। या पड़े-पड़े सड़ गए हैं और दवादारु का नाम नहीं। 'घरेलू-नुसखे' एक नायाब चीज है हजार हैं भरे पड़े हैं।

(१) उस दिन उन भाई के 'आधासीसी' का दर्द शुरु हो गया था। बेचारे छटपटा रहे थे। पिछले पन्द्रह दिनों से दर्द चल रहा था। दवाइयाँ कई लीं। आराम हुआ नहीं था। उन्हें हींग का शरबत पिलाया गया। वे हमेशा के लिए चंगे हो गये।

( ) एक दूसरे भाई जो स्वयं होमियोपैथी के डाक्टर हैं उस दिन अपनी आपबीती सुना रहे थे कि उनके पेट में अक्सर शूल उठा करता था। कई साल [illegible] चला। कई साल इलाज हुआ। दर्द गया नहीं। एक दिन एक पड़ोसी

को पता लगा : थोड़ा राई पीस कर पेट पर लेप दो। किया गया। दर्द तब से फिर कभी हुआ नहीं है।

ऐसा है चमत्कार इन 'घरेलू नुसखों' का। बुजुर्गों को आज भी बहुत नुसखे याद हैं। 'अच्छे-घर' में इन 'घरेलू-नुसखों' का अच्छा खास ज्ञान रखना भी जरूरी है।

● 'बीमार की सेवा करना' एक बहुत बड़ी कला है। बच्चे का पालन-पोषण करना : बड़ा से बड़ा विज्ञान भी है : ज्ञान भी है। जो अच्छे घर में इनका होना भी जरूरी है।

● बालक की अच्छी बुरी भावनायें : अच्छे बुरे संस्कार : घर में ही बनते हैं। बन गया : सब गया। और कब कैसी भावना बनती बिगड़ती है : भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में, कौन-कौन से अच्छे बुरे संस्कार बन जाया करते हैं' यह ज्ञान समझे बिना 'अच्छा-घर' बनाया नहीं जा सकता है।

● 'अच्छा-घर' बड़ा से बड़ा ज्ञान है : बड़ा से बड़ा विज्ञान है : बड़ी से बड़ी कला है। 'नर और नारी' दोनों को यह सीखना समझना बरतना चाहिये : दोनों को।

---

## घर अच्छा करना है तो चौकाचूल्हा खानपान में फेर करना होगा :

● पकाने की कला लगभग उतनी ही पुरानी है जितनी आग जलाने की विद्या। वर्तमान सभ्यता का इतिहास शायद तभी आरम्भ हुआ जब मनुष्य ने आग जलाना सीखा। परन्तु वहीं से शायद उसके पतन का भी आरम्भ हुआ। 'अदन' के उद्यान में जिस निषिद्ध फल को खाकर आदम का पतन हुआ बताया जाता है; वह साधन पर अग्नि-पक्व-खाद्य ही जान पड़ता है। नतीजा यह हुआ है कि बढ़ती सभ्यता के साथ रोग शोक की भी अभिवृद्धि होती जाती है। अब इनसे बचना हो तो पुनः प्रकृति की शरण में आना होगा। यानी इस प्राकृतिक भोजन का स्वाद सीखना और बढ़ाना पड़ेगा।

● मजे की बात तो यह है कि मनुष्य के लिए प्रकृति स्वयं ही भोजन तैयार कर रही है— स्वादिष्ट फलों शाकों कन्द मूलों सूखे मेवों और पौष्टिक [illegible] के रूप में। परन्तु अग्निपक्व रसोई के हम इतने अभ्यासी हो गये हैं कि समझ में नहीं आता है कि उसके बिना पेट कैसे भरेगा।

● [illegible] तैयार करने तथा खिलाने और खाने की उसी प्रणाली का [illegible] नाम [illegible] जिसमें सुरुचि और स्वास्थ्य का [illegible] साथ है उसमें समय शक्ति और सामग्री के [illegible]।

● [illegible] के लिए सुखी स्वावलम्बी परिवार निर्माण [illegible] रसोई [illegible] में अधिक लगाना [illegible] पर पचाना है, तो [illegible] रसोई में [illegible] ध्यान रखना होगा—

१ स्वास्थ्य-प्रद हो।

२ 'उत्तेजक' और 'तीक्ष्ण' न होते हुए भी 'सुरुचिपूर्ण' हो।

३ समय, शक्ति और सामग्रियों का कम से कम 'अपव्यय' हो।

४ जिससे 'अति-भोजन' की प्रवृत्ति नहीं बढ़े।

५. जिन खाद्यों को बिना आग पर पकाये 'कच्चा' अवस्था में सुरुचिपूर्वक खाया और पचाया जा सकता है, उन्हें नहीं पकाना।

६ किसी खाद्य का पकाना ही हो तो उसके प्राकृतिक गुण स्वाद, रंग, गंध में कम से कम परिवर्तन हो इसका ध्यान रखा जाय।

७ खाद्य पदार्थों के यथासम्भव 'सर्वांग' का उपयोग करना चाहिए। अनेक फलों, तरकारियों एवं अन्नों का छिलके, बीज या चोकर सहित उपयोग करने से उनका स्वाद और स्वास्थ्य-गुण' दोनों बढ़ जाते हैं।

८ एक समय की रसोई में, एक ही पकवान रहना चाहिए। शेष स्थान कच्चे खाद्यों को ही दिया जाय।

९ प्रति दिन पकाने का काम एक ही समय करना पड़े और वह भी घंटे डेढ़ घंटे से अधिक समय लेनेवाला नहीं हो।

## कुछ अच्छे प्राकृतिक पेय

### (१) नींबू-पानी :

पानी १ ग्लास (गरम या ठंडा जैसा इच्छा हो)
आधा कागजी नींबू के रस के साथ।

### (२) फल रस :

टमाटर सन्तरा या अनन्नास जैसे किसी रसदार फल का रस (सादा या इच्छानुसार जल मिलाकर)
[गूदेदार फलों का रस जल में मिलाकर कपड़े में छान कर बना सकते हैं]

### (३) शाक रस

गाजर या खीरा का या पालक की पत्तियों का रस कूट और कपड़ छानकर, नीबू के रस के साथ ले सकते हैं। इनमें 'शरीर-रक्षक' लवणों का आधिक्य होता है।
यह प्रकृति-दत्त जीवन-रसायन का काम देने वाला है।

### (४) सूप तरकारियों का 'अग्नि-पक्व' रस :

हरी तरकारियों और उनके छिलके १ पाव टमाटर आधा पाव। इच्छा हो तो हल्का सा नमक जीरा या धनियाँ १ पाव पानी में पका कर छान लें। जुकाम या खाँसी में, एक दो दिन इस साग पर ही रहा जाय तो तबीयत तुरत अच्छी हो जाती है। [illegible] में यह तो बहुत अच्छा रहता है।

## पुष्टिकारक पेय

आधा छटाक किशमिश या पिन्ड खजूर (खूब साफ धोया हुआ) का पाव जल में ४ घन्टे भिगोकर मल डालें। कपड़े से छानकर पीवें।

खजूर या ताड़ का नीरा १ पाव या गन्ने का रस और दूध या मट्ठा। गाय का १ पाव।

३. दूध १ पाव (गरम या ठंडा) जल १ पाव (गरम या ठंडा) इलायची का सफूफ १ चुटकी मधु दो तोले।

४ ७ दाने मूंगफली पानी में भिगोकर छील डालें : २ दाने इलायची या सौंफ या पुदीना की पत्तियाँ एक साथ रगड़ कर, १ पाव जल में या दो तोले मधु के साथ मिलावें। यह सब सुलभ बादाम शरबत है।

५. दही का घोल १ ग्लास। चाहें सादा लें या हल्का नमक या मधु के साथ।

६ चोकर या भूने हुए गेहूँ का दलिया चार चम्मच : दूध आधा पाव गुड़ १ छटांक जल आधा सेर : बड़ी इलायची दो दाने १ छोटा टुकड़ा दारचीनी सबको उबाल कर, छान लें : गरम गरम पीयें। काफी पुष्टिकारक होता है।

नाश्ता के नुस्खे :

१ कोई एक मीठा मेवा (जैसे किशमिश, पिन्ड खजूर, छुहारा, सूखा महुआ) आधा छटांक : कोई गिरि (जैसे मूंगफली, बादाम, अखरोट नारियल या काजू) आधा छटांक। जितना जल वह सोख सके, उतने जल में भिगोया हुआ।

२. हरा चना या हरा मटर या कोई 'अंकुरित' द्विदल (जैसे मूंग या चना) आधा छटांक। रसद मीठे फल (मौसिम के अनुसार) या मूली गाजर खीरा ककड़ी जैसी चीजें (इच्छानुसार)।

३ ताजे फल एक पाव दूध के साथ।

(४) जिन्हें अधिक शरीर-श्रम करना पड़ता हो और कुछ अधिक पोषक नाश्ता चाहिए उनके लिए।

●जिन्हें अधिक शरीर-श्रम करना पड़ता हो और कुछ अधिक पोषक नाश्ता चाहिये उनके लिये :—

(क) अच्छी तरह भिगोकर चूड़ा आधा पाव। दही आधा पाव। भाजी सलाद या मीठे फल १ पाव।

## सफरी भोजन

१—मूंगफली के बीज (बिना भूनी हो तो बेहतर) १ छटांक भिगाये हुए। ताजे फल जो मिल जायें।

२—चने का सत्तू (छिलके के साथ) या छिलके सहित, मूँग का बेसन भूने पर सानाया हुआ। इन्हें मीठे फल या गुड़ और दूध या पानी के साथ या अथवा नमक और पानी के साथ। मूली, प्याज कच्ची साग आदि के साथ।

३—चूड़ा अच्छी तरह भिगोकर १ छटांक। किशमिश या पिण्ड खजूर या गुड़ आधा छटांक। या मीठा बताशा आधा छटांक। मीठे फल या साग कच्चा जो मिल जाय।

●साग आदि को काटकर या छीलकर पकाने की प्रथा खतरनाक है। सब्जियों को छिलके के साथ कच्चा ही लेना चाहिये और जरूर पकाकर खाने के समय ही छीलना या काटना चाहिये।

●सत्तू या भूने दाने या बेसन में रोटी या भात के मुकाबले कोई कमी या खराबी नहीं है। बल्कि उनमें यह विशेषता है कि उन्हें बिना पकाये खा सकते हैं। उनके व्यवहार में भी इतना ध्यान रखना चाहिये कि एक समय के भोजन में एक तिहाई भाग से अधिक स्थान न मिले। बाकी जगह ताजे फलमूलों को दी जाय।

## दिन या रात के भोजन के कुछ नुस्खे

### पूर्णांग रसोई

१—पूर्ण चावल—१½ छटांक। मूंग की अंकुरी—½ छटांक या कोई छिलकेदार दाल। पत्ती साग (बथुआ, पालक, सोआ मेथी या कोई और मीठी पत्ती) १ छटांक। ताजी तरकारियाँ (छोटे छोटे टुकड़े करके) १ पाव।

●सबकी खिचड़ी एक साथ पका लीजिये। ½ तोला मक्खन या २ तोला घी या तिल तेल से जीरे का बघार दीजिये। इस खिचड़ी में चावल के स्थान पर गेहूँ या मकई या जौ की दलिया का भी प्रयोग कर सकते हैं।

२—पूर्ण चावल या मकई या गेहूँ का दलिया १½ छटांक। नारियल की गिरी या मूँगफली ½ छटांक। पिंड खजूर या किशमिश या महुआ ½ छटांक। अन्दाज से जल देकर पकाइये। उतारते समय पके केले, गाजर पके अमरूद या खरबूजा ½ पाव (बारीक काट कर) मिला दीजिये। हो सके तो कुछ दूध भी।

× × × ×

### धुआँ रहित चूल्हा :

●सामान्यतः रसोई बनाते समय धुआँ चूल्हे से निकल कर सारे घर में भर जाता है। पकाने वाले या पकाने वाली को भी काफी कष्ट होता है। लेकिन इसका बचाव आसानी से किया जा सकता है। यदि चूल्हा ऐसा बनाया जाय कि एक किनारे एक चिमनी लगा हो और दूसरे किनारे से लकड़ी लगाई जाय और बीच में तीन या चार

बर्तन चढ़ाने का ऐसा प्रबन्ध हो बर्तन के पेंदे से चूल्हे का मुंह एक दम बन्द हो जाय तो सारा धुंआं चिमनी के रास्ते ऊपर चढ़ जायगा। आग भी अच्छी सुलगेगी। चिमनी बहुत मोटी नहीं चाहिये। मामूली इस्तेमाल के चूल्हे के लिये चार इंच व्यास और दो फुट लम्बाई की चिमनी काफी है। चिमनी को छप्पर या मकान के दीवाल से होकर निकाल देने की जरूरत है। पढ़िये ! 'मगन चूल्हा'।

*[ बिहार ग्रामोद्योग संघ के सौजन्य से प्राप्त ]*

## खटमलों के रहते हुए  घर भला अच्छा हो कैसे सकता है ?

●खटमल को कौन नहीं पह चानता ? इस छोटे से गहरे लाल या काले रंग के कीड़े को सभी ने देखा है। आपकी चारपाई में अड्डा बनाकर आपकी कितनी ही रातें इसने बरबाद कर दी होंगी।

●अपने पतले बदन का होने के कारण, छोटी से छोटी दरार या छेद में ये घुस जाता है। यहाँ यह दिन भर छिपा बैठा रहता है और रात होने पर खाने की तलाश में निकल पड़ता है। खटमल का खाना है—आदमी का खून।

●खटमल नींद का दुश्मन है। आदमी रात में अच्छी तरह सो नहीं पाता तो उसका स्वास्थ्य निश्चय ही गिर जाता है। और खटमल के काटते रहने से कौन अच्छी नींद सो पाता है ?

●खटमल का परिवार जूं से भी जल्दी और अधिक संख्या में बढ़ता है। मादा खटमल एक बार में साठ अण्डे तक देती है। वह ये अण्डे चारपाई कुर्सी, या घर की दीवारों की दरारों में देती है, जहाँ वे सुरक्षित और गर्म रहें। अण्डे दस दिन में फूट जाते हैं। उनसे बच्चे

निकल आते हैं। अब अगर इन बच्चों को आदमी का खून मिलता गया और ठंडक से मर न गये तो ये जल्दी ही पनप जाते हैं।

● प्राय खटमल एक बरस तक बिना आदमी का खून पिये जिन्दा रह सकता है। लेकिन जब उसे बहुत दिनों तक मनचाहा लहू पीने को नहीं मिलता वह बहाल हो जाता है। अपनी जगह छोड़ देता है। तब वह किसी दूसरी ऐसी जगह की तलाश में निकल पड़ता है, जहाँ उस आदमी का खून मिल सके।

*साफ घरों में भी खटमल पहुँच जाते हैं।*

● खटमल कभी-कभी साफ-सुथरे घरों में भी पहुँच जाते हैं। यह कैसे होता है? आप लोग सभी रेलों बसों और किराये की मोटर गाड़ियों में सफर करते हैं। इन सवारियों में खटमल अक्सर अड्डा जमाये रहते हैं। ये आपके कपड़ों और बिस्तरों में घुस जाते हैं। आपके घर पहुँच जाते हैं।

● इसके सिवा कुछ लोग जब बाहर शहरों में जाते हैं, वे होटलों या धर्मशाला में रुकते हैं। यहाँ चारपाइयां कुर्सियों और बिस्तरों में खटमलों की भरमार रहती है। यहीं से ये आपके कपड़ों और बिस्तरों में रेंग जाते हैं। घर आने पर आपकी चारपाई में जगह कर लेते हैं। कुछ ही दिनों में सैकड़ों की तादाद में बढ़ कर ये खटमल घर की हर चारपाई कुर्सी बिस्तर आदि में फैल जाते हैं।

● [illegible] खटमल से बचाव रखने के लिए सदा होशियार रहना चाहिए। [illegible] या [illegible] अक्सर धूप दिखाना चाहिये। अगर खटमल [illegible] गिरावट [illegible] हो गए हों तो चारपाइयों [illegible] और पाया [illegible] इस तरह निकाल देना

चाहिये। ध्यान रखिये भागते खटमलों को जिन्दा मत छोड़िये। भागते हुए खटमलों पर 'गेमेक्सेन' डी० २५ का पाउडर छिड़क दीजिये। वे फिर जिन्दा न बचेंगे। अगर खटमलों को आप भाग जाने देंगे तो, वे किसी दूसरी जगह घर बना लेंगे और आपकी मेहनत बेकार हो जायगा।

सबसे कारगर तरीका :

● 'गेमेक्सेन' पाउडर का उपयोग करने से खटमल आसानी से नष्ट हो जाते हैं। 'गेमेक्सेन' पाउडर का उपयोग दो तरीके से होता है। एक तो इस गेमेक्सेन की बुकनी को पम्प में भर कर छिड़क सकते हैं। दूसरे पानी में घुलने वाले गेमेक्सेन का घोल बनाकर पिचकारी से इसकी बौछार की जाती है।

● अगर हमें सूखी बुकनी का व्यवहार करना है तो बाजार से गेमेक्सेन डी २५ का पाउडर खरीदना चाहिए। इसे बिस्तर चारपाई और खास तौर से उसकी दरारों में डालना चाहिये। पाउडर का दीवारों किवाड़ों घर की भीतरी छतों और खपरैलों पर भी छिड़कना चाहिए।

● बुकनी के व्यवहार के विषय में एक बात ध्यान में रखने की है। चूंकि चार दरारों में जो खटमल छिप बैठे रहते हैं, उनके बदन पर बुकनी पड़ना आवश्यक है वरना वे नहीं मरेंगे। इसके लिये एक पतला मुंह की पिचकारी का व्यवहार किया जाता है, जिससे निकला पाउडर छेदों में घुस जाता है। लेकिन गावों में इस पिचकारी का मिलना मुश्किल है। इसलिये चारपाई को खाटी से पीटकर खटमलों को बाहर निकाल देना चाहिए और छेदों के अन्दर पाउडर भर देना

चाहिये। पाउडर को बिस्तर पर भी छिड़कना चाहिये। बाद में बिस्तर को झाड़ कर पाउडर को निकाला जा सकता है।

●पानी में घोल कर इस पाउडर का व्यवहार करने का तरीका यह है कि इसमें १० औंस (५ छटांक) घुलने वाली गेमेक्सन को लेकर उसकी खासी लेई बनाना चाहिये। यह लेई झुकनी में धीरे २ फेंटने से बन जाती है। इस लेई को एक गैलन पानी में डालकर (८ बोतल) घोल तैयार करना चाहिये।

●अब इस घोल का फुहार खटमल मारने के काम में आसानी से किया जा सकता है। घोल को एक पिचकारी में भरना चाहिये। टीन की बनी पिचकारी भी काम दे सकती है। लेकिन पिचकारी से निकली हुई घोल की धार ज्यादा मोटी न हो। वरना खर्चा ज्यादा पड़ेगा।

●घोल को इस पिचकारी से चारपाई के पाये, उसकी दरारों और चूरों में छिड़कना चाहिये।

●घर में ज्यादा कबाड़खाना रखना भी खटमलों को न्योता देना है। खटमल लकड़ी की टूटी फूटी चीजों में अपनी जगह बना लेते हैं। इसलिए कबाड़खाने में जो काम की चीज हों उन्हें बनवा लीजिये और बेकार चीजों को जला दीजिए।

●खटमलों को छिपी जगह छिपने और अण्डे देने का मौका मत दीजिये। वरना ये सैकड़ों की संख्या में बढ़ कर घर को हर ओर घेर और शरीर में मद्दा बना लेंगे। खून पीयेंगे। सोने नहीं देंगे।"

अमरूद सब होता है  खूब होता है। आता है चला जाता है।

• 'जेली' बनाकर उसे साल भर लगातार काम में लाया जा सकता है। जेली गाँव-गाँव घर घर बनाई जा सकती है। बच्चे बड़े दोनों को पसंद आती है।

• अमरूद को काट कर, उसको पानी में पका कर उसका रस कपड़े से छान कर उस रस के साथ उचित मात्रा में चीनी मिला पकाने से जेली बनती है।

बनाने की विधि :

• फलों को भली प्रकार छाँटना होता है।

(१) अगर हो सके तो अच्छे किस्म के फलों को चुनना चाहिये।

(२) फल न ज्यादा पके और न कच्चे हों। फल जब पकने को होते हैं, तब अच्छे होते हैं।

(३) फल निरोग तथा कीड़े रहित हों। चिड़ियों द्वारा खाये तथा गिरे हुए फल भी काम में लाये जा सकते हैं।

फलों की धुलाई तथा कटाई

• फलों को चुनने के बाद इन्हें भली भाँति साफ पानी से धो लेना चाहिये ताकि उनके ऊपर लगी हुई मिट्टी और अन्य गन्दगी दूर हो जाय। इसके बाद उनको चाकू से चार चार हिस्से में काट देना चाहिये।
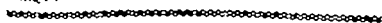
फलों का पकाना :

● कटे हुए फलों में उससे दो गुना पानी (यानी एक सेर फल में दो सेर पानी) डालकर उसको कलई किये हुए अथवा एल्यूमिनियम के बर्तन में आधा घंटे तक पकाना चाहिये। पकाने में इस बात का ध्यान रहे कि फल मुलायम हो जाय।

पके हुए फल का छानना :

● इस पके हुए फल को किसी मजबूत तथा साफ कपड़े से छान कर उसका सारा रस निचोड़ लेना चाहिए :—

छने हुए रस में खटाई डालना :

● अक्सर इस रस में खटाई नहीं होती और अच्छी जेली बनाने के लिए रस में खटाई का होना अति आवश्यक है। इस रस में दो तरह से खटाई बढ़ाई जा सकती है।

(१) साइट्रिक तथा टारटरिक एसिड का प्रयोग कर : रस में खटाई बढ़ा सकते हैं। दोनों 'एसिड' बाजार में मिलती हैं।

(२) अमरूद तथा नींबू का रस मिलाकर भी रस में खटाई बढ़ाई जा सकती है। रस में १।४ नींबू के रस का हिस्सा रखा जा सकता है। [अथवा १ सेर अमरूद के रस में एक पाव नींबू का रस डालना चाहिये।

रस का पकाना और चीनी मिलाना

● रस का मैला भाग छान लेने के बाद इसको तौल कर आग पर चढ़ा देना चाहिये। रस जब गर्म होकर उबलने पर आ जाय तब उसमें उचित मात्रा में चीनी डालनी चाहिये। तीन हिस्से रस में ॥ हिस्सा चीनी छोड़नी चाहिये। १ सेर रस

में २॥ सेर चीनी। रस मे चीनी डालकर उसे अच्छी तरह से मिला देना चाहिये। जब चीनी रस में बिल्कुल घुल जाये तब इस रस को फिर से छान लेना चाहिये। ताकि चीनी की जितनी गन्दगी हो सब साफ हो जाय।

चीनी मिले हुए रस का पकाना

● इस रस को तेज आँच पर रख कर जितना जल्दी हो सके गाढ़ा करना चाहिये। रस इतना गाढ़ा हो कि वह ठंडा होने पर बिल्कुल साफ, कड़े और किसी बर्तन पर रखने पर अपना रूप बनाये रखे। इस अन्तिम अवस्था को जानने के लिये अनुभव के अतिरिक्त, निम्नलिखित बातों की सहायता ली जा सकती है —

(१) अगर थर्मामीटर हो तो उसका प्रयोग करें। जेली २२ से २२१ फा० डिग्री गरमी पर जमती है।

(२) चम्मच में थोड़ी सी जेली ठंडी करके ऊपर से हवा में गिरावें। यदि जेली चासनी के रूप में गिरे तो समझना चाहिये कि जेली गाढ़ी नहीं है। और यदि जेली अथ ठोस टुकड़ों के रूप में गिरे तो जेली तैयार समझनी चाहिये।

● जब उपयुक्त तरीके से जेली बन जाय तो उसे चूल्हे पर से उतार लें। कुछ ठंडा हो जाने पर, उसके ऊपर की मैल का भाग चम्मच से बिल्कुल साफ कर देना चाहिये। जेली को फिर गर्म अवस्था ही में साफ बोतलों या अन्य बर्तनों में भर दो। बोतल या बर्तन जब ठंडे हो जायें तो उन्हें बंद कर किसी ठंडी जगह पर, चींटी से बचा कर रख देना चाहिये।

○ इसी प्रकार जामुन भी बड़े जोर से होती है। ज्यादातर नष्ट हो जाती है। बेर का भी यही हाल है। पपीता भी ज्यादा लगता है तो काबू के बाहर हो जाता है। हमें इन सबको सुरक्षित रखना आना ही चाहिये। 'फल-संरक्षण' एक पूरा विज्ञान ही बन गया है।

## तीसरा विषय अच्छा-घर अन्य साहित्य

● साहित्य का : सरल साहित्य का : बहुत बड़ा अभाव हर क्षेत्र में है। और इस विषय पर तो मानो कुछ सोचा ही नहीं गया है। बात यह है कि जो भी कभी पढ़ाई सिखाई जायेगी, यह शायद लोगों ने सोचा नहीं होगा। लड़कियों की पढ़ाई में 'गृह-विज्ञान' का जरूर रखा है पर उसमें ऊँची ऊँची बातें बहुत होती जा रही हैं अमलकारी कम।

○ कुछ साहित्य कृषि महाविद्यालय। इलाहाबाद ने जरूर बनाया है :—

धुंआ रहित चूल्हा

साफ पानी

देहाती पाखाना

आंख उठ आये तो

खटमल से जान बचाइये

जूं से जान बचाइये

अमरूद की जेली

मलेरिया से बचाव

गर्भवती स्त्री की देखभाल

● अमेरिकन सुषमा केन्द्र लखनऊ ने भी इस दिशा में दो किताबें अच्छी निकाली हैं : पर बड़ी हैं :—

( १ ) ६ साल तक के बच्चों की देखभाल ।

( २ ) ६ से १२ साल तक के बच्चों की देखभाल ।

● इस विषय पर जो भी साहित्य उपलब्ध है उसका सादर संग्रह किया जाने और इस ज्ञमक्षि के क्षेत्र में काम करनेवाले : सोचनेवाले भाई बहनों के 'सेमिनार' : कार्य-शिविर : 'वर्कशॉप' : आयोजित किये जायें — तो इस दिशा में, सही सरल सरस साहित्य बनाया जा सकता है ।

●×●

## 'जीवन' और 'ग्रामजीवन' का चौथा खूंटा गांव

● समयाभाव से इस विषय पर, नमूने के पाठ नहीं दिये जा रहे हैं। पर, पिछले तीन विषयों पर जो 'चार्ट्स' सीधे बनाये गये हैं : या जो 'गीत कहानी : 'गीतों भरी कहानियाँ' पहले अध्याय में आये हैं : वे सब बहुत काफी हैं इस दिशा में सोचने वालों को ( हमारी अपनी जीवन भर की अनुभूतियों की ) एक व्यापक दिशा पाने के वास्ते ।

● 'गाँव गाँव में स्वराज्य'

● 'गाँव का गोकुल'

ऐसी सादी सरल पोथियाँ 'सर्व-सेवा संघ' बना रहा है। जो दो आना इनका दाम है। भाषा भी मोच है भाषा सरल है। जरूरत थोड़ा और आगे बढ़ने की है।

● 'सर्वोदय के सभी काम नई तालीम दृष्टि से ही हों' कहा यह बहुत गया है ; कहा जा रहा है ; पर शायद 'नई तालीम' की दृष्टि होगी क्या ; यह नमूना सामने नहीं आ रहा है। 'गाँव और अपने गाँव' की कल्पना बालक के लिये भी बनाई जा सके ; हर उम्र हर वर्ग के बालक के लिये ; गीतों, कहानियों, गीतों भरी कहानियों के रूप में भी ; चित्रों में भी चित्रों भरी कहानियों के रूप में भी यह होगा शायद 'नई तालीम की दृष्टि का एक प्रकार। फिर, इस साहित्य के अनुसार आचरण कर पाने के वास्ते ; बालक बालिकाओं के लिये कार्यक्रम क्या हो सकता है यह भी हमें सोचना है। यह होगा 'नई तालीम-दृष्टि' से [ गाम को अच्छा गाम बनाने ] का काम करने का दूसरा प्रकार।

● भूदान यज्ञ साप्ताहिक' ने 'भूदान यज्ञ' को बच्चों के लिये भी प्रकाशन करना शुरू कर दिया है यह खुशी की बात है। यह तो 'एटोमिक इनर्जी' का युग है। सिद्ध हो गया है कि 'अणु' की शक्ति अपार है। साहित्य बनाने के मामले में भी हम 'अणु पद्धति' पर काम करेंगे ; यानी साहित्य 'सरल से सरल' बना पायेंगे बालकों के योग्य कर पायेंगे ; तो उसकी असर भी लाखों लाख गुनी हो जा सकती है। लाखों लाख गुनी।

— —

● ग्रामशालाओं के ग्रामज्ञान का एक ऐसा तीसरा प्रकार भी हो सकता है : इन्हें हम 'सर्वांगीण पाठ' नाम देना चाहते हैं। अंग्रेजी में : 'इन्टिग्रेटेड लेसन'। हमारी विनम्र राय में ग्रामशाला पर पोथी-विरोध या पाठ्य-पोथी होना ठीक नहीं। जब जो प्रवृत्ति : क्रिया : काम : पर गाँव शाला में किया जाय उसीसे मिलाजुला ज्ञान वर्गवार, हमारे पास होना चाहिए। हजार तरह के काम होंगे हजार तरह का ज्ञान होना चाहिए। बल्कि १ हजार प्रकार का। कारण एक ही वर्ग को एक ही क्रिया का ज्ञान 'प्रकार प्रकार' से देना पड़ेगा : दिया जाना चाहिए।

● छोटे-छोटे 'फोल्डर्स' यदि बनाये जायें हर क्रिया पर अलग अलग : हर क्रिया का पूरा ज्ञान : भाषा गणित विज्ञान भी : लगे हाथ सिखा सका पाये जावें : वर्गवार : पोस्टवार ...और ऐसे हजारों हजार 'फोल्डर्स' हर शाला में रख जायें तो हमारा ख्याल है कि 'ग्रामज्ञान' का एक बहुत ही उत्तम प्रकार हम दे पायेंगे।

● इसी दृष्टि से इसी विचार से : पिछले ५ सालों में : बार-बार प्रत्यक्ष प्रयोग करके : बालकों को पढ़ा-पढ़ा के कुछ नमूने के 'फोल्डर्स' वर्गवार हमने बनाये हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :—

## खेत-खेत की मेढ़ बँधेगी : छोटा दर्जा पाठ १

खेत-खेत की मेड़ बंधेगी :
खेत बनेगा मालामाल।

खेत-खेत की उपज बढ़ेगी
गाँव बनेंगे मालामाल।
गाँव-गाँव हों मालामाल
देश-देश हों मालामाल :
देश-देश हों मालामाल।
दुनियाँ होगी मालामाल।
खेत खेत की मेड़ बँधेगी।

● खेत की मेड़ बाँध बने से खेत मालामाल हो जाता है। गाँव, देश, दुनियाँ भी मालामाल निहाल हो जाते हैं।--

● भला एसी क्या खास बात है ? यदि मेंड़ बाँधने से ही गाँव, देश, मालामाल होते हों तो, हम सब उसी पर क्यों न जुट जावें ? पर पहल मालूम तो हो बात क्या है ? क्या ? ?

● पानी हर साल बरसता है। हर जगह बरसता है। कहीं थाड़ा कहीं ज्यादा। कभी थोड़ा कभी बहुत।

● पानी बरसता है साफ़ साफ़ मोती जैसा : कंचन जैसा। पर खेत में पड़ते ही मैला हो जाता है मटियाला माटी मिला। और यह मैला मटियाला पानी बड़े जोर से बह निकलता है। पोखरा, तालाबों, नदी-नालों में जा मिलता है।

● पानी खेत से माटी को लूट ले जाता है। और लूटता है

खेत का कस प्राण। बढ़िया से बढ़िया माल। जो फल खेती में काम आता।

● खेत छुट जाता है। किसान छुट जाता है। गाँव छुट जाता है। देश छुट जाता है। और यह होता है बराबर। हर साल। हजारों साल से। गाँव में कुछ रह भी जाये तो कैसे?

● मेड़ बाँध लेने से, यह लूट रुक जाती है, घट जाती है। थोड़ा सा ताला लगाइये माल चोरी नहीं जायेगा।

● मेंड़ बाँधने में पैसा नहीं चाहिये। मशीनें नहीं चाहिये। केवल हाथ का खेल। मेहनत का सवाल।

× × ×

● खेत की होती हैं चार मेड़ें। चारों तरफ होते हैं चार खेत। एक मेड़ आप बाँधिये एक दूसरे खेत वाला एक तीसरे खेत वाला: एक चौथे खेत वाला। खेत चारों तरफ से बन्द हो गया। मेंड़ बाँधनी पड़ी केवल 'एक'।

● ७ दिन का हम 'सप्ताह' बनायें। आज एक के यहाँ कल दूसरे के यहाँ परसों तीसरे के यहाँ अगले दिन चौथे के यहाँ उससे अगले दिन पाँचवें के यहाँ अगले दिन छठवें के यहाँ और सातवें दिन 'छुट्टी'।

• आप तो जानते हैं, हमारे देश में; राम का नाम और उनकी कथा ( रामायण ) सबसे अधिक लोकप्रिय है। कारण राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम' हैं। उन्होंने 'मर्यादाओं' का पालन करने में, कभी कोई कसर उठा नहीं रक्खी। राज्यतिलक होनेवाला था। पिता वचन-बद्ध थे, राम को वनवास भेजने के लिए। राम ने स्वेच्छा से वनवास जाने का निश्चय किया। राम चौदह वर्ष वनवास के बाद अयोध्या आये। राजगद्दी हुई। अकस्मात् प्रजा में एक असन्तोष फैल गया सीता के प्रति। राम जानते थे सीता निर्दोष है। पर कोई भी राजा जनमत के विरुद्ध आचरण नहीं कर सकता यह 'मर्यादा' भी राम पर विदित थी। राम ने महारानी सीता का परित्याग किया मर्यादा का पालन करने हेतु। ऐसी कुछ अनहोनी बात राम ने की 'मर्यादा पालन के हेतु'। इसीलिए राम और रामायण का इतना अधिक महत्त्व है। यह तो एक भूल है कि हम राम और रामायण को किसी धर्म-विशेष की चीज मान लेते हैं और उसके फलस्वरूप कुछ लोग उसमें अधिक रुचि लेते हैं तथा दूसरे लोग उससे दूर रहते हैं। पर यह भूल बहुत दिनों नहीं चलेगी। एक दिन ऐसा जरूर आयेगा कि, मर्यादा का पालन करने वाला हर महापुरुष समूची मानवता का आदर्श होगा समानरूप से।

• यह जो दुनियाँ में तरह तरह की व्यवस्थायें होती हैं, कानून बनते हैं, सभायें होती हैं, शिक्षा साहित्य और संत लोग होते हैं वे सब इन्सान को एक कायदे में बाँध डालने यानी उसकी मेड़बन्दी करने का प्रयास ही तो होता है। क्योंकि लोग जानते हैं कि बिना मेड़ का खेत और बिना मर्यादा का समाज; नष्ट ही हो जाते हैं।

• इस प्रकार हमारे स्कूल में बच्चों की मेड़ बाँधने का तो एक व्यापक

● इस प्रकार, हमें याद रखना चाहिये कि १—हमारी इस धरती में बहुत बड़ा भण्डार मौजूद है हर तरह का। २—हर बार ( पानी हवा हम और ये बैक्टरिया मिलकर ) इस अनन्त भण्डार का कुछ भाग अपनी फसलों के लिये 'उपलब्ध' कर लेते हैं। जिस प्रकार बैंक में लोग दो तरह के खाते रखते हैं। १—"फिक्स-डिपाजिट" यानी जमा पूँजी। जिसे हर घड़ा निकाला नहीं जा सकता। और दूसरा 'करेन्ट एकाउन्ट' यानी चालू हिसाब। जिसे आदमी अपनी रोजमर्रा की जरूरत में खर्च करता रहता है।

● नमूने के तौर पर 'नाइट्रोजन N' की बात ले ली जाय। हमारे हर खेत में बेशुमार 'नाइट्रोजन' संचित रहता है। पर यह सारा 'संचित नाइट्रोजन' हर फसल को हर समय उपलब्ध नहीं रहता है। बहुत थोड़ा भाग ही उपलब्ध होता है। गेहूँ की एक अच्छी फसल लेने के लिए, एक एकड़ भूमि में ६ पौंड 'नाइट्रोजन' N उपलब्ध होना चाहिये। सवाल उपलब्ध होने का है। संचितरूप में तो हजारों हजारों पौंड 'नाइट्रोजन N' हर एकड़ भूमि में विद्यमान रहता है।

● अब जरा यह समझ लिया जाय कि, 'संचित और उपलब्ध' में अन्तर क्या होता है? आप जानते हैं कि पेड़-पौधों के दाँत नहीं होते। वे कुछ खाते नहीं। केवल पी ही सकते हैं। यानी पेड़-पौधों की खुराक में वही चीज काम आती है जो पानी में घुल जाये। "घुलनशील हो" सोल्यूबिल।

● यह बुनियादी अन्तर है हमारी धरती के 'संचित' तत्वों में और 'उपलब्ध' तत्वों में। पानी में न घुलने वाली ( अघुलनशील ) हालत

में जो बेशुमार तत्व खेत में भरे पड़े हैं, उन्हें हम 'संचित' कहते हैं। हर बरस हवा पानी जुताई तथा 'बैक्टेरिया' के प्रभाव से ये तत्व जिस भी मात्रा में 'घुलनशील' बना लिये जाते हैं, वही हमारी फसल के (उस साल) काम आते हैं। उन्हीं को हम 'उपलब्ध' कहते हैं।

● खेतों की मेड़ न होने पर साल भर के परिश्रम से जो भी तत्व 'घुलनशील' बन पाये थे जो उस साल हमारी फसल का आहार होने वाले थे वे सब वर्षा होते ही पानी में घुलकर खेत से दूर पोखरों तालाबों में चले जाते हैं। फसल के काम नहीं आ पाते। फसल निकम्मी होती है और यह रिवाज साल दर साल यों ही चलता रहता है।

● यह जो 'नाइट्रोजन' N और 'पोटाश' K जैसे तत्व घुलनशील और अघुलनशील दो प्रकार की अवस्थाओं में रहते हैं इससे होता क्या है? और कैसे होता है? यह भेद यह विज्ञान : आप फिर कभी फुरसत से जान पायेंगे। आपको बड़ा आनन्द आयेगा।

× × ×

गणित :

● बिना चकबंदी के मेड़बंदी करना थोड़ा कठिन है। पर हो भी रही है। हालांकि हम चाह रहे हैं कि भूमि का बटवारा अभी एक बार फिर होगा सब भूमि गोपाल की के आधार पर। उसके बाद दो तरह से खेती करने की बात चल रही है (१) गांव भर की सहकारी-खेती। (२) अपना अपना चक यार उसकी मेड़बन्दी अलग अलग; और बाकी सारे काम मिल जुलकर सहकारी ढंग पर। भूमि का मालिक हो गाँव समाज। खेती करें सब परिवार।

● कुछ भी हो, एक-एक एकड़ के खेत सीधी-सीधी कतारों में, हम बनायें यह हमारी हमारे गाँव की पहली जरूरत है। और इस हर एकड़ की मेड़ ( बहुत ऊँची चौड़ी तो नहीं पर माटी वर्षा व भूमि के ढाल के हिसाब से ) हमें बाँधना ही है। यों मोटे हिसाब से तो चारों मेड़ें हर खेत की बांधी जायेंगी। पर बात ऐसी नहीं है। नक्शा बनाकर देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि यदि पूरा गांव मिलकर यह काम चलाये तो हर खेत की एक ओर की एक मेड़ बांध लेने से ही सब खेतों की चारों ओर की मेड़ें अपने आप बंध जाती हैं। बुद्धिपरीक्षा में अक्सर एक सवाल पूछा जाया करता है कि (१) "तीन गज कपड़ा है। बजाज एक गज रोज फाड़ता है तो कै दिन में फाड़ जायेगा ?"---
ऐसा ही दूसरा सवाल है कि (२) 'एक पेड़ पर सौ चिड़ियां बैठी थीं। एक शिकारी ने एक गोली चलाई। एक चिड़िया मरी। अब पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ बैठी हैं ?

● कुछ वैसी ही बात गांव की मेड़बन्दी में भी आती है। हर खेत की केवल एक मेड़ बांध ली जाये ( मिलकर ) तो सभी खेतों की चारों मेड़ अपने आप बँध जायगी सारा। मान लिया १ घरों का कोई गांव है। ४ एकड़ कुल भूमि है। एक-एक एकड़ के ४०० खेत होंगे। एक एकड़ के माने हैं ४८४० वर्ग गज। हर दिशा करीब ७० गज। पर लम्बाई चौड़ाई भिन्न भिन्न हो सकती है और ऐसी हालत में, क्षेत्रफल समान रहते हुए भी मेड़ की लम्बाई बदल जायेगी।

१ एक एकड़ का एक खेत १० गज चौड़ा है और ४८४ गज लम्बा है तो उसके चारों ओर की मेड़ की कुल लम्बाई कितनी होगी ?

२. एक दूसरा एक एकड़ का खेत ४ गज चौड़ा है तो उसकी

लम्बाई बताओ और चारों ओर की मेड़ की कुल लम्बाई भी निकालो।

३ एक तीसरा खेत ७० गज लम्बा है। चौड़ाई निकालो। मेड़ की लम्बाई भी निकालो।

४ तीनों खेतों की मेड़ों की लम्बाइयों का अन्तर भी बताओ। सबसे कम कौन सी है?

● इसका पहला नतीजा यह निकलता है कि मेड़बन्दी के ख्याल से खेत की लम्बाई चौड़ाई में जितना भी कम अन्तर रक्खा जाय अच्छा। यानी अगर कोई एक एकड़ का खेत करीब ७० गज लम्बा और ६६ गज चौड़ा रक्खा जायेगा तो, उसके लिए कम से कम मेड़ बांधनी पड़ेगी।

● आइए! इस आधार पर अपने अपने गाँवों की। अपने अपने खेतों की भी। मेड़बन्दी का एक आदर्श प्लान बना डालें। पहले अपने अपने घर से शुरू किया जायगा।

## पाठ २ पाखाने पेशाब घर छोटेवग

एक था राम। एक था श्याम
राम अच्छा था। श्याम अच्छा था।
राम ने गाना गाया। श्याम ने गाना गाया।

रघुपति राघव राजाराम
'पतित – पावन' सीताराम।

× × ×

सबके तारन हार राम
सबके पालन हार राम।
रघुपति राघव राजाराम
'पतित – पावन' सीताराम।

× × ×

धरती मइया सबकी मइया
सबकी पालन हारा राम।
गङ्गा – मइया सबकी मइया
सबकी तारन हारा राम।

× × ×

ईसा कैसे थे ?
'पतित-पावन' : गंदे को साफ बनाने वाले ।
मुहम्मद साहब कैसे थे ?
'पतित-पावन' : गंदे को साफ बनाने वाले ।
महात्मा गाँधी कैसे थे ?
'पतित-पावन' : गंदे को साफ बनाने वाले ।
संत विनोबा कैसे हैं ?
'पतित-पावन' : गंदे को साफ बनाने वाले ।

● फिर भला हम और तुम कैसे बनेंगे ?

'पतित-पावन' : गंदे को साफ बनाने वाले ।
कैसे बनेंगे ?
गंदे को साफ बनाने वाले ।

*शिक्षक यह आखिरी बात प्रत्येक बालक से बारी बारी इस तरह पूछेगा कि "बालक भोला नायक, मुन्नी कुमार सारा-तरीका के साथ आत्मबल संचय करके" – "गंदे को साफ बनाने वाले ।*

× × ×

● अच्छा भला यह तो बताओ कि

आजकल हम तुम कैसे हैं ? 'गंदे' ।
क्या बनेंगे ? 'साफ बनेंगे' ।

हमारा गाँव घर कैसा है ? गंदा ।
क्या करेंगे ? साफ करेंगे ।
हमारे पशु कैसे हैं ? 'गंदे' ।
क्या करेंगे ? साफ बनायेंगे ।

हमारे तुम्हारे विचार कैसे हैं ? 'गंदे' ।
हम तुम गाली देते हैं ना ? —'हाँ' ।
हम तुम लड़ते हैं ना ? —'हाँ' ।
हम तुम टेढ़े मेढ़े बैठते हैं ना ? 'हाँ' ।
यह सब कैसी बात है ? 'गंदी' ।
क्या करेंगे ? साफ बनेंगे ।

●भला सबसे अधिक गंदी चीज क्या होती है ?

पाखाना पेशाब ।
यह कैसे है ? पतित' ।
हम इन्हें क्या करेंगे ? 'पावन ।

●और 'पतित को पावन' करने वाले क्या कहलाते हैं ?

'पतित-पावन ।
राम कैसे थे ? 'पतित पावन' ।
कृष्ण कैसे थे ? 'पतित-पावन' ।

× × × ×

गणित

इस पाखाने, पेशाब की गन्दगी को पवित्र बनाने के वास्ते, दो काम हमें करने हैं।

(१) खाईदार पाखाने बना लेने हैं।
(२) पेशाब-घर बना लेने हैं।

• खाई बनाने का हिसाब है ८ इंच चौड़ी २ फुट गहरी : जरूरत भर लम्बी।

• कल सवेरे हम अपने स्कूल में स्कूल के सभी लड़कों के लिए, और यदि कुछ गाँव वाले भी राजी हों तो, उनके लिए भी खाई खोदेंगे।

• चार घंटे रोज हम सब काम करेंगे।
स्कूल में हम ※ लड़के हैं।

※ छोटे हैं। ※ बड़े हैं।

छोटे लड़के बड़ों से कम ताकत रखते हैं, कम खाते हैं, कम काम करते हैं। मान लिया कि : छोटे लड़के, बड़ों से, आधा काम करेंगे। यानी १ के बराबर २—१।

• २ छोटे लड़के बराबर हैं १ बड़े लड़के के।
४ छोटे लड़के बराबर होते हैं ?--
६ ,, ,, ?--
८ ,, ?--
१ ,, , ?----
७० ?---
१० ,, ,, ?-- --

● यानी हमारे स्कूल में क + ख = कुल ॐ बड़े लड़के हुए।

● हर लड़का काम करता है ४ घंटे।

कुल लड़के काम करेंगे ॐ घंटे।

× × × ×

● अब हम देखना है कि हमारा १ बड़ा लड़का, १ घंटे में, ॐ फुट गड्ढा खोद लेता है ? और ॐ लड़के ४ घंटों में कितना गड्ढा खोद लेंगे ?

● यह सब कहलाते हैं। काम के सवाल।
काम बहुत तरह के होते हैं, बहुत तरह से होते हैं।

● इनके हिसाब भी बहुत बहुत तरह के होते हैं। काम किए बगैर किसी का गुजर चलता नहीं। काम हमें करना भी पड़ेगा। कराना भी पड़ेगा। हर एक का हिसाब करना पड़ेगा। छोटा से छोटा हिसाब भी। बड़ी से बड़ी बाँधी बाँधने और बड़ी बड़ी नहरें खोदने के हिसाब भी। बिना हिसाब काम करना ठीक नहीं।

## विज्ञान

यह सब मेहनत हम क्यों कर रहे हैं ?

( ) इससे हमें बढ़िया खाद मिलेगी। पाखाने पेशाब की खाद बड़ी कीमती हुआ करती है। इसे 'सोना-खाद' कहते हैं। इससे उपज बहुत बढ़ जाती है।

( २ ) इससे मक्खी का प्रकोप घट जाता है। मक्खी पाखाने में भी बैठती है। खाने पर भी बैठ जाती है। खाना गंदा हो जाता है।

बीमारी फैलती है। दोनों से हमारी हमारे गाँव का भगत हो जायगी।

(३) खुले में पाखाना करने से हवा में उसकी बदबू भर जाती है हवा गन्दी हो जाती है। हमारे अन्दर जाती है। हमें तुम्हें बदबू आती है। बीमारियाँ हो जाती हैं।

• मट्टी से अच्छी तरह ढका हुआ मैला हवा से बिलकुल नहीं पाता है। हवा साफ रहती है।

(४) पेसाब में ज्यादा खाद होती है। ४ गुनी ६ गुनी।

(५) खाद बनने के लिए, धूप हवा छू नहीं जानी चाहिए। इनके न होने पर, अच्छी खाद बनती है।

• आदि आदि इत्यादि।

— —

<u>वही पाठ २ : ऊँचे दर्जे : पाखाने, पेशाब-पर जमाना :</u>

रघुपति राघव राजाराम।
'पतित पावन' सीताराम॥

• यह जो एक कड़ी इतनी अधिक प्रचलित है, इसका एकमात्र कारन है भेद है : इसका 'पतित-पावन' शब्द। जो राम राजा भी हैं रघुवंशमणि हैं : कुलश्रेष्ठ हैं सचमगुन मघश्रेष्ठ हैं वही राम —

• इतन बड़े होते हुए भी : 'पतित' पावन हैं निकृष्ट स निकृष्ट का : गंदे से गंदे : बुरे से बुरे अपवित्र स अपवित्र को पावन पवित्र स्वच्छ शुद्ध सबमान्य और सबके आदर का पात्र बना देने वाले

है यही उनकी सबसे बड़ी महत्ता है। इससे बड़ी बड़ाई और किसी बात की हाती नहीं है। किसी भी बात की नहीं।

● गांधी जी क्या नहीं थे ? एक राज्य के दीवान के पुत्र। विलायत तक पढ़े हुए। बॅरिस्टर। पर गरीब से गरीब जनता के उद्धार करने के वास्ते वे फकीर बन गये। दिल्ली में वे ठहरते थे 'भंगी कोलानी' में। भंगी का काम उन्होंने स्वयं किया। कारन, यही पेशा सबसे बड़ा 'पवित्र' पेशा था। उन्होंने इसे 'पावन' किया। उन्होंने मरीजों में चुना था कोढ़ी को जिसे लोग घृणा करते हैं। दूर भगाते हैं। उन्हींकी उन्होंने सेवा की। उसे पावन किया।

● जिस गाँव को गाँव वाले को कल तक, दुनिया ने देहाती गँवार आदिम कहा तिरस्कृत भरी हीनी निगाह से देखा उसीकी सेवा का सम्मान बसन बना दिया है।

● गाँव वाले का उन्होंने 'दरिद्रनारायण' का नाम दिया। खुद जाकर गाँव में बैठे। सारी दुनिया का ध्यान गाँवों की ओर खींच लिया। ईसा बुद्ध मुहम्मद सभी ही महापुरुषों की सर्व प्रमुख विशेषता रहा है उनका पतित पावन' स्वभाव।

× × × ×

● सेवा का बड़प्पन सुनने बोलने की चीज नहीं हुआ करती उस पर तो सामर्थ्य भर आचरण करना पड़ता है। आचरण करना चाहिए। इसी ख्याल इसी हिसाब से स्कूलों की पढ़ाई में पाखाने पेशाब जैसी गन्दगी का पावन और पवित्र बनाने का उसके उद्धार करने का रिवाज चलाया गया है।

• रिवाज अच्छा है। इसका व्यावहारिक वैज्ञानिक, आर्थिक और सामाजिक सभी तरह का महत्व है। यह बड़ी से बड़ी गंदगी है। हर तरह के रोग तुरन्त महामारियों का कारण है। " पर इसीको कायदे में बरता जाय तो, यह बढ़िया से बढ़िया कीमती खाद है। इससे खेती का उत्पादन बेशुमार बढ़ जाता है। बेशुमार।

• इसे कायदे में न बरतना ( जहाँ तहाँ खुले में पाखाना पेशाब करने बैठ जाना ) बड़ी से बड़ी असभ्यता है। मगर कायदे में बरतना, बड़ी से बड़ी सभ्यता नागरिकता है।

× × × ×

● "हमारी किसी भी हरकत से हमारे पड़ोसी का अहित न होने पावे यही भावना : यही खयाल : इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसी भावना की आज सबसे बड़ी जरूरत है। यही सब धर्मों का 'सार' सबसे बड़ा बुनियादी धर्म : सब धर्मों का धर्म है।"

• चीनी और जापानी नाम के हमारे पड़ोसी देश इसकी कीमत का सही प्रकार समझ गये हैं। वे अपने अपने खेतों में बढ़िया बढ़िया पाखाने बनाकर अपने मित्र पड़ोसियों को आमंत्रित करते हैं। इसीका नतीजा है कि हमारे यहां जो धान १०० एकड़ उपजती है उनके यहाँ साठ मन सत्तर मन सौ सवासौ मन की एकड़ तक। ऐसी जापानी धान की खेती की आज देश भर में धूम है।

× × × ×

● यह तो था केवल मैले का हिसाब :
पेशाब का हिसाब कई गुना बड़ा है

● प्रति आदमी की प्रतिदिन की पेशाब में
१ नाइट्रोजन N (१२ ग्राम) ६ गुना
२ पोटाश K ( ½ ग्राम ) ३ गुना
३ P (१½ ग्राम) कुछ अधिक

● दोनों मिलाके, हमारी अकेली इस गाँव सभा में प्रति वर्ष
१ N
२ K
३ P

और ● अपने इस समूचे राष्ट्र में ( दोनों मिलाके )=
१ N
२ K
३ P

● इसे ज्यों का त्यों बाजार में बेच दिया जाय तो —
१ नाइट्रोजन करीब १० ) टन बिक जाता है।
२ पोटाश
३ फॉस्फेरिक एसिड

● यानी १ N प्रति मन प्रति पौंड
२ K प्रति मन प्रति पौंड
३ P प्रति मन प्रति पौंड

- हर हजार आबादी की, कुल आमदनी, इन तीनों से —
- हमारी 'गाँव-सभा' की, कुल आमदनी इन तीनों से —
- समूचे राष्ट्र की कुल आमदनी, इन तीनों से :—

× × ×

## पर किसानों का यह दुख दूर कैसे हो ?

यह तो इस खाद में डालकर कई गुना अधिक लाभ उठाना चाहेगा।

(१) गेहूँ के एक एकड़ खेत में ६० पौंड 'नाइट्रोजन' डाल दिया जावे तो १ ς पैदावार (गेहूँ) बढ़ जाने वाली है। (१ ς=१६०) रुपया।

विज्ञान ● विज्ञान के बारे में सबसे पहले तो हमें समझ लेना है कि N K I क्या है ? ये हैं 'घरेलू नाम' [जैसे मुन्ना काका चाची] नाइट्रोजन पोटाश फॉस्फोरस जैसी वैज्ञानिक चीजों के। वैज्ञानिक लोग इन्हें इसी लिए छोटे नामों से पुकारते हैं। जैसे हमारे तुम्हारे घर गांव वाले हम तुम्हें हमेशा छोटे घरेलू नामों से बुलाते हैं।

● सचमुच ये तीन चीजें होती हैं ?। नहीं। चीजें अनेक होती हैं। आगे चलकर वे सभी जाननी होंगी। पर खाद की दृष्टि से यह तीन 'प्रमुख' हैं। यदि हमारी अपनी अपने देश की तुरत जरूरत हैं। तुरत।

● पौधे के लिए ये तीन चीजें नित्यप्रति चाहिए। जैसे हमारे तुम्हारे लिए रोटी दाल भात। दूध शक्कर के बिना काम चल सकता है।

रेभी कभी मिल जायें थाड़ी मिल जाय चिंता नहीं। पर य तीन चीजें तो रोज ० मिलनी ही चाहिए। वह भी पेट भर के। इसी तरह पौध की रोजमर्रा की खुराक की इन तीन चीजों को (N K.P) अधिक से अधिक (पेट भर) जुटाने के लिये भी, हम जो कुछ भी कर, थोड़ा है। थोड़ा।

× × ×

●यह तो थी खेती की बात। कारखानों की बात भी सुन लीजिये। जमनी व इंगलैंड देश के 'वेल्स' नामके इलाके में मलमूत्र से गैस बनान की व्यवस्था चलाइ गइ ह। 'मीथन' नाम की बढ़ियामार गैस, कारखाने चलाने बिजली बनाने क लिये प्राप्त हा जाती है साथ ही बढ़िया से बढ़िया खाद भी। पानी के नल और बिजली की रोशनी की तरह, शायद कुछ ही दिनों में हमारे यहाँ के हर कस्बे हर शहर में भी मलमूत्र से गैस बनाने का और उस गैस से 'कलकारखाने चलाने या बिजली बनाने का रिवाज' चल जायेगा। हमारी गाँव सभायें व गाँव समाज भा इसे : शीघ्र ही अपना लेंगे।

× × ×

●दानों के अपने-अपने हिसाब हैं। गैस के मौ'जाईदार पाखाने के मा।
१—१० ० आबादी से १० ० घनफुट 'गैस' प्रतिदिन प्राप्त हो जाती है।

—१ गैस पावर' इंजिन को १ घन्टा चलाने में, ## घनफुट गैस खर्च होती है।